● वर्ष-3
● अंक-60
रायपुर, बुधवार
18 अक्टूबर 2023
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

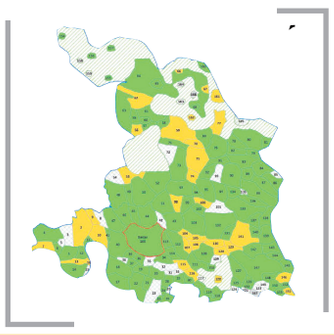

पेज-6›› छग की जगदलपुर विस....

माहौल बनाएंगे मोदी, शाह और योगी

■ कई शहरों में रैली करेंगे, कांग्रेस की जवाबी तैयारी

रायपुर। छत्तीसगढ़ में फिर से सत्ता पर काबिज होने के लिए भाजपा पुरजोर कोशिशों में जुटी हुई है। आने वाले दिनों में प्रदेश में पीएम मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के अलावा केंद्रीय मंत्री और स्टार प्रचारकों का जमावड़ा होगा। ये सभी दिग्गज राज्य में भाजपा की सियासी जमीन को मजबूत करने की कोशिश करेंगे।भाजपा सूत्रों के मुताबिक प्रदेश में दो चरणों के चुनाव के बीच प्रधानमंत्री मोदी की 3 बड़ी सभाओं के आयोजन की तैयारी है। जिसमें मोदी छत्तीसगढ़ को लेकर बड़ी घोषणाएं कर सकते हैं। ये घोषणाएं चुनावी माहौल का रुख भाजपा की तरफ मोड़ने की बड़ी कोशिश होंगी। पीएम रायपुर, रायगढ़ और बस्तर में सभा को संबोधित कर चुके हैं। माना जा रहा है कि सरगुजा और राजनांदगांव इलाके में प्रधानमंत्री की सभा की जाएगी। सियासी रुख को देखते हुए पार्टी जगह तय करेगी। राज्य में भाजपा पीएम की सभा को अपने मास्टर स्ट्रोक की तरह पेश करना चाहती है। क्योंकि राज्य में पिछली सभाओं में आई भीड़ ने भाजपा को बढ़त दी है।

इधर, कांग्रेस ने भी विधानसभा चुनाव की तैयारी कर ली है। पार्टी जल्द ही स्टार प्रचारकों के साथ मैदान में नजर आएगी। राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, सोनिया गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे सहित कर्नाटक के डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार और

हिमाचल के मुख्यमंत्री भी प्रदेश में रैली करते हुए नजर आएंगे। हालांकि कांग्रेस ने तारीख और जगह तय नहीं की है, मगर इनका जल्द ही एलान किया जाएगा।

इन मुद्दों को उठाएगी भाजपा

भ्रष्टाचार एक बड़ा मुद्दा है, जिसे भाजपा लोगों के बीच पहुंचाने की कोशिश में है। भाजपा के मंचों पर स्टार प्रचारक छत्तीसगढ़ के कोयला, रेत और शराब घोटाले की चर्चा करेंगे। शराबबंदी बड़ा मुद्दा होगा। कर्मचारियों का नियमितीकरण, छत्तीसगढ़ में बेरोजगारों का मसला भी स्टार प्रचारकों की जुबान पर होगा। गौठान और किसानों के मामले में भी कांग्रेस को घेरा जाएगा।

ये नेता नजर आएंगे छत्तीसगढ़ में

- चुनाव में भाजपा के शासित राज्यों के सभी मुख्यमंत्री प्रदेश में रैली करते हुए नजर आएंगे।
- आने वाले दिनों में यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, स्मृति ईरानी, राजनाथ सिंह जैसे नेताओं का छत्तीसगढ़ आने का कार्यक्रम है।
- अमित शाह दो दिन के भीतर दूसरी बार छत्तीसगढ़ पहुंचेंगे। 16 अक्तूबर को उन्होंने राजनांदगांव में सभा ली और 19 अक्तूबर को बस्तर आएंगे।
- 18 अक्तूबर को कवर्धा में विजय शर्मा की नामांकन रैली में असम के मुख्यमंत्री हिमंता विस्वा सरमा शामिल हो सकते हैं। लोरमी में भी असम के सीएम का कार्यक्रम होगा।
- 19 अक्तूबर को झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा और 20 अक्तूबर को रविशंकर प्रसाद की सभा होगी।
- योगी आदित्यनाथ 23 और 24 अक्तूबर को सरगुजा संभाग में सभाओं को सम्बोधित करेंगे।
- 25 और 26 अक्तूबर को नितिन गडकरी छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी की ओर से जनता को संबोधित करेंगे।
- 28 अक्तूबर को स्मृति ईरानी पहुंच सकती हैं। 4 और 5 नवंबर को राजनाथ सिंह बस्तर और राजनांदगांव में सभाएं करेंगे।
- भाजपा की राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा की 6 सभाएं छत्तीसगढ़ में करने की तैयारी है। सांसद रवि किशन और मनोज तिवारी की रायपुर, भिलाई, सरगुजा में सभा की तैयारी की जा रही है।

बदले कांग्रेस के वचन पत्र के चेहरे

मनमोहन की हटी, राहुल की घटी

चुनावी राज्य मध्य प्रदेश में कांग्रेस ने अपना घोषणा पत्र जारी कर दिया है। 2018 की तरह इस बार भी इसे वचन पत्र नाम दिया गया है। पांच साल में कांग्रेस के वचन की संख्या 50 से बढ़कर 59 हो गई है। हालांकि, वचनपत्र के पन्ने कम हो गए हैं। 2018 के कांग्रेस के वचन पत्र में कुल 112 पेज थे। वहीं, इस बार 106 पेज हैं।

2018 के वचन पत्र में नजर आ रहे कई चेहरे इस बार भी नजर आ रहे हैं। वहीं, ज्योतिरादित्य सिंधिया के अलावा भी कई चेहरे ऐसे हैं जो 2018 के वचन पत्र में थे, लेकिन इस बार के वचन पत्र में उन्हें जगह नहीं मिली। कुछ चेहरे आगे के कवर से हटकर वचन पत्र के आखिर में पहुंच गए हैं। वहीं, एक चेहरा ऐसा भी है जो आखिर के हिस्से से आगे के हिस्से में आ गया है। आइये जानते हैं कि पांच साल में कांग्रेस के वचन पत्र का चेहरा कितना बदला?...कांग्रेस के 2018 के वचन पत्र और इस बार के वचन पत्र की शुरुआत के चार पेज में कांग्रेस के चेहरे दिखाए गए हैं। इसमें कवर और उसके अंदर का पेज शामिल हैं। कवर के पिछले हिस्से पर भी पिछली बार की तरह इस बार भी बाहर और अंदर दोनों ओर कई चेहरों को जगह मिली है। आइये बारी-बारी से सभी पेज के चेहरों के बारे में जानते हैं। इसके साथ ही चहरों को जगह मिलने और उनके हटने के मायने भी समझने की कोशिश करते हैं।

2018 के वचन पत्र के कवर पर सबसे बड़ी तस्वीर तत्कालीन अध्यक्ष राहुल गांधी की थी। इस बार के कवर पर सबसे बड़ी तस्वीर पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ की है। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे कवर

के ऊपरी हिस्से में दिख रहे हैं। उनकी तस्वीर सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी के साथ दिख रही है। 2018 के वचन पत्र के ऊपरी हिस्से पर कांग्रेस के कई पुराने नेताओं की तस्वीर दिख रही थी। इनमें महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, मौलाना अबुल कलाम आजाद, डॉ. भीमराव अंबेडकर, सरदार पटेल, वीवी गिरि, बाबू जगजीवन राम, लाल बहादुर शास्त्री और राजीव गांधी दिखाई दे रहे थे।

वचन पत्र के बीच में इंदिरा गांधी की तस्वीर थी। जो अन्य पुराने नेताओं के मुकाबले बड़ी थी। इस बार इन सभी नेताओं को कवर पर जगह नहीं मिली है। पिछली बार के कवर में निचले हिस्से में राहुल की बड़ी तस्वीर थी। उनके एक ओर सोनिया गांधी और दूसरी ओर मनमोहन सिंह की तस्वीर थी। इस बार के वचन पत्र के निचले हिस्से में कमलनाथ की बड़ी सी तस्वीर है। उनके अलावा किसी और चेहरे को इसमें जगह नहीं दी गई है। जबकि, 2018 के वचन पत्र के कवर पर किसी स्थानीय नेता को जगह नहीं मिली थी। 2018 के कवर पर वचन पत्र के नीचे जिम्मेदार, संवेदनशील एवं पारदर्शी प्रशासन लिखा था।

प्रधानमंत्री पद के लिए खरगे या राहुल का नामः थरूर

नईदिल्ली। कांग्रेस नेता शशि थरूर ने कहा है कि यदि इंडिया गठबंधन 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद सत्ता में आता है तो कांग्रेस पार्टी मल्लिकार्जुन खरगे या राहुल गांधी को प्रधानमंत्री के रूप में नामित कर सकती है। देखा जाये तो थरूर ने कुछ गलत नहीं कहा है लेकिन जब इंडिया गठबंधन ने अपना कोई नेता या प्रधानमंत्री उम्मीदवार ही तय नहीं किया है तब ऐसे बयान विपक्षी नेताओं के बीच अविश्वास बढ़ा सकते हैं। खासतौर पर जब ममता बनर्जी, अरविंद केजरीवाल, नीतीश कुमार और शरद पवार जैसे कई नेता प्रधानमंत्री पद के आकांक्षी हैं, तब कांग्रेस द्वारा एकतरफा रूप से अपने नेताओं के नाम घोषित करना विपक्षी गठबंधन की

मुश्किलें बढ़ायेगा। भाजपा ने तो हमला बोल भी दिया है और कहा है कि विपक्षी गठबंधन में बिखराव साफ नजर आ रहा है वहीं इंडिया गठबंधन के दलों की इस मुद्दे पर चुप्पी दर्शा रही है कि वह भी नाखुश हैं।

हम आपको यह भी बता दें कि यह तो शशि थरूर के बयान का एक पक्ष था। उनके बयान का दूसरा पक्ष यह है कि उन्होंने यह भी कहा है कि राहुल गांधी या मल्लिकार्जुन खरगे प्रधानमंत्री उम्मीदवार इसलिए बन सकते हैं क्योंकि कई मायनों में कांग्रेस परिवारवादी पार्टी है। हम आपको बता दें कि तिरुवनंतपुरम में एक कार्यक्रम में सवालों के जवाब में थरूर ने यह बातें कही हैं। उन्होंने कहा कि अगर इंडिया गठबंधन जीतता है तो कांग्रेस खरगे का नाम आगे कर सकती है। खरगे प्रधानमंत्री बनते हैं तो वह देश के पहले दलित प्रधानमंत्री होंगे। थरूर ने खुद को प्रधानमंत्री पद की उम्मीदवारी से बाहर बताते हुए यह भी कहा कि खरगे के अलावा राहुल गांधी का नाम आगे किया जा सकता है क्योंकि कांग्रेस को कई मायनों में एक परिवार चला रहा है। उन्होंने साथ ही यह भी कहा कि भारत में योग्यता मायने नहीं रखती क्योंकि हमारे यहां जो लोकतांत्रिक पद्धति है उसमें पार्टियां तय करती हैं कि कौन नेता बनेगा या किसका नाम आगे किया जायेगा। बहरहाल, भाजपा ने शशि थरूर के बयानों के आधार पर कांग्रेस को घेरते हुए कहा है कि उसके नेता अब यह खुद मान रहे हैं कि कांग्रेस परिवारवादी पार्टी है। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद जयहिंद ने कहा है कि विपक्षी गठबंधन की बैठक के बिना ही यह लोग प्रधानमंत्री पद पर दावेदारी जता रहे हैं और नाम भी आगे कर रहे हैं जो दर्शा रहा है कि इस गठबंधन में कितना आपसी विरोधाभास है।

आलिया भट्ट, अल्लुअर्जुन समेत इन्हेंमिला राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, वहीदा रहमान को दादा साहब फाल्के अवार्ड- साल 2021 मेंभारतीय सिनेमा की ओर सेपेश किए गए सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को सम्मान देनेके लिए 69वां राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह का आयोजन नई दिल्ली के विज्ञान भवन मेंकिया गया. इस फिल्म पुरस्कार के विजेताओं के नामों की घोषणा सितंबर मेंही कर दी गई थी. नेशनल फिल्म अवॉर्ड्स 2023 फिल्म जगत सेजुड़े लोगों के लिए सबसे बड़े अवॉर्ड फंक्शन में से एक है.

प्रमुख समाचार

बगावत करने वाले इब्राहिम पर बरसे कुमारस्वामी

नईदिल्ली। कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री और जनता दल (सेक्युलर) के नेता एचडी कुमारस्वामी ने मंगलवार को भाजपा के साथ हाथ मिलाने के पार्टी नेतृत्व के फैसले पर अपनी विद्रोही टिप्पणी के लिए प्रदेश अध्यक्ष सीएम इब्राहिम पर पलटवार किया

और उन्हें चुनौती दी कि अगर उनकी पार्टी असली है तो उन्हें एक बोर्ड लगाना चाहिए कि वह असली वाले हैं। इब्राहिम पर हमला करते हुए कुमारस्वामी ने कहा कि उन्हें किसने रोका है? वह जो चाहते हैं करें। वह ऐसा करने के लिए स्वतंत्र हैं। यह उनपर निर्भर करता है। आपको बता दें कि भाजपा से हाथ मिलाने को लेकर पार्टी नेतृत्व के खिलाफ सीएम इब्राहिम ने बगावत का झंडा बुलंद किया है।सोमवार को बैठक के बाद इब्राहिम ने कहा था कि पार्टी छोड़ने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता, क्योंकि वे असली जद(एस) का नेतृत्व कर रहे हैं। इसी को लेकर आक्रोश भरे लहजे में एचडी कुमारस्वामी ने कहा कि मैं उनके (इब्राहिम के) बयान को गंभीरता से क्यों लूं? कृपया मेरे साथ फिजूल बातों पर चर्चा मत कीजिए। यह ऐसा मामला नहीं है, जिसपर जवाब दिया जाए।

संघ मानहानि मामले में राहुल गांधी पहुंचे बॉम्बे हाई कोर्ट

मुंबई । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की मानहानि से जुड़े एक मामले में अदालत का सामना कर रहे राहुल गांधी ने बॉम्बे हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। साल 2017 में पत्रकार गौरी लंकेश की हत्या को भाजपा-आरएसएस की

विचारधारा से जोड़ने वाली टिप्पणी करने के लिए राहुल के खिलाफ मानहानि का मामला दर्ज कराया गया था। अब राहुल ने अपनी टिप्पणी को लेकर दायर मानहानि की शिकायत को रद्द करने के लिए बॉम्बे उच्च न्यायालय का रुख किया है।इस मामले में राहुल गांधी की याचिका में कहा गया है कि उनके खिलाफ मामले को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के नेता सीताराम येचुरी के खिलाफ दायर मामले के साथ जोड़ कर नहीं देखा जा सकता है। दोनों ने अलग-अलग मौकों पर बयान दिए हैं। साथ ही वे अलग-अलगया यहां तक कि विपरीत विचारधारा वाले दो अलग-अलग दलों से संबंधित हैं। ऐसे में संयुक्त सुनवाई से राहुल गांधी के मामले पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। न्यायमूर्ति एस वी कोटवाल ने याचिका पर सुनवाई की तारीख पांच दिसंबर तय की।

अयोग्यता मामलाः स्पीकर को कोर्ट ने दिया आखिरी मौका

नईदिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को फिर से शिवसेना विधायकों की अयोग्यता याचिकाओं की प्रगति पर नाराजगी व्यक्त की और शीघ्र निर्णय लेने को कहा। सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि

कार्यवाही मिथक नहीं हो सकती और वह उसके आदेशों को पराजित नहीं कर सकते। नाराज सीजेआई ने कहा कि अयोग्यता याचिकाओं पर फैसला अगले विधानसभा चुनाव से पहले लिया जाना चाहिए अन्यथा पूरी प्रक्रिया निरर्थक हो जाएगी। वहीं, सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सुप्रीम कोर्ट से कहा कि वह दशहरा की छुट्टियों के दौरान व्यक्तिगत रूप से महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष से बातचीत करेंगे। कोर्ट ने शिवसेना विधायकों की अयोग्यता से जुड़े विवाद पर याचिकाओं की सुनवाई के लिए 30 अक्टूबर की तारीख निर्धारित की। उच्चतम न्यायालय ने महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष को शिवसेना विधायकों के खिलाफ अयोग्यता याचिकाओं पर सुनवाई के लिए वास्तविक समय सीमा बताने का अंतिम अवसर दिया।

यह मकान नहीं, संविधान को बचाने की लड़ाई हैः राघव चड्ढा

नईदिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट द्वारा मंगलवार को ट्रायल कोर्ट के पूर्व आदेश को रद्द करने के बाद आप सांसद राघव चड्ढा को अपना सरकारी बंगला खाली नहीं करना पड़ेगा। उच्च न्यायालय ने राज्यसभा सचिवालय को उन्हें आवंटित

सरकारी बंगले से बेदखल करने से रोकने वाले निचली अदालत के अंतरिम आदेश को चुनौती देने वाली उनकी याचिका आज स्वीकार कर ली। इसकी को लेकर राघव चड्ढा ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि ये मकान या दुकान की नहीं, संविधान को बचाने की लड़ाई है। अपने एक्स पोस्ट में राघव चड्ढा ने कहा कि ये मकान या दुकान की नहीं, संविधान को बचाने की लड़ाई है। अंततः सत्य और न्याय की जीत हुई। मुझे मेरे आधिकारिक आवास से बेदखल करने के अन्यायपूर्ण आदेश को रद्द करने के माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय के फैसले पर मेरा बयान। उन्होंने कहा कि इस आवंटन को रद्द करना राजनीतिक प्रतिशोध का स्पष्ट मामला था, जिसका उद्देश्य एक युवा, मुखर सांसद को चुप कराना था।

मुसलमानों को कोई नहीं रोक सकता अगर...: खामेनेई

नईदिल्ली। ईरानी राज्य टीवी की रिपोर्ट के अनुसार, ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने मंगलवार को कहा कि अगर गाजा में इजरायल के अपराध जारी रहे तो दुनिया भर के मुसलमानों और प्रतिरोध बलों को कोई नहीं रोक

पाएगा। खामेनेई ने कहा कि अगर फिलिस्तीनियों के खिलाफ ज़ायोनी शासन के अपराध जारी रहे तो कोई भी मुसलमानों और प्रतिरोध बलों का सामना नहीं कर सकता। गाजा पर बमबारी तुरंत बंद होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि ज़ायोनी शासन के अधिकारियों पर गाजा में फिलिस्तीनियों के खिलाफ उनके अपराधों के लिए मुकदमा चलाया जाना चाहिए। ईरान मध्य पूर्व के आसपास अपने गठबंधन वाले सशस्त्र समूहों को प्रतिरोध धुरी का हिस्सा बताता है। 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद से ईरान के मौलवी शासक फिलिस्तीनी मुद्दे के समर्थन में मुखर रहे हैं। 7 अक्टूबर को दक्षिणी इज़राइली शहरों में हुए हमले के दौरान समूह के बंदूकधारियों द्वारा 1,300 लोगों, मुख्य रूप से नागरिकों की हत्या के बाद इज़राइल ने हमास को नष्ट करने की कसम खाई है, जो इज़राइल के 75 साल के इतिहास में सबसे घातक एक दिन था।

बसपा के जनाधार पर कांग्रेस की है नजर!

अभय कुमार दुबे

दलित राजनीति अपने होने के बावजूद आज वैसी नहीं रह गई है जैसी वह शुरुआत में थी या जैसा उसे वैचारिक रूप से कल्पित किया गया था। आज की तारीख में दलित नामक छतरी के नीचे खड़ी अनुसूचित जातियों की वोटिंग प्राथमिकताओं के बारे में कुछ भी निश्चित नहीं रह गया है। आंबेडकरवादियों और बहुजनवादियों की परियोजना अपनी गोधूलि बेला में प्रतीत हो रही है। ऐसे में कांग्रेस द्वारा कांशीराम की राजनीतिक विरासत के जरिये दलित वोटों की गोलबंदी का प्रयास करना एक दिलचस्प रणनीति है। यह कितनी सफल होगी, कितनी विफल- यह इस बात पर निर्भर है कि मायावती और बसपा की तरफ से इसकी प्रतिक्रिया में क्या कदम उठाए जाते हैं। फिलहाल मायावती की राजनीतिक निष्क्रियता और रणनीतिक रूप से भाजपा समर्थक रुझान उनके भविष्य को सांसत में डाल रहे हैं। कांग्रेस ने कांशीराम की तस्वीर लगा कर उनकी राजनीतिक विरासत को अपनाने का योजनाबद्ध अभियान शुरू कर दिया है। हम जानते हैं कि कांशीराम के कांग्रेस के बारे में क्या विचार थे। वे चाहते थे कि कांग्रेस किसी न किसी प्रकार कमजोर होती चली जाए और अंततः खत्म हो जाए। ऐसा लगता है कि पिछड़ी जातियों की गोलबंदी के दायरे में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में कांग्रेस के उतरने के पीछे इरादा यह है कि अतिपिछड़ी जातियों को पूरी तरह से भाजपा के पाले में जाने से रोका जा सके। दूसरी तरफ संभवतः कांग्रेस को यह भी लग रहा है कि मायावती की निष्क्रियता से बहुजन समाज पार्टी का दलित जनाधार 'फ्लोटिंग' होने की तरफ बढ़ रहा है। इससे पहले कि उसे भाजपा हड़प ले, कांग्रेस चाहती है कि उसे अपनी ओर खींचने का प्रयास किया जाए। आखिर एक लंबे समय तक ये दलित मतदाता कांग्रेस को वोट दे कर जिताते रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं कि पहले डॉ। आंबेडकर और फिर कांशीराम द्वारा

चलाया गया दलित राजनीतिक प्रोजेक्ट अगर बिखरा नहीं तो बंट अवश्य गया है।

इस विडंबना को कैसे नजरंदाज किया जा सकता है कि जो दलित शब्द सत्तर के दशक से ही धीरे-धीरे अनगिनत छोटी-बड़ी बिरादरियों में बंटी अनुसूचित जातियों की राजनीतिक अस्मिता का प्रतिनिधि वाहक बनता चला गया था, उसके विश्लेषण को एक श्रेणी की तरह इस्तेमाल करने पर अब इन जातियों की राजनीति एकता का बोध नहीं होता। चुनावों में दलित वोटों की खींचतान मच जाती है। उत्तर प्रदेश में भाजपा की रणनीति का एक प्रमुख पहलू गैर-जाटव दलित वोटों को अपनी ओर खींचना है। उसे भरोसा है कि वह ऐसा कर पाएगी। इसी तरह समाजवादी पार्टी को भी बीच-बीच में लगता रहता है कि अवध और पूर्वी उत्तर प्रदेश में जाटवों के बाद संख्याबल में सबसे मजबूत पासी जाति के वोट इस बार उसे मिल सकते हैं। दलित एकता का बिखराव इस कदर बढ़ चुका है कि अब कोई औपचारिक रूप से भी नहीं पूछता कि बहुजन समाज पार्टी को जाटव वोटों के अलावा कौन सी दलित बिरादरी के वोट मिलने वाले हैं। यह एक राजनीतिक समझ बन चुकी है कि मायावती अब वास्तविक अर्थों में 'दलित नेता' न रह कर महज जाटव नेता बन कर रह गई हैं। उनकी मुश्किल और भी बढ़ने वाली है क्योंकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में जाटवों पर उनके दबदबे को भीम आर्मी के चंद्रशेखर रावण से चुनौती मिल रही है। कांशीराम को एक जाटव नेता की खोज थी (उ।प्र। की अनुसूचित जातियों में सत्तर फीसदी जाटव ही हैं), जो उनके बामसेफ और डीएस-फोर के सहयोगियों में नहीं था। इस खोज में उनके हाथ मायावती लगीं जो आज 'बहिनजी' के रूप में बहुजन समाज पार्टी की सर्वेसर्वा हैं।

लेकिन क्या बहुजन थीसिस के आईने में देखने पर उन्हें कांशीराम का उत्तराधिकारी माना जा सकता है? कांशीराम ने जाटवों के नेतृत्व में अन्य दलित जातियों, अति-पिछड़ों और गरीब मुसलमानों को जोड़ कर एक बहुजन गुलदस्ता बनाया था। मायावती द्वारा पिछले बीस साल में जिस शैली की राजनीति की गई, उसके संचित परिणाम के कारण आज उनके साथ न तो अति-पिछड़े हैं, न ही मुसलमान। ये वोट उन्हें तब मिलते हैं जब वे इनमें से किसी को टिकट देती हैं। जाटव मतदाता आज भी हाथी पर बटन दबाता है, लेकिन अगर मायावती इसी तरह चुनाव की होड़ में मुख्य खिलाड़ी बनने से चूकती रहीं तो अगले चुनावों में वह अपना वोट बर्बाद करने से बचने के बारे में सोचने लगेगा। मायावती की इन अनिश्चितताओं की झलक 2022 के विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा की चुनावी रणनीति में भी देखी जा सकती है।

मीडिया मंचों पर सक्रिय भाजपा-रुझान वाले टिप्पणीकारों और भाजपा नेताओं के वक्तव्यों से पहले तो यह दिखाने का प्रयास हुआ कि लड़ाई सीधी सपा और भाजपा में है। लक्ष्य यह था कि गैर-जाटव वोटों को अपनी ओर खींचे रहने की सुविधा मिले। लेकिन जब भाजपा ने देखा कि गैर-जाटव वोट केवल उसी को नहीं सपा को भी मिलने वाले हैं, और उसे यह भी लगा कि मायावती के होड़ में रहने के कारण कुछ भाजपा-विरोधी जाटव वोट भी सपा की तरफ जा सकते हैं, तो मीडिया मंचों पर बसपा की 'ताकत' को कम करके न आंकने की चेतावनियां दर्ज कराई जाने लगीं।

पराजय से भयभीत कांग्रेस प्रत्याशी चयन नहीं कर पा रही : अवस्थी

जगदलपुर। मौजूदा विधानसभा चुनाव में सत्ताधारी कांग्रेस ने प्रदेश की जनता के नाराज रूख व आने वाले नकारात्मक चुनाव परिणाम को भांप लिया है। अपनी निश्चित पराजय के भय से ही कांग्रेस को विधायक प्रत्याशियों के चयन में विलंब हो रहा है। कांग्रेस की सिर्फ 30 घोषित प्रत्याशियों की सूची में उनकी सरकार के मुख्यमंत्री सहित सभी मंत्री, विधानसभा अध्यक्ष और कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष शामिल हैं। शेष 60 सीटों में प्रत्याशियों की घोषणा करना कांग्रेस के लिये टेड़ी खीर साबित हो रहा है। कांग्रेस के अंदर घमासान मचा हुआ है और बाहर प्रदेश की जनता कांग्रेस के कुशासन का करारा जवाब देने का इंतजार कर रही है। उन्होने कहा कि झूठ की उम्र अधिक नहीं होती, छत्तीसगढ़ की जनता जनार्दन भाजपा को आशीर्वाद देकर वर्तमान चुनाव में यह साबित करने मन बना चुकी है।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी आलोक अवस्थी ने कहा कि कांग्रेस के पांच साल के शासन में झूठे वायदे ही छत्तीसगढ़ की जनता के हिस्से में आये है। विकास के काम केवल कोरी बयानबाजी व बैनर पोस्टर में होते रहे। झूठे वायदों की लंबी फेहरिस्त ही कांग्रेस के खाते में है जिसका बखूबी संज्ञान भी कांग्रेस के बड़े नेताओं को गया है। यही कारण है कि विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को प्रत्याशी घोषित करने में घबराहट हो रही है। उन्होने कहा कि पांच साल प्रदेश में सरकार चलाने के बाद भी सत्ताधारी कांग्रेस विधानसभा चुनाव के लिये समय पर अपने प्रत्याशी तक घोषित नहीं पा रही है। भारतीय जनता पार्टी ने लगभग अपने सभी प्रत्याशियों की सूची जारी कर दी है और प्रचार में भी कांग्रेस से आगे चल रही है। छत्तीसगढ़ में भाजपा विजय का परचम लहराकर सरकार बनाने जा रही है, यह संकेत प्रत्याशी चयन में बार-बार पैर पीछे कर रही कांग्रेस ने स्वयं दे दिया है।

भाजपा ने की चुनाव संचालक व समन्वयक की घोषणा

जगदलपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव की अनुशंसा व प्रदेश महामंत्री संगठन पवन साय की अनुमति से भाजपा जिला अध्यक्ष रुपसिंह मण्डावी ने विधानसभा चुनाव के लिये जिला संचालन समिति की घोषणा की है, साथ ही बस्तर जिले की तीनों विधानसभाओं के चुनाव संचालक एवं समन्वयक के नाम भी घोषित किये हैं। जगदलपुर विधानसभा के चुनाव संचालक श्रीनिवास राव मद्दी बनाये गये हैं, वहीं समन्वयक के रूप में वरिष्ठ भाजपा नेता शरद अवस्थी व पूर्व विधायक संतोष बाफना को दायित्व सौंपा गया है। बस्तर विधानसभा के चुनाव संचालक विद्याशरण तिवारी होंगे और चुनाव समन्वयक पूर्व विधायक डा. सुभाऊ कश्यप व भाजपा जिला अध्यक्ष रुपसिंह मण्डावी रहेंगे। ऐसे ही चित्रकोट विधानसभा के चुनाव संचालक पूर्व विधायक बैदूराम कश्यप और समन्वयक पूर्व विधायक लच्छूराम कश्यप व आनंदमोहन मिश्रा बनाये गये हैं। विधानसभा चुनाव के लिये गठित जिला संचालक समिति में 19 प्रमुख लोगों के नाम हैं जिनमें भाजपा जिला अध्यक्ष रूपसिंह मण्डावी, पूर्व सांसद दिनेश कश्यप, भाजपा प्रदेश महामंत्री केदार कश्यप, जिला प्रभारी जी वेंकटेश्वर राव, शरद अवस्थी, किरणदेव, संतोष बाफना, डा. सुभाऊ कश्यप, श्रीनिवास राव मद्दी, बैदूराम कश्यप, लच्छू राम कश्यप, समुंदसाय कच्छ, विद्याशरण तिवारी, कमलचंद भंजदेव, शिवनारायण पाण्डेय, संजय पाण्डेय, सुधीर पाण्डेय, रामाश्रय सिंह व वेदप्रकाश पाण्डेय शामिल हैं।

चुनाव के मद्देनजर पुलिस की बड़ी कार्रवाई गाड़ी चेकिंग के दौरान लाखों रुपये बरामद

रायगढ़। रायगढ़ में पुलिस की टीम ने वाहन चेकिंग के दौरान तीन कारों से लाखों रुपये बरामद किए। भारी मात्रा में कैश रखने के संबंध में कोई संतोषजनक जवाब नहीं दे पाने पर जूटमिल पुलिस ने कार्रवाई की।

पुलिस और फ्लाइंग स्क्वॉड की टीम ने 3 अलग-अलग कार से करीब 16 लाख रुपये कैश बरामद किया है। पकड़े गए लोगों द्वारा भारी मात्रा में रुपये रखने के संबंध में कोई संतोषजनक जवाब नहीं दे पाने पर जूटमिल पुलिस ने कार्रवाई की। राज्य में आचार संहिता लागू है।

सोमवार को एफएसटी व जूटमिल पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा छातामुड़ा चौक के पास वाहनों की चेकिंग की जा रही थी। इस दौरान ब्रेजा कार क्रमांक सीजी 13 एएम 9487 में सवार नीरज अग्रवाल पिता कृष्ण अग्रवाल (44) निवासी सत्तीगुड़ी चौक रायगढ़ के पास रखे बैक को चेक किया गया।

इस दौरान बैग में 2 लाख 64 हजार 500 रुपये बरामद हुए। वहीं सेंट्रो कार क्रमांक सीजी चार एमटी 8453 में सवार बबलू मलिक पिता हबीब मलिक निवासी गौशाला पैजमुड़ा जिला संबलपुर ओडिशा के पास रखे बैग की जांच की गई तो उसमें चार लाख रुपये बरामद हुए हैं। इसी क्रम में एक अन्य टाटा हैरियर कार क्रमांक सीजी 13 एआर 1594 में सवार रमेश अग्रवाल पिता वासुदेव अग्रवाल निवासी कोड़ातराई के पास रखे बैग की तलाशी ली गइ तो उसमें नौ लाख रुपये बरामद हुए। पुलिल की पूछताछ में कार में सवार लोग पैसे के संबंध में न तो कोई सही जवाब दे पाए और न ही कोई वैध कागजात दिखा पाए। जबकि चुनाव आयोग की ओर से स्पष्ट गाइडलाइन जारी की गई है कि कोई भी व्यक्ति

50,000 रुपये से अधिक की संपत्ति के परिवहन करते समय उचित कागजात प्रस्तुत करना अनिवार्य है। ऐसे में पुलिस द्वारा आचार संहिता का उल्लंघन पाए जाने पर कुल नकदी रकम 15,64,500 रुपये की जब्त की है।

कोरबा में वाहन जांच से मचा हड़कप, पुलिस ने जब्त किए सोने-चांदी के जेवरात

कोरबा। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव के मद्देनजर पुलिस प्रशासन अलर्ट है। जगह जगह वाहनों की चेकिंग हो रही है। कई जगहों से मोटा कैश भी बरामद हो रहा है। कोरबा पुलिस को बीती रात एक बड़ी कामयाबी मिली।

मिली जानकारी के मुताबिक, हरदी बाजार थाना पुलिस ने चेकिंग पॉइंट पर 15.087 किलो ग्राम कीमती सोने और चांदी के जेवरात जब्त किए हैं। जिसकी कीमत लगभग तीन लाख पचास हजार बताई जा रही है। बांगो थाना पुलिस ने वाहन जांच के दौरान 8 लाख नगदी बरामद की और मानिकपुर चौकी ने दो लाख कैश जब्त किया है। बता दें कि देर रात तक चली वाहन जांच से हड़कंप मच गया। चुनाव के मद्दे नजर पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर जिले की थाना चौकियों को वाहन जांच के निर्देश दिए गए हैं।

15 साल के कार्यकाल में रमन ने किया किसानों के साथ छल : देवांगन

राजनांदगांव। 15 साल के कार्यकाल में पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने किसानों के साथ छल किया और उन्हें बोनस का प्रलोभन देकर सरकार बनाया और उनके कार्यकाल में प्रदेश में कई घोटाले हुए इसलिए पिछले चुनाव में जनता ने उखाड़ फेंका। यहां विकास का कोई कार्य नहीं हुआ, लेकिन इस बार जनता ने ठान लिया है वे बदलाव करके रहेंगे और अगर वे यहां से जीतते हैं तो यहां की जनता से किए सारे वादे वे पूरा करेंगे। उक्त बातें राजनंदगांव विधानसभा के कांग्रेस प्रत्याशी व खनिज निगम के अध्यक्ष गिरीश देवांगन ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहीं।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस के सभी कार्यकर्ताओं की मंशा चुनाव जीतने की है। भूपेश सरकार ने 5 साल किसान, युवाओं सहित सभी वर्ग के विकास के लिए कार्य किया। 2023 विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस उम्मीदवारों की प्रथम सूची में उन्हें राजनंदगांव विधानसभा के लिए प्रत्याशी बनाया गया है। उन्होंने कार्यकताओं की बैठक ली जिसमें सभी पदाधिकारी शामिल थे और सभी ने मिलकर चुनाव में काम करने का आश्वासन दिया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की भूपेश सरकार ने 5 साल में किसानों से लेकर सभी वर्ग के लोगों के विकास के लिए कार्य किया है। धान खरीदी से लेकर बिजली बिल माफ, बेरोजगारी भत्ता, स्वामी आत्मानंद स्कूल सहित स्वास्थ्य की दिशा में धनवंतरी, मोबाईल मेडिकल यूनिट, मितान योजना सहित कई योजनाएं जनहित में प्रारंभ किया। पत्रकारवार्ता में कांग्रेस नेता शाहिद भाई, महापौर हेमा देशमुख, शहर कांग्रेस अध्यक्ष कुलबीर छाबड़ा, जितेन्द्र मुदलियार, निखिल द्विवेदी, मेहुल मारू सहित अन्य कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित थे।

खुद को बाहरी प्रत्याशी बताने पर भड़की भाजपा प्रत्याशी रेणुका सिंह

मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर। केन्द्रीय राज्य मंत्री व भरतपुर सोनहत विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी रेणुका सिंह गांव गांव का दौरा कर अपना प्रचार करने में जुटी है। सोमवार को रेणुका सिंह नागपुर मंडल के उजियारपुर, बरबसपुर, नागपुर, कठौतिया, इमलीगोलाई चनवारीडांड सहित कई गांवों के लोगों से मिली और अपने पक्ष में वोट मांगा।

खुद को बाहरी प्रत्याशी बताने पर रेणुका सिंह भड़क गई और कांग्रेस नेता सोनिया गांधी को इटली भिजवाने की बात कहने लगी। उन्होंने कहा कि भरतपुर सोनहत विधानसभा क्षेत्र उनके लिए नया नहीं है। यह क्षेत्र उनका लिए काफी पुराना है व इस क्षेत्र से उनका गहरा लगाव भी है। केंद्रीय मंत्री रेणुका सिंह ने कहा कि मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी-भरतपुर जिला से उनका अपनापन रहा है। केन्द्रीय मंत्री व पूर्व में प्रभारी मंत्री के रूप में उन्हें इस क्षेत्र में काम करने का अनुभव है।

रेणुका सिंह ने क्षेत्र के वर्तमान विधायक गुलाब कमरो पर गरीबों के राशन पर डाका डालने का आरोप लगाया। रेणुका सिंह ने कहा कि नागपुर व आसपास के लोगों की मांग पर अब यात्री ट्रेन का ठहराव नागपुर में होना शुरू हो गया है। भाजपा प्रत्याशी ने राष्ट्रीय नेतृत्व का आभार जताते हुए जीत का दावा किया और क्षेत्र में विकास की बात कही। भरतपुर सोनहत विधानसभा सीट पर कांग्रेस ने अभी तक अपने पत्ते नहीं खोले हैं, जिसकी वजह से चुनावी रंग अभी फीका है हालांकि केंद्रीय मंत्री रेणुका सिंह को विधानसभा उम्मीदवार बनाए जाने के बाद यह विधानसभा सीट हाई प्रोफाइल मानी जा रही है। इस सीट पर कांग्रेस का कब्जा है। यहाँ से गुलाब कमरो विधायक हैं। माना जा रहा है कि छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 कांग्रेस गुलाब कमरो को ही अपना उम्मीदवार बनाएगी।

बीजापुर में सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़

बीजापुर। छत्तीसगढ़ के बीजापुर से एक नक्सली के मारे जाने की है। रिपोर्ट के मुताबिक, बीजापुर के बंदेपारा के जंगलों में सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई है। इस मुठभेड़ के दौरान एक नक्सली मारा गया है। जिसके पास से एके-47 राइफल बरामद हुई है। आईजी बस्तर पी सुंदरराज ने जानकारी देते हुए बताया कि मुठभेड़ के बाद तलाशी अभियान जारी है।

मंगलवार की सुबह बीजापुर में पुलिस को बड़ी सफलता मिली हैं। मद्देड़ थाना क्षेत्र के बंदेपारा और कोरंजेड के जंगल में पुलिस के साथ नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई। जिसमें एक नक्सली को मार गिराया है। वहीं मौके से एके 47 रायफल बरामद हुई है। खबर लिखे जाने तक सर्चिंग अभियान चल रहा था।

पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, बीजापुर जिले मद्देड़ थाना क्षेत्र कोरंजेड व बंदेपारा के जंगल में मद्देड़ एरिया कमेटी प्रभारी डीवीसीएम नागेश, सचिव एसीएम बुच्चन्ना,एसीएम विश्वनाथ व अन्य 15 से 20 सशस्त्र नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना पर बीजापुर से डीआरजी, बस्तर फाइटर, एसटीएफ व सीआरपीएफ 170 बटालियन की संयुक्त टीम नक्सल विरोधी अभियान पर निकली थी। मंगलवार की सुबह सर्चिंग के दौरान बंदेपारा के जंगल में पुलिस व नक्सलियों की बीच मुठभेड़ हो गई। पुलिस के मुताबिक, मुठभेड़ स्थल से एक नक्सली का शव और एक एके 47 रायफल बरामद हुई। मारे गए नक्सली की पहचान नहीं हो सकी है। पुलिस ने बताया कि नक्सली कोरंजेड व बंदेपारा के जंगल में कैम्प लगाये हुए थे। इधर मुठभेड़ के बाद घटना स्थल में सर्चिंग अभियान जारी है।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

ईडी की ओर से दायर दो याचिकाओं पर हुई सुनवाई

बिलासपुर। ईडी की ओर से दायर दो याचिकाओं पर हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। कोयला घोटाला मामले में शासन के जवाब पर प्रत्युत्तर देने के लिए ईडी ने समय मांगा। दूसरी ओर शराब घोटाला मामले में शासन ने जवाब के लिए समय मांगा। जिसपर कोर्ट ने अगली सुनवाई दो सप्ताह बाद निर्धारित कर दी। दरअसल ईडी ने कुछ माह पहले रायपुर के विशेष कोर्ट में शराब घोटाले के संबंध में 13000 पन्नों की चार्जशीट प्रस्तुत की थी। इन दस्तावेजों में बताया गया कि आरोपियों ने मिलकर सरकारी सिस्टम का दुरुपयोग कर बड़े भ्रष्टाचार को अंजाम दिया है। ईडी ने छापामार कार्रवाई के बाद आरोप लगाया था कि प्रदेश में दो हजार करोड़ रुपए के शराब घोटाले के साथ ही टैक्स की चोरी हुई है। पूछताछ के बाद ईडी ने रायपुर निवासी कारोबारी अनवर ढेबर को गिरफ्तार किया था। दोनों मामलों में ईडी ने सीबीआई जांच की मांग करते हुए राज्य के साथ सीबीआई को भी पक्षकार बनाया है।

नामांकन रैली पर मधुमक्खियों का हमला

कबीरधाम। कानफोड़ू डीजे से आम नागरिक तो परेशान है लेकिन अपनी व्यथा व किस्से बयां करे क्योंकि कानफोड़ू डीजे बजाने वाले और उसकी मांग करने वाले एक ही बिरादरी के हैं। लेकिन यह कानफोड़ू डीजे उस समय सभी पर भारी पड़ गया जब इसकी गूंज मधुमक्खियों को रास नहीं आई और अपने छाते से निकलकर उसने हमला कर दिया। नतीजा यह हुआ कि रैली छोड़ लोग वहां से भागने लगे। इस घटनाक्रम का एक वीडियो भी सामने आया, जिसमें कांग्रेसी कार्यकर्ता दौड़ते भागते नजर आ रहे हैं। जो समाचार व जानकारी मिली है उसके अनुसार कवर्धा से कांग्रेस प्रत्याशी मोहम्मद अकबर अपने समर्थकों के साथ नामांकन दाखिल करने मंगलवार को समर्थकों के साथ रैली लेकर निकले थे। इस दौरान जैसे ही कांग्रेस की रैली कवर्धा के दर्रीपारा पहुंची, डीजे की यह आवाज उन्हें पसंद नही आई और वे बिफर गयी और मधुमक्खियों लोगों पर हमला कर दिया। मधुमक्खियों से बचने के लिए कार्यकर्ताओं ने दौड़ लगा दी। इस दौरान कई राहगीरों पर भी मधुमक्खी ने हमला कर दिया।

भाजपा में बगावत, निर्दलीय चुनाव लड़ने नामांकन किया

राजनांदगांव। कई सीटों पर नाराजगी थमने का नाम ही नहीं ले रही है,भाजपा से डोंगरगढ विधानसभा सीट पर जिला पंचायत सदस्य राजेश श्यामकर ने टिकट की मांग की थी,और बड़े नेताओं ने आश्वस्त भी कर रखा था। जब नहीं मिली तो नाराज होकर निर्दलीय नामांकन दाखिल कर दिया है मतलब सीट पर भाजपा को नुकसान होना तय है। हालांकि बड़े नेताओं ने अभी कुछ कहा नहीं हैं। जानकारी के अनुसार, भाजपा नेता व जिला पंचायत सदस्य राजेश श्यामकर डोंगरगढ़ विधानसभा सीट से भाजपा से टिकट की मांग कर रहे थे। लेकिन जब उन्हें पार्टी द्वारा टिकट नहीं दिया गया तो उन्होंने निर्दलीय रूप से चुनाव लडने का मन बना लिया है। जिसको लेकर आज वे राजनांदगाव कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंचे और अपना नामांकन दाखिल किया है। आपको बता दें कि, राजेश श्यामकर भाजपा के पुराने कार्यकर्ता रहे हैं, और वे डोंगरगढ़ से टिकट को लेकर अपनी दावेदारी भी पेश कर चुके थे, जिसके बाद अब उन्होंने निर्दलीय चुनाव लडने का ऐलान कर दिया है।

ज्वेलरी से भरा बैग छीनकर फरार हुए आरोपी

बलरामपुर। बलरामपुर रामानुजगंज में आज सुबह 11 बजे के करीब नगर के भीड़भाड़ वाले सेठ मोहल्ला मोड़ के पास स्थित एक ज्वेलरी दुकान में दुकान संचालिका बैग में सोना चांदी लेकर दुकान में आई थी और शटर उठाया ही था इसी दौरान बाइक से आए दो युवक सोना चांदी से भरा बेग उठाकर भाग गए। बताया जा रहा है कि बैग में करीब सात-आठ लाख का सोना था। घटना की सूचना पुलिस अधीक्षक लाल उमेद सिंह को दी गई जिनके निर्देश पर तत्काल पुलिस बल सक्रिय हुआ। मिली जानकारी के अनुसार आज सुबह 11 बजे के करीब सेठ मोहल्ला मोड़ के पास स्थित शंभू ज्वेलर्स की संचालिका सुषमा सोनी अपना दुकान खोलने आई थी अपने साथ प्रतिदिन सोना चांदी घर ले जाती थीं जिसको लेकर वह दुकान में आई थी। शटर उठाकर जैसे ही दुकान में प्रवेश कर रही थीं इसी दौरान दो बाइक सवार बैग छीनकर फरार हो गये। दुकान संचालिका सुषमा सोनी के पति की दो वर्ष पूर्व कोरोना से मौत हो गई थी। किसी प्रकार से वह दुकान का संचालन कर रही थी।

चलती गाड़ी में आग लगने से मचा हड़कंप

बालोद। डोंगरगढ़ से मां बम्लेश्वरी के दर्शन कर लौट रहे भक्तों की गाड़ी में भीषण आग लग गई गाड़ी से धुआं उठते देख गाड़ी में सवार 14 लोग अचानक गाड़ी छोड़ भागने लगे। जैसे ही वे गाड़ी से उतरे गाड़ी पूरी तरह आग की चपेट में आ गई। गाड़ी में सवार लोगों ने बताया कि वे कांकेर जिले के चारामा थाना क्षेत्र के ग्राम लखनपुरी के निवासी हैं घटना में 14 लोग बाल-बाल बचे जिसमें चार बच्चे भी शामिल थे। फिलहाल बालोद थाने की टीम मौके पर पहुंच गई है और भीड़ को खाली करा रही है भीषण आग को देखते हुए लोग सड़क पार नहीं कर रहे थे वहीं अग्निशमन सेवा को भी मौके पर भेजा गया है। यह घटना बालोद थाना क्षेत्र के ग्राम तरौद के पास की है। वाहन सवार लोग भगवान का शुक्र अदा कर रहे है कि समय रहते सभी वाहन से उतर गए जहां उनकी जान बच पाई है, उन्होंने बताया कि उनका भ्रमण अभी बाकी था, सभी भक्त बालोद जिले और धमतरी जिले के भ्रमण को लेकर आगे बढ़े थे जहां रास्ते में यह घटना घटी जिसके बाद दूसरे वाहनों से अपने गंतव्य को लौटेंगे।

200 किमी पैदल चलकर करते हैं मां दंतेश्वरी के दर्शन

जगदलपुर। नवरात्रि के दिनों में माता के मंदिरों में भक्तों की भीड़ देखी जा सकती है।माता को प्रसन्न करने के लिए नौ दिनों में भक्त मन में आस्था लिए माता के दर्शन करते हैं। छत्तीसगढ़ के शक्तिपीठों में लोगों की भीड़ उमड़ती है। ऐसा ही एक शक्तिपीठ दंतेवाड़ा में हैं।जो विश्व प्रसिद्ध है। इस देवी के धाम को लोग दंतेश्वरी माई के नाम से जानते हैं।नवरात्रि के दिनों में इस शक्तिपीठ के दर्शन करने के लिए हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं।

दंतेश्वरी मां की महिमा इतनी अपार है कि माता से मांगी गई हर मन्नत पूरी हो जाती है।लोग अपनी मन्नत पूरी होने के बाद और मन्नत मांगने से पहले माता के दरबार में कठिन परिश्रम के बाद पहुंचते हैं।इन्हीं में से एक पदयात्रा भी है। दंतेवाड़ा जिले की देवी के दर्शन करने के लिए भक्त 100 से लेकर 200 किलोमीटर तक की पदयात्रा करते हैं।

इसे दंतेश्वरी देवी की अपने भक्तों पर कृपा ही कहा जा सकता है कि तपती धूप में भी बच्चे, बूढ़े और महिलाएं बिना किसी शारीरिक कष्ट के माता के दर्शन के लिए पहुंचते हैं।ऐसे श्रद्धालुओं के लिए सामाजिक संगठन और स्थानीय लोग जगह-जगह पर सुविधा केंद्रों का इंतजाम करते हैं। ऐसा माना जाता है कि हर साल भक्त मां के दर्शन के लिए नवरात्रि के अवसर पर पैदल ही दंतेवाड़ा आते हैं। मीडिया ने दंतेवाड़ा के दंतेश्वरी मंदिर के रास्ते में आने वाले भक्तों से बात की। इस दौरान हमें पदयात्री पुष्कर नाग मिले। जो बिंजोली गांव से दंतेवाड़ा के लिए निकले हैं। बिंजोली गांव से दंतेश्वरी मंदिर की दूरी लगभग 200 किलोमीटर है।पुष्कर नाग ने बताया कि वो दंतेवाड़ा के दंतेश्वरी मंदिर में दर्शन के लिए पैदल जा रहे हैं।100 किलोमीटर की यात्रा पूरी हो चुकी है।100 किमी और बाकी है। पुष्कर नाग ने कहा नवरात्रि का उत्सुकता के साथ इंतजार करते हैं। पिछले वर्ष गए हुए थे। आने वाले इस वर्ष के लिए एक साल तक इंतजार करना पड़ा। ताकि पदयात्रा कर सकें।

पदयात्री युवती मनबति ने बताया कि नवरात्रि को लेकर काफी उत्साह रहता है। क्योंकि जो कुछ मांगे रहती है। वो वहां जाने से पूरा होता है। इसीलिए पदयात्रा जाते हैं। इसके लिए महीनों से इंतजार करके डिसाइट करते हैं कि कौन से दिनों में जाना है।वहीं नागेश्वरी कश्यप ने बताया कि वे सतोषा गांव से दंतेवाड़ा के लिए निकली है। यह उसका पहला पदयात्रा है। दंतेवाड़ा जाकर देवी दंतेश्वरी का दर्शन करेगी। साथ ही अच्छे रीति से जा रहे हैं इसीलिए अच्छा लग रहा है।

जगदलपुर में दंतेवाड़ा जाने वाले रास्ते पर सामाजिक संगठन और स्थानीय दुकानदार नवरात्रि के अवसर पर स्टॉल लगाते हैं।जिसमें पदयात्रियों के लिए पीने के पानी, आराम करने के लिए बिस्तर और भोजन का प्रबंध किया जाता है। ये सारी सुविधाएं निशुल्क उपलब्ध कराई जाती है। रात्रि होने पर भक्तों के सोने का इंतजाम भी सामाजिक संगठन करता है।

21 नामांकन प्रत्याशियों ने किया क्रय, लेकिन किसी ने नही किया नामांकन दाखिला

जगदलपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा के लिए प्रथम चरण में होने वाले बस्तर की सभी 12 विधानसभा सीट के लिए 13 अक्टूबर से नामांकन दाखिला की कार्रवाई प्रारम्भ की गई। बस्तर जिले से तीन विधानसभा क्षेत्र 85 बस्तर (अजजा), 86 जगदलपुर एवं 87 चित्रकोट (अजजा) सम्मिलित है। कांग्रेस, भाजपा, जनता कांग्रेस, आप, बसपा, भाकपा, अजाद जनता पार्टी सहित सभी दलों के प्रत्याशियों में लगभग सभी ने नामांकन पत्र खरीद लिया है, लेकिन नामांकन दाखिला किसी ने नही किया है। इस तरह अब तक तीनों विधानसभा क्षेत्र से 21 नामांकन पत्र प्रत्याशियों ने क्रय किया है।

नामांकन पत्र खरीदने वाले नेताओं में चित्रकोट विधानसभा से दीपक बैज, बस्तर विधानसभा क्षेत्र से लखेश्वर बघेल, जगदलपुर विधानसभा क्षेत्र से किरण देव, बस्तर विधानसभा क्षेत्र से मनीराम कश्यप, चित्रकोट विधानसभा क्षेत्र से विनायक गोयल, जगदलपुर विधानसभा क्षेत्र से जनता कांग्रेस छग (जे) से नवनीत चांद शामिल है। इसके अलावा जगदलपुर विधानसभा क्षेत्र से आम आदमी पार्टी प्रत्याशी शुभम सिंह, आजाद जनता पार्टी प्रत्याशी सरिता सिंह और इसी विधानसभा से बीएसपी से संपत कश्यप शामिल है। चित्रकोट विधानसभा क्षेत्र के अन्य प्रत्याशियों में आम आदमी पार्टी से दंतीराम पोयाम, सीपीआई प्रत्याशी रामु मौर्य और बीएसपी प्रत्याशी सन्नू पोयाम शामिल है। बस्तर सीट के लिए कांग्रेस व भाजपा प्रत्याशियों के अलावा सीपीआई से जगमोहन बघेल, बीएसपी से रामाधार बघेल, जनता पार्टी छग. (जे) सोनसाय कश्यप सहित फुलकुंवर सम्मिलित है।

संक्षिप्त समाचार

केंद्रीय गृहमंत्री 19 को नामांकन रैली में होंगे शामिल

जगदलपुर। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह 19 अक्टूबर को जगदलपुर प्रवास पर रहेंगे। विधानसभा चुनाव के बीच केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह जगदलपुर में प्रत्याशियों की नामांकन रैली में शामिल होंगे। इसके साथ ही वे लालबाग मैदान में चुनावी आमसभा को भी संबोधित करेंगे। भाजपा जिलाध्यक्ष रूपसिंह मंडावी ने बताया कि अमित शाह के दौरे को लेकर भाजपा तैयारियों में जुट गई है। ऐसे में 19 अक्टूबर को वे जगदलपुर प्रत्याशी किरण देव, बस्तर प्रत्याशी मनीराम कश्यप व चित्रकोट प्रत्याशी विनायक गोयल के साथ उनकी नामांकन रैली में शामिल होंगे। रैली भाजपा कार्यालय से माई दंतेश्वरी मंदिर जाएगी, जिसके बाद मां दंतेश्वरी के दर्शन के बाद भाजपा प्रत्याशी कलेक्टोरेट में अपना नामांकन दाखिल करेंगे। वहीं लालबाग मैदान में आयोजित होने वाली आमसभा को भी संबोधित करेंगे।

बसपा ने जारी की प्रत्याशियों की तीसरी लिस्ट, 4 प्रत्याशी को उतारा चुनावी मैदान में

रायपुर । छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 के लिए बहुजन समाज पार्टी ने अपने प्रत्याशियों की तीसरी सूची जारी कर दी है। पार्टी ने तीसरी सूची में चार उम्मीदवारों के नामों की घोषणा की है। बीएसपी ने पहली सूची में 9, दूसरी में 17 और तीसरी सूची में 4 प्रत्याशियों की नाम को घोषणा की है। पार्टी ने कुल 30 उम्मीदवारों को सियासी रण में उतार चुकी है। बीएसपी की तीसरी लिस्ट में मुंगेली- समारू भास्कर, बिलासपुर- श्रद्धा सैमसन, आरंग- एड. संतोष मारकंडे, अहिवारा- इंदर पूर्णिमा लहरे है।

चुनरी यात्रा 22 को, महिला शिवसैनिक चढ़ाएंगी माँ महामाया को चुनरी

रायपुर। छत्तीसगढ़ शिवसेना उद्धव बाला साहब ठाकरे के द्वारा नवरात्रि के शुभ अवसर पर 22 अक्टूबर को संध्या 5 विवेकानंद आश्रम तिहारा से महामाया मंदिर तक चुनरी यात्रा निकाली जाएगी। यह यात्रा पिछले वर्षों से छत्तीसगढ़ शिवसेना उद्धव बाला साहब ठाकरे के द्वारा निकाली जा रही है। महिला प्रदेश अध्यक्ष ज्योति सिंह ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि पिछले 15 वर्षों से महिला सेना के द्वारा नवरात्र के अवसर पर माँ महामाया को चुनरी चढ़ाया जा रहा है। चूंकि इस समय प्रदेश में आचार संहिता लागू है इसलिए जिला प्रशासन से विशेष अनुमति लेकर 22 अक्टूबर को संध्या 5 बजे विवेकानंद आश्रम से चुनरी यात्रा प्रारंभ होगी जो आमापारा, लाखेनगर, सारथी चौक, लीली चौक, पुरानी बस्ती होते हुए महामाया मंदिर पहुंचेगी जहां माँ महामाया को चुनरी भेंट स्वरुप महिला शिवसैनिकों के द्वारा चढ़ाई जाएगी और माँ महामाया से प्रदेश की खुशहाली और सुख-समृद्धि के लिए दुआएं मांगेंगे।

हिन्द स्पोर्टिंग मैदान में लगेगा 130 फटाका दुकानें

रायपुर। लाखेनगर स्थित हिन्द स्पोर्टिंग मैदान के रिक्त स्थान पर दशहरा और दीपाली त्यौहार को देखते हुए 130 अस्थाई फटाका दुकानें लगाने का निर्णय रायपुर नगर पालिक निगम प्रशासन द्वारा लिया गया है। उक्त जानकारी जोन क्रमांक 5 के जोन कमिश्नर सुशील कुमार चौधरी ने दी। उन्होंने बताया कि जिन फटाका व्यवसायियों का लाइसेंस नवीनीकरण हो गया है, वे फटाका व्यवसायी अस्थाई फटाका दुकान लगाने के लिए 10 बाई 10 वर्गफुट आकार की प्रति दुकान हेतु निर्धारित 8047 रूपये प्लस 18 प्रतिशत जीएसटी फीस एवं लाइसेंस फीस 630 रूपये नियत 19 अक्टूबर 2023 को शाम 5 बजे तक नगर पालिक निगम रायपुर के जोन क्रमांक 5 के जोन कार्यालय के राजस्व विभाग में जमा करवा सकते है। 20 अक्टूबर को दोपहर 3 बजे अस्थाई फटाका दुकानों का आबंटन लाटरी पद्धति से लेआउट में दर्शाये अनुसार किया जायेगा। चौधरी ने बताया कि नगर निगम द्वारा अस्थाई फटाका दुकानों के लिए पेयजल, चलित शौचालय, साफ सफाई की सुविधाएं नियमानुसार उपलब्ध करवायी जायेंगी।

37वें नेशनल गेम्स के लिए तीरंदाजी संघ ने घोषित किए तकनीकी अधिकार

रायपुर। भारतीय तीरंदाजी संघ ने 29 से 6 नवंबर तक गोवा आयोजित होने वाले नेशनल गेम्स के लिए तकनीकी अधिकारियों की 36 सदस्यी टीम का गठन किया है जिसके अध्यक्ष पश्चिम बंगाल के रुपेश कर को बनाया गया है। वहीं अपीलीय जूरी अधिकारी में छत्तीसगढ़ तीरंदाजी संघ के अध्यक्ष कैलाश मुरारका को जगह दी गई है। इसके अलावा उनके साथ मध्यप्रदेश से डी.के. विद्यार्थी, रूपक देबरॉय त्रिपुरा, डॉ. केबी गुरुंग सिक्किम व आंध्रप्रदेश के चेरुकुर्ट सत्यनारायण शामिल है। प्रतियोगिता के प्रबंधक चेतन कावलेकर होंगे।

अपराध किया, तो खैर नहीं, रायपुर पुलिस का एक्शन

रायपुर। छत्तीसगढ़ में बढ़ते अपराध को देखते हुए पुलिस एक्शन मोड़ पर हैं। पूरे प्रदेश में अपराधिक मामला, नशाखोरी और मारपीट जैसे घटनाओं को अंजाम देने वाले बदमाशों की खैर नहीं है। इसी क्रम पुलिस ने रायपुर स्थित कोतवाली थाना क्षेत्रांतर्गत 9 किलो से अधिक गांजा के साथ एक अंतर्राज्यीय आरोपी को गिरफ्तार किया है। जब्त गांजा की कीमत 1 लाख रुपए आंकी गई है। कोतवाली थाने क्षेत्र में एक व्यक्ति अपने पास गांजा रखकर उसे बेचने के फिराक में ग्राहक की तलाश कर रहा था। इसकी सूचना मिलने पर कोतवाली थाना पुलिस ने मुखबिर लगाए। इसके साथ ही टीम बनाकर आरोपी की तलाश में जुट गए।

छत्तीसगढ़ में फूट डालो और राज करो नहीं चलेगा, कांग्रेस की दूसरी सूची जल्द

■ भूपेश बघेल का शाह पर हमला

रायपुर। छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल सोमवार रात को दिल्ली रवाना हुए। दिल्ली जाने से पहले रायपुर एयरपोर्ट पर उन्होंने मीडिया से बात की। बिरनपुर मामले को लेकर सीएम बघेल ने कहा कि जो घटना घटी, उस पर कार्रवाई हो चुकी है। आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। कोर्ट में चालान प्रस्तुत कर दिया गया है। उनके मुआवजे की घोषणा हो चुकी है। छत्तीसगढ़ में उनके पास कोई मुद्दा बचा नहीं है। ना किसानों का मुद्दा है ना ही आदिवासियों का मुद्दा है ना हीं युवाओं का मुद्दा है तो इसलिए बिरनपुर मामले को मुद्दा बना रहे हैं, इसमें उनको पीएचडी हासिल किए हैं।

बघेल ने शाह के सांप्रदायिकता और उल्टा लटकाने वाले बयान पर जमकर हमला बोला। सीएम ने कहा- वह सरकार को धमकी दे रहे हैं। इसके अलावा उन्हें कुछ आता नहीं है। इस सब चीजों में उनको पीएचडी हासिल है। बघेल ने आगे कहा कि 2018 में जब छत्तीसगढ़ में डबल इंजन की सरकार थी तब 40 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करते थे। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार 40 लाख लोग गरीबी रेखा से बाहर आ गए हैं।

भूपेश बघेल ने कहा ये छत्तीसगढ़ है। यहां भाईचारा प्रेम की भाषा चलती है। यहां डिवाइड एंड रूल की योजना नहीं चलेगी। अमित शाह चाह रहे हैं कि छत्तीसगढ़ कैसे भी करके अडानी को मिल जाए। यह सारी कोशिश ही उन्हीं के लिए है लेकिन वे अपने इस मनसूबे में कभी सफल नहीं होंगे।

शाह पर भड़काऊ भाषण देने का आरोप, चुनाव आयोग से मामला दर्ज करने की अपील

कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ में भुनेश्वर साहू की हत्या के संबंध में गृह मंत्री अमित शाह के भड़काऊ बयान पर कड़ी आपत्ति जताई। कांग्रेस ने चुनाव आयोग से उनके खिलाफ मामला दर्ज करने की अपील की। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने आरोप लगाया कि छत्तीसगढ़ में आदर्श आचार संहिता लागू है। ऐसे समय में इस तरह के बयान देना गलत है। इस पर चुनाव आयोग को कार्रवाई करनी चाहिए। रमेश ने कहा कि अगर आयोग कार्रवाई करने में विफल रहता है, तो भाजपा छत्तीसगढ़ में अपने चुनाव अभियान में सांप्रदायिकता फैलाने से बाज नहीं आएगी।

सोमवार को राजनांदगांव में भाजपा प्रत्याशी और पूर्व सीएम रमन सिंह का नामांकन था। नामांकन से पहले राजनांदगांव परिवर्तन संकल्प महासभा रखी गई, जिसमें शामिल होने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पहुंचे। शाह ने यहां कहा कि भूपेश बघेल सरकार ने छत्तीसगढ़ के बेटे भुनेश्वर साहू को पीट-पीट कर मार डाला। भारतीय जनता पार्टी ने साहू के हत्यारों को न्याय के कटघरे में लाने के लिए उनके पिता ईश्वर साहू को चुनाव में उतारा।

हमर राज पार्टी ने घोषित किए 19 प्रत्याशियों की पहली सूची

रायपुर। हमर राज पार्टी ने 19 प्रत्याशियों की पहली सूची जारी कर दी है जिसमें भानुप्रतापुर से पूर्व आईपीएस अकबर राम कोर्राम को दोबारा उतारा बनाया गया है। वहीं मंत्री मोहन मरकाम के खिलाफ कोंडागांव से नकुराम नेताम को मैदान में उतारा है। हमर राज पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष बीएस रावटे ने बताया कि आदिवासी क्षेत्रों का विकास आदिवासियों के अनुरूप नहीं हो पाया इसलिए इस बार चुनाव मैदान उतरे हैं और पहली सूची में 19 प्रत्याशियों को चुनावी मैदान में उतार रहे है।

जारी सूची के अनुसार प्रतापपुर से श्रीमती गीता सोन्हा, सामरी से परसुराम भगत, लुंड्रा से अनुक प्रताप सिंह टेकाम, खरसिया से भवानी सिंह सिदार, रामपुर से कन्हैया आनंद कंवर, बिल्हा से शिव नारायण ध्रुव, मस्तूरी से सुख राम खूंटे, सरायपाली से बिरितिया चौहान, बसना से जगदीश सिदार, कसडोल से सुश्री परमेश्वरी पैकरा, संजारी बालोद से विनोद कुमार नागवंशी, डोंगरगांव से छत्तर राम चंद्रवंशी (छत्रपाल), खुज्जी से श्रीमती ललिता पैकरा, मोहला मानपुर से युवराज नेताम, भानुप्रतापपुर से अकबर राम कोर्राम, कोंडागांव से पनकु राम नेताम, नारायणपुर से राम लाल उसेंडी, बस्तर से लखेश्वर बघेल तथा बीजापुर से अशोक तलांडी शामिल है।

भाजपा प्रत्याशियों के खिलाफ कार्यकर्ता राशन-पानी लेकर जता रहे विरोध : कांग्रेस

रायपुर। भाजपा के घोषित प्रत्याशियों के खिलाफ भाजपा के कार्यकर्ता और नेता सड़कों पर प्रदर्शन कर रहे हैं, भाजपा कार्यालय के आगे टेंट लगाकर राशन-पानी के साथ विरोध जाता रहे। भाजपा कार्यकर्ताओं और नेताओं का यह विरोध मोदी, शाह, रमन सिंह के मनमानी के खिलाफ है। भाजपा की अनुशासन की ढोल फट गई है अब भाजपा के स्थानीय नेता कार्यकर्ताओं का सामना करने के बजाय मुंह छिपा कर घूम रहे हैं। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि भाजपा के घोषित 85 प्रत्याशी को भाजपा के कार्यकर्ता और नेता ही स्वीकार नही कर रहे है, जनता दूर की बात है। भाजपा में मची भगदड़ और मारामारी सड़कों पर दिख रही है, असंतोष झलक रहा है, भाजपा में झंडा उठाने वाले कार्यकर्ता भी नदारत है।

ठाकुर ने कहा कि 15 साल के कुशासन और भ्रष्टाचार कमीशन खोरी के लिए जाने जाने वाले चेहरों को भाजपा ने प्रत्याशी बनाकर भाजपा के कार्यकर्ताओं के आक्रोश को हवा दिया है 2018 में जिसे जनता ने खारिज कर दिया उसे पुनः प्रत्याशी बनाकर भाजपा ने जनता को भी चिढ़ाया है। भाजपा के सांसद जो सांसद होने का दायित्व निर्वहन नहीं कर पाए जनता के सुख-दुख में खड़ा नहीं हुए खोटा सिक्का साबित हुए हैं उन्हें टिकट देकर भाजपा ने यह बता दिया है कि भाजपा के पास प्रत्याशी नहीं है वही निष्क्रिय कमीशनखोर को भ्रष्ट चेहरा ही भाजपा की जमा पूंजी है।

कांग्रेस ने चुनाव संचालन के लिए वार्ड प्रभारी-सह प्रभारी नियुक्त किए

जगदलपुर। शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष सुशील मौर्य ने जगदलपुर नगरीय निकाय क्षेत्र के सभी 48 वार्डों में प्रभारियों और सह प्रभारियों की नियुक्ति की है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज की अनुशंसा पर तथा जिला प्रभारी शकील रिजवी व विधानसभा क्षेत्र प्रभारी फतेह सिंह परिहार की सहमति से शहर कांग्रेस अध्यक्ष सुशील मौर्य ने चुनाव कार्य संचालन के लिए हर वार्ड में एक प्रभारी और एक सह प्रभारी नियुक्त किए हैं। शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सुशील मौर्य ने सभी प्रभारियों और सह प्रभारियों से कांग्रेस की चुनावी गतिविधियों में सक्रिय योगदान देने हेतु निर्देशित किया है।

सरपंच का चुनाव कांग्रेस प्रत्याशी यहां हार चुकी, फिर मिलेगी मात : विक्रम उसेंडी

कांकेर। छत्तीसगढ़ में पहले फेज के लिए 13 अक्टूबर से नामांकन प्रक्रिया शुरू हो गई है। आज नामंकन प्रक्रिया का पांचवा दिन है। सभी राजनीतिक दलों के उम्मीदवार अपना नामांकन भरने में जुटे हुए है। अंतागढ़ विधानसभा में मौजूदा विधायक अनूप नाग का टिकट काटकर कांग्रेस ने नए चेहरे रूपसिंह पोटाई को उम्मीदवार बनाया है। इसे लेकर भाजपा प्रत्याशी विक्रम उसेंडी ने कहा, वह एक सरपंच थे और पिछला सरपंच चुनाव हार गए थे। जो मौजूदा विधायक थे वह भी कांग्रेस के सर्वे में पिछड़ रहे थे। लेकिन फिर भी मैं किसी भी उम्मीदवार को कमजोर नहीं आंक रहा हूं।

विक्रम उसेंडी ने कहा कांग्रेस के 2018 से लेकर 2023 तक पांच साल के शासन काल में अंतागढ़ क्षेत्र में कोई भी विकास कार्य नहीं हुआ है। जो सड़कें है, वे उखड़ गई है। सड़कों की मरम्मत नहीं हो रही है। ना कोई प्राथमिक शाला खोले गए हैं, ना मीडिल स्कूल खोले गए और न ही आश्रम खोले गए हैं। यह सब क्षेत्र की जनता देख रही है।

विक्रम उसेंडी ने कहा, अंतागढ़ विधानसभा संवेदनशील क्षेत्र है। अंतागढ़ मुख्यालय की बात करें, तो देश की आजादी के बाद भी वहां महाविद्यालय नहीं था। हमारी सरकार जब थी, तो वहां महाविद्यालय बनवाया, आईटीआई खुलवाया, एसडीएम कार्यालय खुला, एकलव्य आदिवासी आदर्श विद्यालय, कन्या महाविद्यालय खुला। ऐसे तमाम कार्य हमारे शासनकाल में अंतागढ़ मुख्यालय में हुए। पखांजूर में 40 से ज्यादा हाई स्कूल और 30 से ज्यादा हायर सेकेंडरी स्कूल बीजेपी शासन काल में खोले गए। अंतागढ़ में प्रधानमंत्री सड़क योजना के तहत 101 सड़कें बनी हैं। कोयलीबेड़ा विकासखंड में 111 सड़कों का निर्माण हुआ। हमने पिछले 15 सालों के शासनकाल में शिक्षा और स्वास्थ्य सब में काम किया। इन्हीं मुद्दों को लेकर हम जनता के बीच में जाएंगे।

कांकेर जिले में तीन विधानसभा सीटें हैं। जिसमें अन्तागढ़ विधानसभा में हमेशा बीजेपी और कांग्रेस के बीच कांटे की टक्कर रही है। अंतागढ़ विधानसभा पहले नारायणपुर विधानसभा में आता था। यह सीट एसटी वर्ग के लिए आरक्षित सीट है। अंतागढ़ विधानसभा भाजपा का गढ़ रहा है। लेकिन भाजपा के इस गढ़ पर 2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के अनूप नाग ने जीत हासिल की थी। उन्होंने बीजेपी के विक्रम उसेंडी को 13,414 मतों के अंतर से हरा दिया था। अनूप को 57,061 वोट जबकि विक्रम को 43,647 वोट मिले।

टेकारी में महिलाओं ने फिर से तो खौली में युवाओं ने असामाजिक गतिविधियों के खिलाफ मोर्चा सम्हाला

रायपुर। मंदिर हसौद थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम टेकारी में महिलाओं ने असामाजिक गतिविधियों के खिलाफ जहां एक बार फिर मोर्चा सम्हाल लिया है वहीं खरोरा थाना क्षेत्र के ग्राम खौली के युवाओं ने आहूत बैठक में ग्रामीणों का पूरजोर समर्थन मिलने के बाद सक्रियता दिखलाना शुरू कर दी है।

ग्राम टेकारी में वैसे तो ग्रामीणों ने ग्रामीण व्यवस्था के तहत अवैध शराब व गांजा बिक्री पर अंकुश लगा रखा है पर कतिपय असामाजिक तत्व अब भी चोरी छिपे धंधे से बाज नहीं आ रहे हैं। बीते दिनों ग्रामीणों की शिकायत पर पूर्व में सपड़ाये एक कोचिया को रास्ते में थाना अमला द्वारा दबोचने के बाद लिप्त तत्व कुछ दबाव में तो हैं पर अब भी भट्ठी से पीने के नाम पर 2-4 पौव्वा लाकर बेचने से बाज नहीं आ रहे हैं। इसके साथ ही सार्वजनिक स्थानों पर जाम ढलकाने की शिकायत कुछ जाय्दा ही है। पूर्व में चौकसी में सक्रिय महिलाओं के बरसात में खेती के मौसम में व्यस्तता के चलते चौकसी अस्थायी रुप से बंद करने व चौकसी के दौरान कतिपय विध्नसंतोषी तत्वों द्वारा उनके खिलाफ अनर्गल छींटाकशी करने व कुछ न बिगाड़ पाने की चुनौती की शिकायत पर ग्रामीण सभा अध्यक्ष रामनाथ वर्मा, पूर्व अध्यक्ष रामानंद पटेल, हुलास राम वर्मा, भूपेन्द्र शर्मा, सरपंच नंदकुमार यादव, नरेंद्र वर्मा आदि ने महिलाओं को एक बार फिर सक्रिय होने का आग्रह किया व उनका सक्रिय सहयोग का आश्वासन देते हुये मोर्चा पुनः खोलने के लिये राजी किया और उनका उत्साहवर्धन के लिये उनके साथ भ्रमण कर सार्वजनिक स्थल पर शराब पीने वालों से पौव्वा छीन भी फोड़ा। इसके बाद से महिलाये पुनः चौकसी में सक्रिय हो गयी हैं जिसके चलते फिलहाल सार्वजनिक स्थलों मे पीना पिलाना थम गया है।

इधर ग्रामीण व्यवस्था लडखड़ाने से असामाजिक गतिविधियों में लिप्त असामाजिक तत्वों के सक्रिय होने से दिनों-दिन ग्राम के माहौल खराब होते जाने से ग्राम खौली के आक्रोशित युवाओं के एकजुट हो जाने व उसके खिलाफ अभियान चलाने ग्रामीणों से आशीर्वाद मिलने के बाद युवाओं की सक्रियता व थाना अमला द्वारा एक कोचिया को रंगे हाथ पकडने के बाद ऊपरी तौर पर तो अवैध शराब बिक्री थमा सा दिखता है पर ग्रामीण सूत्रों के अनुसार अब भी दो असामाजिक तत्व चोरी छिपे सक्रिय रह शराब बेचने में सक्रिय हैं जिस पर थाना अमला की भी नजर है और उन्हें धर दबोचने मुखबिर लगा रखा है। इधर युवा भी लिप्त असामाजिक तत्वों को समझाईश देने के साथ साथ रोज समय बेसमय ग्राम भ्रमण कर असामाजिक गतिविधियों पर नजर रखे हुये हैं।

रायपुर में पूर्व मंत्री के समर्थकों का प्रदर्शन खत्म क्या भाजपा बदलेगी जशपुर सीट से प्रत्याशी?

रायपुर। जशपुर से भाजपा प्रत्याशी बदलने की मांग को लेकर धरने पर बैठे पूर्व मंत्री के समर्थक और आदिवासियों ने प्रदर्शन खत्म कर दिया है। पूर्व मंत्री के सैंकड़ों समर्थक राशन पानी के साथ रायपुर भाजपा ऑफिस के सामने धरने पर बैठे हुए थे। भाजपा ने जशपुर सीट पर जिला पंचायत की सदस्य रायमुनी भगत को प्रत्याशी बनाया है। अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित सीट पर महिला उम्मीदवार रायमुनि को टिकट देने के बाद से ही उनका विरोध शुरू हो गया। जशपुर के भाजपा कार्यकर्ता और समर्थक पांच बार के पूर्व विधायक गणेश राम भगत को टिकट देने की मांग करने लगे। तीन बसों में सवार होकर पूर्व मंत्री के समर्थक और आदिवासी रायपुर पहुंच गए और भाजपा कार्यालय के सामने नारे बाजी और धरना प्रदर्शन करने लगे। समर्थकों ने प्रत्याशी बदलने की मांग करते हुए गणेश राम भगत को टिकट देने की मांग की। भाजपा ऑफिस के सामने प्रदर्शन के दौरान पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल और पार्टी के प्रदेश महासचिव पवन साय ने प्रदर्शनकारियों को शांत करने की कोशिश भी की लेकिन वे नहीं माने। शनिवार दोपहर बाद से शुरू हुआ प्रदर्शन सोमवार देर रात तक चला। भाजपा संगठन के सकारात्मक आश्वासन के बाद पूर्व मंत्री के समर्थकों ने प्रदर्शन खत्म किया। अब सवाल ये खड़ा हो रहा है कि भाजपा के वरिष्ठ नेताओं ने समर्थकों को शांत कराकर वहां से रवाना तो कर दिया है, लेकिन क्या अब जशपुर सीट पर भाजपा अपना प्रत्याशी बदल देगी? जशपुर मे दूसरे चरण में 17 नवंबर को मतदान होगा। यहां से कांग्रेस के वर्तमान विधायक विनय कुमार भगत है। कांग्रेस ने फिलहाल अभी प्रत्याशी घोषित नहीं किया है।

बैंक से पैसों की लेन-देन पर रहेगी चुनाव आयोग की पैनी नजर

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव को देखते हुए निर्वाचन आयोग ने कई जरूरी निर्देश जारी जारी किए हैं। प्रदेश में चुनाव को शांतिपूर्वक करने के लिए रायपुर कलेक्टर ने बैंकर्स की बैठक ली है। चुनावी समय में बैंक खाताओं में होने वाले संदेहास्पद लेन-देन पर निर्वाचन आयोग की नजर रहेगी। इसके साथ ही ऑनलाइन बैंकिंग, यूपीआई के माध्यम से भी होने वाले लेन-देन पर कड़ी नजर रहेगी।

रायपुर कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. सर्वेश्वर नरेंद्र भूरे ने विधानसभा चुनाव को देखते हुए जिले के बैंकिंग संस्थाओं की बैठक ली है। इस दौरान कलेक्टर ने कहा कि निर्वाचन के दौरान चुनाव प्रत्याशियों का जीरो बैलेंस खाता खोला जाए। चुनाव के समय बैंक खाताओं से होने वाले संदेहास्पद लेन-देन, किसी खाते से अधिक संख्या में पैसे की निकासी और एक ही दिन में अलग-अलग नाम से निकासी की सूचना दी जाए।

उन्होंने कहा कि लेन-देन की सभी रिकॉर्डिंग को सीसीटीवी में सेव किया जाए। इसके साथ ही ऑनलाइन बैंकिंग, यूपीआई के माध्यम से होने वाले लेन-देन की भी निगरानी की जाए। किसी बैंक खाता यूपीआई के माध्यम से लगातार कैश ट्रांजेक्शन किया जा रहा है या किसी बैंक खाता जिस पर काफी समय से लेन-देन ना हुआ हो और उस खाते से ही लेनदेन किया जाता है, तो इसकी सूचना भी दी जाए। कलेक्टर ने बैंकर्स को भारत निर्वाचन आयोग की ओर से जारी दिशा निर्देश का कड़ाई से पालन करने का निर्देश दिए हैं। इस दौरान रायपुर एसएसपी प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार किसी खाते से एक लाख से अधिक का लेन-देन किया जाता है और छोटी-छोटी राशियों के संदेहास्पद लेन-देन, एक ही जगह के एटीएम से बार-बार निकासी होने की स्थिति में कार्रवाई की जाएगी।

इस दौरान बताया गया कि बैंकों के माध्यम से कैश फ्लो की निगरानी के लिए निर्वाचन आयोग की इलेक्शन सीजर मैनेजमेंट सिस्टम एप में सुविधा है। सरकारी प्राइवेट बैंकों का सभी विवरण ऑनलाइन पोर्टल में एंट्री करना अनिवार्य है। बैंकों की ओर से पैसों की लेनदेन करने के लिए ऑनलाइन पोर्टल में डीएलबीसी लॉगिन के माध्यम से प्रोफाइल बनाकर लॉगिन करना पड़ेगा। इसकी पूरी जानकारी भी एंट्री करना पड़ेगा।

पहले चरण में चुनाव के लिए प्रत्याशियों का आवेदन शुरू

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव को लेकर प्रत्याशियों की ओर नामांकन दाखिल करने का सिलसिला शुरू हो गया है। पहले चरण में होने वाले 20 विधानसभाओं के लिए दूसरे दिन छह प्रत्याशियों ने कुल सात नामांकन पत्र दाखिल किए हैं। पहले दिन किसी भी प्रत्याशी ने नामांकन दाखिल नहीं किया था। वहीं दूसरे दिन अलग-अलग विधानसभा से कुल सात नामांकन पत्र दाखिल किए गए हैं।

दूसरे चरण के लिए प्रत्याशियों ने दूसरे दिन नामांकन किया। राजनांदगांव विधानसभा क्षेत्र में तीन, डोंगरगांव में दो, भानुप्रतापपुर और डोंगरगढ़ में एक-एक नामांकन पत्र दाखिल किया गया है। प्रथम चरण में बस्तर संभाग की 12 निर्वाचन क्षेत्रों समेत राजनांदगांव, मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी , खैरागढ़-छुईखदान-गंडई और कबीरधाम जिलों के 8 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में नामांकन की प्रक्रिया जारी है।

प्रदेश में दो चरणों में हो रहे निर्वाचन के पहले चरण की 20 सीटों के लिए 20 अक्टूबर तक नामांकन पत्र भरे जाएंगे। इसके बाद 21अक्टूबर को नामांकन पत्रों की जांच की जाएगी। प्रत्याशी 23 अक्टूबर तक अपना नाम वापस ले सकेंगे। वहीं प्रथम चरण के लिए 7 नवंबर को मतदान होगा, लेकिन दोनों ही चरणों के लिए मतगणना 3 दिसंबर को होगी।

वसुंधरा राजे : एक क्षत्रप का हाशिये में जाना

आदिति फडणीस

राजनीति में विरोधाभासों की भरमार है। ऐसा ही एक है-क्या ऐसा भी होता है कि कोई राजनेता बहुत ज्यादा लोकप्रिय हो जाए? राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा नेता वसुंधरा राजे जब अपने आसपास नजर डालती हैं तो यही सवाल वह अपने आप से पूछ सकती हैं। राज्य विधानसभा के आगामी चुनावों के लिए जारी भाजपा उम्मीदवारों की सूची से उनके कई कट्टर समर्थकों के नाम गायब हैं। इनमें पांच बार के विधायक और पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय भैरों सिंह शेखावत के दामाद नरपत सिंह राजवी का नाम भी शामिल है। इसके लिए आपको कोई बहुत दिमाग लगाने की जरूरत नहीं है कि यह ताकतवरों द्वारा वसुंधरा राजे के पर कतरने की साजिश है। लेकिन अगर पार्टी के भीतर आपका समर्थन आधार नहीं है तो आपका राजनीतिक वजन काफी घट जाता है। जिस शख्स ने इसे गलत साबित किया वह थे राज्य की राजनीति में भाजपा के दिग्गज नेता शेखावत जिन्होंने किसी पार्टी में विभाजन किए बगैर आराम से बहुमत जुटा लिया। असल में शेखावत के बहुत कम, यूं कहिए कि कोई विरोधी नहीं थे। इसके बावजूद, उनके नेतृत्व में भाजपा अपने बूते कभी भी 100 का आंकड़ा पार नहीं कर पाई। जरा आंकड़ों को देखिए। शेखावत पहली बार 1977 में मुख्यमंत्री बने। जनता पार्टी को 200 में से 150 सीट मिलीं। 1990 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को 84 सीट मिलीं और वह जनता दल की मदद से सरकार बनाने में कामयाब रही। इसके बाद 1993 में भाजपा को 95 सीट मिलीं लेकिन उसने 124 सीट के साथ गठबंधन सरकार बना ली। इन चुनावों ने शेखावत को अदृश्य मित्रों का महत्त्व बता दिया। पार्टी आलाकमान अनुमान लगाता रहा और साथ ही साथ अपनी राजनीतिक सौदेबाजी का महत्त्व बढ़ाते रहे। वसुंधरा राजे प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यालय-पीएमओ में राज्य मंत्री थीं। उनको 2002 में भाजपा का मुखिया बनाकर जयपुर भेजा गया लेकिन वह वहां जाने की इच्छुक नहीं थीं। उनके नेतृत्व में भाजपा ने वर्ष 2003 के चुनाव में 123 सीट के साथ सत्ता में शानदार वापसी की। वर्ष 2013 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने पार्टी की सीटों की संख्या 163 तक बढ़ा दीं जो किसी भी पैमाने पर जबरदस्त थी। अब भाजपा को किसी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दोस्त की जरूरत नहीं थी। शुरू में सब चीजें अच्छे से चलीं। वह वित्त मंत्री भी थीं। जब उन्होंने अपना पहला बजट पेश किया तो उन्होंने एक शेर पढ़ा- आंधियों से कह दो जरा औकात में रहें, हम परों से नहीं हौसलों से उड़ा करते हैं। यह वसुंधरा ही कर सकती थीं। जब उन्होंने सत्ता संभाली तो राजस्थान का राजकोषीय घाटा 6.6 प्रतिशत (वर्ष 2003-04) था। वर्ष 2007-08 में यह घटकर 1.75 फीसदी पर आ गया। उन्होंने सार्वजनिक सेवाओं तक डिजिटल पहुंच के लिए कार्यक्रम शुरू किया। जापानी निवेश के जरिये बुनियादी ढांचे को मजबूत किया गया। भिवाड़ी में वाहन विनिर्माण क्षेत्र बनाया गया जहां होंडा कार्स ने अपना संयंत्र लगाया। दिल्ली-मुंबई बुनियादी ढांचा गलियारे ने सड़क ढांचे में पूरी तरह सुधार को रफ्तार दी। तब तक वसुंधरा में अपनी आलोचनाओं को नजरअंदाज करने का विश्वास आ गया था। लोग उनकी आलोचना करते थे, पर उनके काम की नहीं। पुराने मित्र और सलाहकार दिवंगत जसवंत सिंह ने सलाह के संदेश भेजे। लेकिन वह भी तब फंस गए जब 2007 में राज्य सरकार ने उनके और नौ अन्य लोगों के खिलाफ नारकोटिक्स, ड्रग्स और साइकोट्रॉपिक सबस्टैंसेज ऐक्ट में मामला दर्ज कर लिया। यह मामला एक समारोह में अफीम के कथित इस्तेमाल के आरोप में दर्ज किया गया था। लेकिन जब दूसरी पारी शुरू हुई तो गंभीर समस्याएं उभरने लगीं। इनमें से एक ललित मोदी नाम की थी। दूसरी भ्रष्टाचार थी। तीसरी विधायकों से जुड़ी थी कि मुख्यमंत्री तक उनकी पहुंच ही नहीं है। ये सब समस्याएं उनके गंभीर सुधारों के काम पर भारी पड़ने लगीं। ये सुधार थे-श्रम कानूनों में संशोधन, राजस्थान में निवेश के लिए निजी क्षेत्र को आमंत्रण, बिजली क्षेत्र में सुधार, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा से जुड़ी भामाशाह जैसी योजनाएं और दूसरे कई कार्यक्रम। और यह है विरोधाभास। वर्ष 2018 में वसुंधरा राजे अपने प्रदर्शन के लिहाज से ऊंचाइयों पर थीं। समूचे राजस्थान में वह आसानी से पहचाना जाने वाला चेहरा थीं। भाजपा के कई विधायक थे पर उनको जानना और सबसे मिलना मुश्किल काम था।

महुआ मोईत्रा : कैश फॉर क्वेशचन ?

अजय सेतिया

1990 के दशक में ब्रिटेन में कैश फॉर क्वेशचन का मामला पहली बार उछला था। गार्जियन अखबार ने खबर छापी थी कि सांसदों के माध्यम से लॉबिंग करने वाली फर्म इयान ग्रीर के मालिक ने कंजर्वेटिव पार्टी के दो सांसदों को सवाल पूछने के बदले मोटी रकम दी थी। रिश्वत देने वाले मोहम्मद अल फयाद ने खुद आरोप लगाया था कि उन्होंने दो मंत्रियों को सवाल पूछने के बदले रिश्वत दी थी। उन्होंने जिन दो मंत्रियों का नाम लिया था, उन दोनों को इस्तीफा देना पड़ा था।

यह 1994 का मामला था, इसी खबर से प्रेरित होकर भारत के एक वेब पोर्टल कोबरा पोस्ट ने 2005 में अपने दो पत्रकारों को भारत में भी सांसदों के स्टिंग आपरेशन में लगा दिया। असल में इस स्टिंग आपरेशन में सांसदों को अपने जाल में फंसाने के लिए कोबरा पोस्ट के पत्रकार किसी कंपनी के प्रतिनिधि बन कर सांसदों से मिल रहे थे, और उन्हें संसद में पूछने के लिए सवाल दे रहे थे। पत्रकार सांसदों को अपनी तरफ से गिफ्ट के तौर पर लिफाफा भी दे रहे थे, जिनमें से कुछ सांसदों ने लिफाफा लेने से इंकार भी किया था। सांसदों को दी गई राशि मात्र 15 हजार रूपए से लेकर अधिकतम 1,10,000 रूपए थी।

कोबरा पोस्ट ने गुप्त कैमरे से लिफाफा लेते हुए सांसदों के वीडियो बना लिए। लोकसभा के 10 और राज्यसभा के एक सांसद का स्टिंग आपरेशन हुआ था, इनमें सिर्फ एक सांसद सत्ताधारी कांग्रेस पार्टी का था, बाकी सब विपक्ष के थे, जिनमें छह भाजपा के थे। कोबरा पोस्ट ने यह स्टिंग आपरेशन आजतक न्यूज चैनल को बेच दिया था, जिसने 12 दिसंबर 2005 को यह स्टिंग आपरेशन अपने चैनल पर टेलीकास्ट किया। उस समय संसद का शीत सत्र चल रहा था, जहां जम कर हंगामा हुआ।

तत्कालीन लोकसभा स्पीकर सोमनाथ चटर्जी ने चंडीगढ़ के कांग्रेसी सांसद पवन बंसल की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय कमेटी बनाकर उन सभी सांसदों को निलंबित कर दिया। राज्यसभा के सभापति ने भी वही तरीका अपनाया। पवन बंसल कमेटी की सिफारिश पर 23 दिसंबर को इन सभी 11 सांसदों की सदस्यता खत्म कर दी गई थी। इन सभी 11 सांसदों पर भ्रष्टाचार निरोधक क़ानून में मुकद्दमा अभी भी अदालत में लंबित है।

अब 2023 में भाजपा के सांसद निशिकांत दुबे ने आरोप लगाया है कि तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोईत्रा ने अडानी ग्रुप पर सवाल पूछने के लिए उनके एक प्रतिद्विन्दी दर्शन हीरानन्दानी से भारी मात्रा में कैश लिया है। दुबे ने लोकसभा स्पीकर को चिट्ठी लिख कर महुआ मोईत्रा की लोकसभा सदस्यता तुरंत निलंबित करके जांच करवाने की मांग की है। छह नुक्तों पर आधारित तीन पेज की लंबी चिट्ठी में दुबे ने महुआ मोईत्रा के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 120 ए के अंतर्गत आपराधिक मामला दर्ज करवाने की मांग भी की है।

दुबे के महुआ मोईत्रा पर लगाए गए आरोप उन्हें मिली एक वकील जय अनंत देहादराई की चिट्ठी पर आधारित है, हालांकि चिट्ठी में महुआ मोईत्रा को मिली किसी राशि का जिक्र नहीं किया गया है, लेकिन मीडिया में छपी खबरों में दो करोड़ रूपए, चुनाव के लिए 75 लाख रूपए और महंगा आईफोन गिफ्ट लेने का भी जिक्र किया गया है। महुआ मोईत्रा और दर्शन हीरानन्दानी ने इन सभी आरोपों से इंकार किया है। लोकसभा स्पीकर को भेजी गई शिकायत में दुबे ने कहा है कि महुआ मोईत्रा ने कुल 61 सवाल पूछे हैं, इनमें से 50 सवाल दर्शन हीरानन्दानी और उनकी कंपनी के व्यापारिक हितों से जुड़े हैं। ज्यादातर सवाल कहीं न कहीं अडानी ग्रुप से संबंधित रहे है, क्योंकि कुछ बड़े टेंडर में दर्शन हीरानन्दानी और अडानी ग्रुप बीडिंग में प्रतिद्वन्दी रहे हैं। दुबे ने महुआ मोईत्रा की ओर से पूछे गए सवालों और उनकी ओर से अडानी को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह पर संसद के भीतर आरोप लगाए जाने को भी आपस में जोड़ा है। दुबे ने यह चिट्ठी 15 अक्टूबर को लिखी है, उसी दिन शाम को महुआ मोईत्रा ने एक्स पर लगातार कई ट्विट किए, जिनमें अडानी और दुबे पर कई तरह के कटाक्ष किए गए थे।

लोकसभा स्पीकर को लिखी गई निशिकांत दुबे की चिट्ठी तुरंत लीक भी हो गई थी, इसलिए यह खबर 2005 के कैश फॉर क्वेशचन वाले मामले की तरह ही देश की सबसे बड़ी खबर बन गई। पहले तो महुआ मोईत्रा ने किसी भी जांच का सामना करने की बात कही, लेकिन जब उन्हें लगा कि उन पर करोड़ों रूपए की रिश्वत लेने, और गिफ्ट लेने के आरोपों पर लोग विश्वास कर रहे हैं, तो अगले ही दिन उन्होंने निशिकांत दूबे और इस खबर को प्रसारित करने वाले 18 मीडिया ग्रुपों को कानूनी नोटिस भेज दिया। महुआ ने कानूनी नोटिस में निशिकांत दुबे के सभी आरोपों से तो इंकार किया ही है, नोटिस में यह भी लिखा है कि क्योंकि कुछ दिन पहले उन्होंने निशिकांत दूबे की फर्जी शैक्षणिक डिग्री का मामला उठाया था, इसीलिए वह जय अनंत देहादराई के आरोपों के आधार पर उन पर झूठे आरोप लगा रहे हैं। मोईत्रा के लीगल नोटिस में कुछ निजी बातें भी लिखी गई हैं, जैसे निशिकांत दूबे को चिट्ठी लिखने वाला वकील जय अनंत देहादराई पहले महुआ मोईत्रा का निकट मित्र था, लेकिन जब यह दोस्ती टूट गई तो जय अनंत देहादराई ने महुआ मोईत्रा को कई तरह के मेसेज भेजे, जिनमें कुछ अश्लील मेसेज भी थे। एक बार वह उनके सरकारी आवास में घुस गया था, जहां से वह एक कुत्ता भी चुरा कर ले गया। जिसे बाद में पुलिस में शिकायत दर्ज करवाने के बाद उसने लौटा दिया था।

लीगल नोटिस के मुताबिक़ जिस वकील की चिट्ठी पर भरोसा करके निशिकांत दूबे ने लोकसभा स्पीकर को चिट्ठी लिखी है, उसके खिलाफ महुआ मोईत्रा पुलिस रिपोर्ट दर्ज करवा चुकी है। हालांकि पिछले महीने ही महुआ मोईत्रा ने उसके खिलाफ दायर शिकायत वापस ले ली थी। अब बात यह सामने आ रही है कि वकील जय अनंत देहादराई ने पहले मीडिया में उनके खिलाफ खबर छपवाने की कोशिश की थी, लेकिन किसी भी मीडिया ने उस पर विश्वास नहीं किया, तो उसने निशिकांत दूबे को उनके खिलाफ इस्तेमाल किया है। अब यह मामला कुछ ओर बन गया लगता है।

महुआ मोईत्रा ने अपने कानूनी नोटिस के जरिए निशिकांत दुबे से लोकसभा स्पीकर को लिखी चिट्ठी वापस लेने और सार्वजनिक तौर पर माफी मांगने की मांग की है। निशिकांत दुबे ने क्योंकि खुद मीडिया के सामने कुछ नहीं कहा है, जो कुछ कहा भी है, वह ऑफ द रिकार्ड कहा है, इसलिए लोकसभा स्पीकर को लिखी चिट्ठी पर उनके खिलाफ कोई कानूनी मामला बनने की संभावना तो नहीं है। लेकिन जैसा कि कानूनी नोटिस में कहा गया है कि महुआ मोईत्रा के पुराने मित्र जय अनंत देहादराई ने उन्हें विद्वेषपूर्ण गलत जानकारियाँ देकर लोकसभा स्पीकर को चिट्ठी लिखवाई है। अगर यही बात साबित होती है और निशीकांत दुबे अपने आरोप साबित नहीं कर पाते, तो खुद उनके लिए मुश्किल खड़ी होगी। अगर निशिकांत दूबे की मांग के अनुसार ही लोकसभा स्पीकर अनुशासन समिति या विशेष जांच समिति को मामला सौंपते हैं, तो दूबे को समिति के सामने अपने आरोप साबित करने पड़ेंगे। किसी सांसद के बारे में अनाप शनाप आरोप लगा कर उसकी छवि खराब करने की कोशिश में उन्हें सदन में फटकार भी लग सकती है, या उलटे उनपर कार्रवाई हो सकती है। महुआ मोईत्रा वैसे भी बहुत आक्रामक मानी जाती हैं, इसलिए उन्होंने कानूनी नोटिस जारी करने में बिलकुल देरी नहीं की। अलबत्ता उससे पहले लोकसभा स्पीकर पर भी टिप्पणी की कि पहले वह भाजपा सदस्यों के खिलाफ लंबित शिकायतों का निपटारा करें, उसके बाद वह अपने खिलाफ दायर की गई शिकायत का सामना करने को तैयार हैं। उन्होंने ईडी को भी धमकी दी कि उनके दरवाजे पर आने से पहले अडानी के कोयला घोटाले पर एफआईआर दर्ज करे। एक्स पर उन्होंने लिखा कि अडानी ग्रुप या तो मुझे चुप कराने या मुझे नीचा दिखाने के लिए संदिग्ध संघियों और फर्जी डिग्री वालों की ओर से प्रसारित संदिग्ध डोजियर पर भरोसा कर रहा है, तो मैं उन्हे सलाह दूंगी कि वह अपने वकीलों का जरा अक्लमंदी से इस्तेमाल करें।

असल में कुछ दिन पहले ही महुआ मोईत्रा ने निशिकांत की शैक्षणिक डिग्री पर सवाल उठाया था। जिस दिन निशिकांत दुबे की चिट्ठी लीक हुई, ठीक उसी समय महुआ मोईत्रा के कांग्रेस सांसद थरूर के साथ जाम से जाम टकराते हुए कई वीडियो भी वायरल हो गए, जिस पर आग बबूला होते हुए महुआ मोईत्रा ने आरएसएस और भाजपा पर आरोप लगाया है कि वे उनके निजी फोटो लीक कर रहे हैं। निशिकांत दुबे और मीडिया घरानों को भेजे गए कानूनी नोटिस में इन फोटोज और वीडियोज का भी जिक्र है।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

महोपनिषद् (भाग-18)

गतांक से आगे...

सर्वरूप परब्रह्म परमेश्वर को ज्ञान के नेत्रों से देखा जा सकता है, जिसके पास ज्ञान के नेत्रों का अभाव है, वह अविनाशी ब्रह्म को ठीक वैसे ही नहीं देख सकता, जिस प्रकार अंधे व्यक्ति को प्रकाशमान सूर्य (सवितादेवता) के दर्शन नहीं होते। वह ब्रह्म प्रज्ञान स्वरूप है। सत्य ही प्रज्ञान का लक्षण है। अत: ब्रह्म के परिज्ञान से ही मर्त्य जीव अमरत्व को प्राप्त करता है। उस कार्य- कारण स्वरूप ब्रह्म का साक्षात्कार होते ही मनुष्य के हृदय की गाँठें खुल जाती हैं, सभी संशय समाप्त हो जाते हैं और समस्त कर्म (प्रारब्धादि) क्षीणता को प्राप्त हो जाते हैं।

हे पुत्र निदाघ! अनात्म भाव को त्यागकर, सांसारिक स्थिति में विकाररहित होकर अनन्य निष्ठापूर्वक अन्त में प्रतिष्ठित होकर आत्म-चैतन्य में ही रमण करते रहो। जिस प्रकार मरुभूमि में भ्रम से दिखाई देने वाला जल मरुस्थल मात्र ही रहता है, उसी प्रकार जाग्रत, स्वप्न एवं सुषुप्तावस्था से युक्त यह सम्पूर्ण जगत् आत्मविचार से ही चिन्मय जानना चाहिए। जो लक्ष्य एवं अलक्ष्य बुद्धि का परित्याग करके केवल आत्मनिष्ठ हो जाता है, वही श्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानी एवं स्वयं साक्षात् शिवरूप है। इस जगत् का अधिष्ठान अद्वितीय है, वाणी एवं मन की पहुँच से परे है। नित्य विभु, सर्वगत, सूक्ष्मातिसूक्ष्म एवं अव्यय स्वरूप से युक्त है। यह विश्व सर्वशक्तिमान् भगवान् महाशिव का मनोविलास मात्र ही है। संयम (धारणा, ध्यान, समाधि) एवं असंयम (सहज ज्ञान) के द्वारा ये सभी सांसारिक प्रपञ्च शान्ति को प्राप्त होते हैं।

हे निदाघ मुने। मैं तुम्हारे मन में प्रादुर्भूत होते हुए विकारों की चिकित्सा के लिए उपाय बतलाता हूँ। जिन-जिन इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति के लिए मन चंचल हो, उन पदार्थों का त्याग ही मानव के मोक्ष प्राप्ति का साधन है। जिसके लिए अभिलषित सांसारिक पदार्थों के त्याग की भावना, एकान्त प्रिय होना एवं आत्मा की अधीनता दुष्कर हो जाती है, ऐसे उस मनुष्य रूपी कीट (कीड़े) को धिक्कार है। अपनी इच्छित वस्तुओं एवं पदार्थों का प्रयत्नपूर्वक परित्याग करना ही वास्तविक मन की शान्ति का श्रेष्ठ मार्ग है। इसके अतिरिक्त कोई अन्य दूसरी गति नहीं है। सङ्कल्पशून्यता रूपी शस्त्रास्त्रों से जब इस चित्त का कर्तन कर दिया जाता है, तब सर्वस्वरूप सर्वान्तर्यामी, शान्तरूप ब्रह्म की उपलब्धि होती है। इसलिए प्रपञ्च की भावना से रहित होकर प्रज्ञासम्पन्न होकर तथा चित्त को नियन्त्रित करके चिन्मात्र में प्रतिष्ठित हो जाओ।

श्रेष्ठ पौरुष रूप अभ्यास एवं वैराग्य का आश्रय प्राप्त करके तथा चित्त को अचित्तावस्था में ले जाकर आकाश रूपी हृदय में चिन्तन करते हुए बराबर चैतन्य तत्त्व में लगे हुए चित्त रूपी चक्र की तीक्ष्ण धार से मन का दमन कर देना चाहिए; ऐसा करते ही तुम्हारी सभी शंकायें निर्मूल हो जायेंगी तथा कामादि रूप शत्रु, बन्धन में बाँध सकेंगे।

क्रमश: ...

गजनवी को धूल चटाने वाली रानी दिद्दा

अभिनय आकाश ।

रानी दिद्दा (958-1003 सीई) का शासन कश्मीर में महिला शक्ति के शिखर के प्रतिनिधित्व को दर्शाती है। उन्हें कश्मीर की कैथरीन कहा जाता था। पैर की विकलांगता और रूढ़िवादी दौर में महिला होने के बावजूद, दिद्दा चार दशकों से अधिक समय तक कश्मीर पर मजबूत शासन करने में सक्षम थीं। दिद्दा एक बेहद विवादास्पद शासक रहीं, जिनकी पहचान करना मुश्किल है। अर्थशास्त्र के सिद्धांतों को शांत भाव से लागू करने के उनके जबरदस्त राजनीतिक अस्तित्व कौशल के बारे में सभी एकमत हैं। शासन करने की उसकी क्षमता, योग्य लेफ्टिनेंटों का चयन और विरासत में मिले टूटे हुए राज्य में स्थिरता की उपलब्धि। उनके बारे में एक कहानी ये भी प्रचलित है कि आसपास के राजा उन्हें चुड़ैल रानी बुलाते थे। उन्हें भरोसा ही नहीं था कि एक औरत महमूद गजनवी जैसे अक्रांता को भी हरा सकती है। उनके लिए तो ये बस चुड़ैल थी, जिसके पास काला जादू की कला थी।

कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार, दिद्दा (जन्म लगभग 924) लोहारा के राजा सिंहराज की बेटी थी, जिसका राज्य पश्चिमी पंजाब और कश्मीर के बीच व्यापार मार्ग पर पहाड़ों की पीर पांचाल श्रृंखला में स्थित था। उन्होंने 26 साल की उम्र में कश्मीर के राजा क्षेमगुप्त से शादी की और लोहारा और काबुल

के दो राज्यों को एकजुट किया। शासक बनने से पहले भी, दिद्दा का राज्य के मामलों में काफी प्रभाव था, जैसा कि उस युग के सिक्कों से पता चलता है, जिनमें उनका नाम और क्षेमगुप्त दोनों का नाम दर्शाया गया है। जब 958 में शिकार के बाद बुखार के कारण क्षेमगुप्त की मृत्यु हो गई। दिद्दा अपने बेटे अभिमन्यु को गद्दी पर बिठाकर राजमाता बन गई और शासन चलाने लगी।

लोग इससे हरगिज खुश नहीं थे। स्थानीय सरदारों ने कहा कि एक औरत हम पर शासन कैसे कर सकती है। उसका वचन नहीं चल सकता है। दिद्दा ने जवाब दिया कि मेरा वचन ही है मेरा शासन और रानी दिद्दा ने सबसे पहले उन बगावत करने वाले मंत्रियों और सरदारों से छुटकारा पाया। कुछ वक्त के लिए तो स्थिति तनावपूर्ण हो गई और दिद्दा सत्ता खोने के करीब आ गई, लेकिन अन्य प्रभावशाली राजनीतिक खिलाड़ियों की मदद से अपनी स्थिति कायम करने के बाद, दिद्दा ने क्रूरता का परिचय दिया। एक लाइन इन दिनों खूब कही भी जाती है कि पॉवरफुल पीपुल मेक द प्लेसेज पॉवरफुल और ऐसी ही पावरफुल शख्सियत रानी दीद्दा थी। जिन्होंने कश्मीर पर 50 सालों तक राज किया। इन्होंने 35 हजार की सेना को 500 की सेना से 45 मिनट में हरा दिया था। इतिहासकार मानते हैं कि रानी दिद्दा का अपने दुश्मनों को मारने का तरीका बड़ा ही क्रूर था। ऐसा इसलिए कि वो इससे एक मैसेज देती थी कि उनकी रियासत के अंदर घुसने वालों का क्या अंजाम हो सकता है। दिव्यांग होने के बावजूद आज तक वो कभी हारी नहीं। उन्हें कश्मीर की आखिरी रानी होने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने महमूद गजनवी को दो बार हराया। जी हां, आपके ठीक सुना वहीं खूंखार गजनवी जिसके हिन्दुस्तान में प्रवेश करने के बाद विध्वंस हुआ। उसका अपना एक लंबा इतिहास है। लेखक आशीष कौल की किताब दिद्दा- द वारियर क्वीन ऑफ कश्मीर में दावा किया गया कि दिद्दा ने महमूद गजनवी को एक नहीं दो-दो बार हराया। रानी दिद्दा ने अपने अंतिम क्षणों में अपनी गद्दी अपने भाई के बेटे संग्रामराज को सौंप दी और फिर बाद में उनकी मृत्यु हो गई। कल्हड़ उपसंहार में दिद्दा के लिए लिखा गया है- वो लंगड़ी रानी जिससे किसी को एक कदम पार करने की उम्मीद नहीं थी, उसने तमाम विरोधों को ऐसे लांघ डाला जैसे कभी हनुमान ने समुंद्र लांघा था।

क्या यूक्रेन की तरह इजरायल को भी अकेला छोड़ने जा रहा है अमेरिका ?

संतोष पाठक

यह बात सही है कि निर्दोष नागरिकों को मारने की कार्रवाई को कतई जायज नहीं ठहराया जा सकता लेकिन जब एक आतंकी संगठन उन नागरिकों को ढाल की तरह इस्तेमाल कर आतंकी हमला करें तो फिर संयुक्त राष्ट्र को नसीहत देने की बजाय कार्रवाई करना चाहिए। कुख्यात आतंकवादी संगठन हमास के खतरनाक आतंकी हमले के बाद इजरायल ने हमास के खिलाफ जंग का ऐलान कर दिया है। इजरायल हर तरीके से हमास को खत्म करने पर तुला हुआ है। इजरायल की तरफ से की जा रही भीषण जवाबी कार्रवाई के दौरान फिलिस्तीन के कुछ निर्दोष नागरिक भी मारे गए हैं और इसी के साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक बार फिर से मानवाधिकार का मुद्दा गरमाता हुआ नजर आ रहा है। हालांकि, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सोमवार रात गाजा में जारी हिंसा पर लाए गए रूस का प्रस्ताव जिसमें गाजा में आम नागरिकों के खिलाफ हो रही हिंसा की निंदा करते हुए युद्धविराम की मांग की गई थी को खारिज कर दिया गया। रूस द्वारा एक तरह से इजरायल के खिलाफ लाए गए प्रस्ताव को 15 सदस्यों वाली सुरक्षा परिषद में पास होने के लिए 9 वोटों की जरूरत थी लेकिन प्रस्ताव के समर्थन में सिर्फ चार देशों ने ही वोट दिया, वहीं चार देशों ने इसके खिलाफ भी वोट दिया। रूस के प्रस्ताव में आतंकी

संगठन हमास या उसके द्वारा इजरायली नागरिकों पर किए गए बर्बर आतंकी हमलों का कोई जिक्र नहीं था।

दरअसल, गाजा में हमास को खत्म करने के लिए की जा रही इजरायली कार्रवाई को लेकर चीन और रूस के अलावा कई अरब देश तो सवाल उठा ही रहे हैं लेकिन संयुक्त राष्ट्र और विश्व स्वास्थ्य संगठन के बाद अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने भी जिस अंदाज में इजरायल को नसीहत दी है, उससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई सवाल भी खड़े हो रहे हैं। वैसे तो अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन हमास के हमले के खिलाफ इजरायल की जनता के प्रति अपना समर्थन जताने के लिए बुधवार को इजरायल के दौरे पर भी जा रहे हैं। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटोनी ब्लिंकन और अमेरिकी राष्ट्रपति के कार्यालय ने आधिकारिक तौर पर राष्ट्रपति बाइडेन की इजरायल यात्रा की खबर पर मुहर लगा दी है। लेकिन यह हमेशा से ही कहा जाता रहा है कि अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में जैसा दिखता है, वैसा हर बार होता नहीं है। अपने साथियों को अलग-थलग छोड़ने,आतंकी संगठन को नजरअंदाज करने या फिर व्यापारिक फायदे के लिए किसी कुख्यात संगठन या देश का साथ देने के मामले में अमेरिका का ट्रैक रिकॉर्ड हमेशा से ही खराब रहा है।

इसलिए अमेरिका के रुख को समझने के लिए हमें तीन तथ्यों पर गौर जरूर करना चाहिए। पहला- अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन, इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के निमंत्रण पर इजरायल जा रहे हैं। दूसरा- बाइडेन रूस-यूक्रेन की लड़ाई के बीच यूक्रेन जाकर भी रूस को सबक सिखाने की बात कर चुके हैं लेकिन यूक्रेन आज भी रूस जैसी महाशक्ति से अकेले लड़ रहा है और तबाह भी हो रहा है। तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण तथ्य तो यह है कि अमेरिका जैसा देश भी इजरायल को मानवाधिकार का पाठ पढ़ा रहा है। उस इजरायल को जिसके सैंकड़ों नागरिक हमास के आतंकी हमले का शिकार हुए और जिसके 200 से ज्यादा नागरिकों को हमास ने अभी भी बंधक बनाया हुआ है।

अब तक हर कीमत पर इजरायल के साथ खड़े नजर आने वाले अमेरिका के सुर भी इस बार बदले बदले से नजर आ रहे हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने इजरायल को नसीहत देते हुए बयान दिया कि हमास का पूरी तरह से खात्मा होना जरूरी है लेकिन इसके साथ ही फिलिस्तीन राज्य का रास्ता भी साफ होना चाहिए। बाइडेन ने कहा कि इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि इजरायल पर हमास के आतंकी हमलों से फिलिस्तीन के ज्यादातर लोगों को कोई लेना-देना नहीं था लेकिन वे इस हमले के परिणाम को झेल रहे हैं। उन्होंने तो यहां तक उम्मीद जता दी कि इजरायल इस लड़ाई में युद्ध के नियमों के तहत ही कार्रवाई करेगा यानी आतंकी संगठन से लड़ने में भी युद्ध के नियम का पालन ?

यह बात सही है कि निर्दोष नागरिकों को मारने की कार्रवाई को कतई जायज नहीं ठहराया जा सकता लेकिन जब एक आतंकी संगठन उन नागरिकों को ढाल की तरह इस्तेमाल कर आतंकी हमला करें तो फिर संयुक्त राष्ट्र को नसीहत देने की बजाय कार्रवाई करना चाहिए। लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति के बयान के बाद अब इजरायल के लिए यह सोचने वाला मुद्दा तो बन ही गया है कि क्या अपने व्यापारिक हितों या बदल रहे वर्ल्ड आर्डर में अपनी भूमिका को सुरक्षित रखने के स्वार्थ से ग्रस्त अमेरिका उसे भी तो गच्चा देने नहीं जा रहा है। यूक्रेन का ताजा-ताजा उदाहरण तो सबके सामने है ही।

हिन्द स्वराज्य

सत्याग्रह-आत्मबल (भाग-9)

गतांक से आगे...

संतान पैदा करने के लिए ही अपनी स्त्री का संग करने की बात कही गयी है। और सत्याग्रही को संतान पैदा करने की इच्छा नहीं होनी चाहिए। इसलिए संसारी होने पर भी वह ब्रह्मचर्य का पालन कर सकता है। यह बात ज्यादा खोलकर लिखने की जरूरत नहीं। स्त्री का क्या विचार है? यह सब कैसे हो सकता है? ऐसे विचार मन में पैदा होते हैं। फिर भी जिसे महान कार्यों में हिस्सा लेना है, उसे तो ऐसे सवालों का हल ढूँढ़ना ही होगा। जैसे ब्रह्मचर्य की जरूरत है वैसे ही गरीबी को अपनाने की भी जरूरत है। पैसे का लोभ और सत्याग्रह का सेवन-पालन (दोनों साथ-साथ) कभी नहीं चल सकते। लेकिन मेरा मतलब यह नहीं है कि जिसके पास पैसा है वह उसे फेंक दे। फिर भी पैसे के बारे में लापरवाह रहने की जरूरत है। सत्याग्रह का चाहिए। सेवन करते हुए अगर पैसा चला जाय, तो चिन्ता नहीं करनी जो सत्य का सेवन नहीं करता, वह सत्य का बल, सत्य की ताकत कैसे दिखा सकेगा? इसलिए सत्य की तो पूरी-पूरी जरूरत रहेगी ही। बड़े-से-बड़ा नुकसान होने पर भी सत्य को नहीं छोड़ा जा सकता। सत्य के लिए कुछ छिपाने को होता ही नहीं। इसलिए सत्याग्रही के लिए छिपी सेना की जरूरत नहीं होती। जान बचाने के लिए झूठ बोलना चाहिए या नहीं, ऐसा सवाल यहाँ मनमें नहीं उठाना चाहिए। जिसे झूठ का बचाव करना है वही ऐसा बेकार सवाल उठाता है। जिसे सत्य की ही राह लेनी है उसके सामने ऐसे धर्म-संकट कभी आते ही नहीं। ऐसी मुश्किल हालत में आ पड़े तो भी सत्यवादी उसमें से उबर जाता है। अभय के बिना तो सत्याग्रही की गाड़ी एक कदम भी आगे नहीं चल सकती। अभय संपूर्ण और सब बातों के लिए होना चाहिए।

क्रमश: ...

क्या नई विश्व व्यवस्था के लिए अपरिहार्य है विश्वयुद्ध ?

अनुज अग्रवाल

इसराइल पर हमास द्वारा आतंकी हमला करा, रुस व चीन ने अमेरिका व नाटो पर निर्णायक चोट कर ही दी। हालाँकि मंच पर ईरान , तुर्की व कतर खेल खेल रहे हैं किंतु पर्दे के पीछे डोरियाँ रुस-चीन के हाथो में ही हैं।यह सीधा सीधा अमेरिका पर हमला है और अमेरिका इसी रूप में इसको ले भी रहा है क्योंकि इसराइल का जन्म व अस्तित्व अमेरिका पर ही टिका हुआ है।नृशंस, खूँख़ार व घातक इस युद्ध के लंबा और बहुत लंबा चलने के आसार हैं क्योंकि लगभग सभी इस्लामिक कट्टरपंथी गुट व राष्ट्र इससे जुड़ते जा रहे हैं। तेल- गैस की आर्थिक व्यवस्था पर क़ब्ज़े के इस खेल में सदियो से चल रहा इस्लाम बनाम ईसाई- यहूदी संघर्ष भी उभर कर सामने आ गया है, बल्कि इसी को हथियार बनाया है रुस व चीन ने। प्रथम व दूसरे विश्व युद्ध के साथ बनी विश्व व्यवस्था जिसके माध्यम से अमेरिका नाटो की मदद से दुनिया को हाँक रहा है , को बदलने का निर्णायक युद्ध। यूएसएसआर के विघटन एवं चीन में थ्येनआमन नरसंहार के बाद इन दोनों देशों में आयी बाज़ार अर्थव्यवस्था के बाद पिछले दो दशकों में रुस व चीन दोनों फिर से आर्थिक ताक़त बनते गए और क्षेत्रीय सैन्य महाशक्ति भी।

चीन सन् 2008 से ही अमेरिका को पिछाड़ने की कोशिश में है। सन् 2008 की आयी आर्थिक मंदी अमेरिकी व नाटो देशों की अर्थव्यवस्था तोड़ने का चीनी षड्यंत्र ही था तो उसके जवाब में कोरोना वायरस को चीन में छोड़ना व रुस के पुराने साथी यूक्रेन में अपनी कठपुतली सरकार बना रुस को घेरना अमेरिकी षड्यंत्र। किंतु अमेरिकी खेल उल्टे पड़ गए और चीन ने कोरोना वायरस को वुहान से निकलने नहीं दिया उल्टे पूरी दुनिया में फैला दिया तो रुस ने यूक्रेन का ऐसा सर्वनाश किया कि पूरे यूरोप की हालत पतली हो गई और अमेरिकी भी यूक्रेन को सहायता देता देता मंदी का शिकार हो चला। रुस व चीन गठजोड़ हो सकता है आत्मघाती खेल खेल रहे हों किंतु अमेरिका व नाटो देश भी बुरी तरह हाँफ रहे हैं। यूक्रेन पर रुस के आक्रमण के चक्कर में अमेरिका को अफ़ग़ानिस्तान से बीच में ही भागना पड़ा तो हाल ही में फ़्रांस नाइजर को छोड़ भाग निकला क्योंकि यूक्रेन युद्ध में उनके संसाधन

कम पड़ते जा रहे हैं और उस पर अब मध्य पूर्व एशिया का महासँकट। यूक्रेन संकट से कई गुना बड़ा भी और ख़तरनाक भी। फ़िलिस्तीन ङ्क इसराइल विवाद की यह उलझन तेल कूटनीति व अरब देशों से कमजोर पड़ते रिश्तों के बीच अमेरिका को इस क्षेत्र व खेल से बाहर न कर दे। अगर अरब लीग, ओपेक देश, इस्लामिक देश व इस्लामिक जिहादी गुट रुस ङ्क चीन के इस खेल के खिलाड़ी बन इसराइल को मिटाने पर आमादा हो गए तो अपनी साख व अपने प्यादे इसराइल का अस्तित्व बचाने के लिए अमेरिका व नाटो देशों को स्वयं मैदान में कूदना होगा और इसके परिणाम विश्व का दो गुटों में विभाजन व भयंकर व दीर्घकालिक विश्वयुद्ध होगा। ऐसा होना अब लगभग तय हो ही चुका है।आमने ङ्क सामने का घातक हथियारों से लड़े जाने वाला यह युद्ध तब ही ख़त्म होगा जब पुरानी विश्व व्यवस्था बदलने की स्थिति आएगी। शायद ऐसा न भी हो क्योंकि विनाशक हथियारों को इतनी बड़ी खेप दोनों पक्षों के पास है कि वे एक दूसरे का संपूर्ण विनाश न कर बैठें।

महाशक्तियों के इस खेल को कुछ ऐसे समझा जा सकता है- 1) रुस और चीन , अमेरिका व नाटो के पिछले तीस सालों से दुनिया पर चले आ रहे वर्चस्व को तोड़ने पर उतारू हैं। चूँकि रुस के पास तेल और गैस के बड़े भंडार हैं और चीन का कब्जा दुनिया के आधे से अधिक विनिर्माण क्षेत्र पर है इसलिए वे अमेरिका व नाटो के वर्चस्व को तोड़ने का माद्दा रखते हैं।यूक्रेन युद्ध के बीच रुस व चीन ने अरब मुस्लिम देशों से अपनी दोस्ती व संबंध बहुत तेज़ी से अच्छे किए हैं व उनकी अमेरिका व नाटो से दूरी पैदा कर दी है। 2) रुस-चीन गठजोड़ ने अमेरिकी खेमे की तरह दुनिया के हर देश में अपनी व्यापक पकड़ व घुसपैठ कर ली है। वैचारिक स्तर पर यह बाज़ार समाजवाद बनाम बाज़ार पूंजीवाद का युद्ध है जो वैचारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व सामरिक सभी मोर्चो पर लड़ा जा रहा है। स्थिति यह हो चुकी है कि लगभग सभी देशों में दो प्रमुख राजनीतिक दलों/ गुटों में से एक रुस ङ्क चीन गुट के बाज़ार समाजवाद का तो दूसरा अमेरिका व नाटो के बाज़ार पूंजीवाद का समर्थक है। भारत में भी यह एनडीए व इंडी गठबंधन की विचारधारा में स्पष्ट दिखता है। 3) आर्थिक के साथ साथ इन दोनों गुटों में कई जगह व देशों में धार्मिक विभाजन का रूप भी लिए हुए है। विशेषकर एशिया व अफ़्रीका में यह इस्लाम व ईसाईयत के खूनी संघर्ष व वर्चस्व की लड़ाई में सदियों से चला आ रहा है यद्यपि यहाँ के अधिकांश हिंदू व बौद्ध या तो निरपेक्ष हैं अथवा ईसाइयों के साथ खड़े हैं। 4) प्रथम विश्व युद्ध के बाद मित्र देशों विशेषकर इंग्लैंड द्वारा तुर्की का 46 इस्लामिक देशों में विभाजन और दूसरे विश्व युद्ध के बाद अमेरिका की शह पर मुस्लिम देशों के बीच यहूदी देश इसराइल का गठन नाटो देशों की तेल कूटनीति और बाँटो व राज करो की कूटिलनीति का हिस्सा था। कुछ ऐसा ही खेल उन्होंने भारत का विभाजन करके किया था। जिसके दंश दक्षिण एशिया आज भी झेल रहा है। इसके बाद से पिछले 75 वर्षों से अमेरिका के नेतृत्व में नाटो देश तेल उत्पादक मुस्लिम देशों का सफलतापूर्वक शोषण व दोहन कर रहे हैं, इनके विवादों को हवा देते हुए कट्टरपंथी व आतंकी गुटों को बढ़ावा देते रहते है व अपना उल्लू साधते रहते हैं। रुस व चीन के उभरने से इन देशों को नया सहारा मिल गया है और वे अमेरिका व नाटो से पल्ला झाड़ने व अपने मतभेद भुलाने की ठान बैठे हैं। उभरते-उगते एशिया से नाटो दहशत में है व इसको बिखेरने की पूरी कोशिश में लगा है। बड़ा संघर्ष यानि विश्व युद्ध ही इस संघर्ष को निर्णायक स्वरूप दे सकता है। इसलिए हर नया संघर्ष दुनिया को विश्व युद्ध की ओर धकेल रहा है।

5) यूक्रेन युद्ध में अपने बड़े साधन व हथियार गँवाए नाटो के लिए खाड़ी में नया युद्ध बहुत बड़ी आफ़त जैसा है जो उसकी कमर तोड़ के रख देगा और यही रुस ङ्क चीन गुट चाहता भी है। इसलिए उम्मीद है कि चीन ताइवान पर जल्द ही हमला कर दे और नाटो एक और युद्ध का मोर्चा खुलने से बुरी तरह उलझ जाए व हार मान बैठे या भयानक विनाश को न अंजाम दे बैठे।कोरोना महामारी से चोट खाए विश्व के कम से कम सौ देश आर्थिक मंदी, अराजकता व गृहयुद्ध का शिकार हैं। अफ़्रीका व दक्षिण अमेरिका के देशों में भी हालात बहुत ख़राब हैं। ऐसे में विश्व युद्ध दुनिया को भीषण तबाही, नरसंहार, भूख, ग़रीबी व बेरोज़गारी की ओर ले जाएगा। 6) आर्थिक मंदी से जूझ रहे विश्व को क्लाइमेट चेंज की मुसीबतें भी रोज़ाना छका रही हैं और हर दिन विश्व के किसी न किसी भाग में प्राकृतिक आपदाएँ व विनाश अब आम बात है ऐसे में युद्ध के नित नए मोर्चे खुलते जाने से सप्लाई चैन फिर से टूटने के आसार हैं , शेयर बाज़ार का फिसलना व अर्थव्यवस्था का गर्त में जाना तय है। ऐसे में होने वाले भयावह विनाश व मौत के मंजरों की कल्पना मात्र से ही सिहरन पैदा हो जाती है। ङ्क।ह एक और घातक वायरस एक्स के शीघ्र फैलने की घोषणा कर ही चुका है जो कोरोना से कई गुना घातक हो सकता है। यह वायरस दोनों गुटों के बीच चल रहे युद्ध का ही हिस्सा हो सकता है। 7) बढ़ता संघर्ष अंतरराष्ट्रीय संगठनों, संधियों, समझौतों, आयात ङ्क निर्यात, व्यापार, प्रोजेक्टो सभी के लिए श्मशान सिद्ध होगा। यूएन, जी -20, ब्रिक्स आदि सभी पहल बेमानी सिद्ध होती जायेंगी। बाज़ार अर्थव्यवस्था में बाज़ार भी जब उत्कर्ष पर पहुँच जाता है तो युद्ध ही बाज़ार के पुनर्गठन का एकमात्र रास्ता होता है इसलिए भी विश्व युद्ध अपरिहार्य है और नई विश्व व्यवस्था भी। 8) दुनिया में बढ़ते संघर्ष के बीच भारत की स्थिति व भूमिका क्या हो यह भी विचारणीय, गंभीर व संवेदनशील मुद्दा है। अमेरिका व नाटो भारत को चीन के विरुद्ध खड़ा करना चाह रहा है और इसीलिए विशेष महत्त्व दे भी रहा है। हाल ही में भारत में हुए जी ङ्क 20 शिखर सम्मेलन की उपलब्धियाँ व भारत को मिली बढ़त व महत्व नए अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों में फीका पड़ गया है और परिस्थिति बहुत तेज़ी से बदल रहीं हैं।

कूटनीति शक्ति व संसाधनों को पाने का संघर्ष होता इस बार यह संघर्ष लंबा चलने की उम्मीद है शायद एक दशक तक भी। शांति व संवाद भी कूटनीति के हथियार हैं और ये हथियार तभी काम आते है जब आपके पास असली हथियार पर्याप्त मात्रा में हों। भारत को यह बात समझनी होगी और तय करना होगा कि वह किस रूप में इस निर्णायक संग्राम में भागीदार बनेगा ङ्क एक व्यापारी के रूप में , मूक दर्शक के रूप में या पक्षकार के रूप में।

केंद्रीय सत्ता का सेमीफाइनल भी हैं पांच राज्यों के चुनाव

राजकुमार सिंह

पांच राज्यों- राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिजोरम में विधानसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है। इन सभी राज्यों के लिए यह चुनाव समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि भावी सरकार का फैसला होगा, लेकिन राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ पर खास फोकस रहेगा। जाहिर है, मिजोरम और तेलंगाना में क्षेत्रीय दल क्रमशः मिजो नेशनल फ्रंट और बीआरएस सत्तारूढ़ हैं, और राष्ट्रीय दल कांग्रेस या भाजपा की स्थिति चुनौती देने से ज्यादा नजर नहीं आती। जबकि राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में सत्ता के लिए मुख्य मुकाबला भाजपा और कांग्रेस के बीच ही होगा। अपने-अपने गठबंधनों के साथ ये दोनों ही अगले साल होनेवाले लोकसभा चुनाव में केंद्रीय सत्ता के दावेदार भी हैं। राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ इसलिए भी खास हैं, क्योंकि पिछली बार 2018 में हुए विधानसभा चुनावों में कांग्रेस ने इनकी सत्ता भाजपा से छीन ली थी। स्पष्ट से भी ज्यादा बहुमत कांग्रेस को सिर्फ छत्तीसगढ़ में ही मिला था, जहां 15 साल से सत्तारूढ़ भाजपा मात्र 15 सीटों पर सिमट गई थी। राजस्थान और मध्य प्रदेश में कांग्रेस बहुमत से कुछ पीछे छूट गई, पर छोटे दलों और निर्दलीयों के जुगाड़ से सरकार बन गई। राजस्थान में सचिन पायलट के बागी तेवरों के बावजूद अशोक गहलोत पांच साल सरकार चलाने की जादूगरी दिखा गए, लेकिन मध्य प्रदेश में ज्योतिरादित्य सिंधिया की बगावत के चलते कमलनाथ सत्ता गंवा बैठे। ये तीनों राज्य राजनीतिक दृष्टि से खास इसलिए भी हैं, क्योंकि 2018 के आखिर में विधानसभा चुनावों में कांग्रेस के पक्ष में जनादेश देने के बाद अप्रैल-मई, 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा के पक्ष में उससे भी अधिक स्पष्ट जनादेश दे दिया। इसी साल कांग्रेस के भाजपा से हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक की सत्ता छीन लेने के बाद इन विधानसभा चुनावों का महत्व और बढ़ गया है। ये चुनाव नया विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' बनने तथा भाजपा द्वारा एनडीए को सक्रिय करने के बाद हो रहे हैं, तब भी तीन बड़े राज्यों में मुख्य मुकाबला दोनों बड़े राष्ट्रीय दलों के बीच ही होगा। बेशक गुजरात विधानसभा चुनाव में बेहतर प्रदर्शन के बाद आप को भी राष्ट्रीय दल का दर्जा मिल गया है। राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में महत्वाकांक्षी आप दांव लगाएगी ही, लेकिन कांग्रेस की सिटिंग सीट पर भी उम्मीदवार उतारने से जाहिर है कि वह विपक्षी वोटों में ही बंटवारा करेगी, जिसका नकारात्मक असर विपक्षी गठबंधन पर पड़े बिना नहीं रहेगा।

भाजपा के सपने साकार करती शिंदे सरकार

अमिताभ श्रीवास्तव

इस बात में कोई शक नहीं है कि चालीस विधायकों को संग लेकर चले एकनाथ शिंदे को मुख्यमंत्री बनाते समय भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अत्यधिक संयम से काम लिया। मूल शिवसेना में फूट पड़ने के बाद बागी विधायकों को न केवल सहायता, बल्कि उनकी बगावत को सही साबित करने तक में भाजपा ने एड़ी-चोटी का जोर लगाया, जिसके लिए पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की शिवसेना से दुश्मनी तक पालनी पड़ी। फिर भी उसने आखिरी संघर्ष तक साथ दिया और अभी-भी दे ही रही है। शायद यही वजह है कि मुख्यमंत्री शिंदे अब अपने मददगार हाथ की किसी बात को टालना नहीं चाहते हैं। भाजपा ने वर्ष 2014 में देश में सत्ता पाने के बाद यह अच्छी तरह से समझ लिया था कि वह यदि आधी आबादी यानी महिलाओं को साथ ले लेगी तो उसे अनेक राज्यों में चुनाव के जातीय समीकरणों में अधिक उलझना नहीं पड़ेगा, क्योंकि हिंदी भाषी राज्यों के साथ ही महाराष्ट्र जैसे प्रगतिशील विचारों के राज्य में भी मतों का बंटवारा धर्म और जाति के आधार पर हो जाता है। यहां तक कि उम्मीदवारों के चयन में गलती का परिणाम भी भुगतना पड़ता है। इस परिस्थिति में लिंग आधार पर मतों के बंटवारे का लाभ विशेष रूप से मिलता है। भाजपा ने हर घर शौचालय हो या फिर उज्ज्वला गैस योजना, सभी में महिलाओं को केंद्र में रखा। इसी प्रकार प्रधानमंत्री आवास या जनधन योजना के केंद्र में महिलाएं रहीं। इस बात की गंभीरता को भाजपा शासित राज्यों ने बखूबी समझा और नई-नई योजनाएं आरंभ कीं। वर्ष 2016 में उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव की सरकार ने छात्र-छात्राओं को लैपटॉप बांटने की योजना आरंभ की थी, हालांकि वह अधिक सफल नहीं हो पाई क्योंकि उसमें छात्र-छात्राएं दोनों ही शामिल थे मगर उसने अगली सरकार को रास्ता दिखा दिया। फिर वर्तमान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लड़कियों की मुफ्त शिक्षा से लेकर जन्म पर नकद राशि दिए जाने की योजना जैसी सभी जगहों पर महिलाओं को केंद्र में रखकर योजनाओं का रूप दे दिया। मध्य प्रदेश में लड़कियों की शादी हो या फिर उनकी आर्थिक सहायता की बात हो, सभी के लिए सरकार ने हाथ बढ़ाए। इसी कारण मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को आज भी राज्य की महिलाओं पर सर्वाधिक विश्वास बना हुआ है। महाराष्ट्र में भी एक साल में चुनाव होने जा रहे हैं। पहले लोकसभा चुनाव होंगे, लेकिन उसके तुरंत बाद ही विधानसभा चुनाव का बिगुल भी बज जाएगा। ऐसे में आधी आबादी को सीधे तौर पर लाभान्वित कर चुनाव की संभावनाओं को मजबूत किया जा सकता है। राज्य में पहले शिंदे सरकार ने राज्य सड़क परिवहन निगम (एसटी) की बसों में महिलाओं का आधा टिकट कर अपना भी फायदा किया और यात्रियों को भी सीधा लाभ पहुंचा दिया। इसी प्रकार अब राज्य सरकार ने 'लेक लड़की' योजना को आरंभ कर 18 साल तक में एक लाख रुपए देने की घोषणा कर दी है।

मप्र में महिलाओं की हिस्सेदारी बनाम भागीदारी का सवाल

सिद्धार्थ शंकर गौतम

स्त्री शक्ति की आराधना के पर्व नवरात्रि के शुभारंभ के साथ ही मध्य प्रदेश में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को लेकर पक्ष-विपक्ष में ठन गई है। भाजपा और कांग्रेस ने एक-दूसरे पर महिलाओं की अनदेखी करने का आरोप मढ़ा है जबकि सत्यता यह है कि महिलाओं की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक भागीदारी में पिछड़ेपन में कोई दल किसी से पीछे नहीं है। राजनीति को केंद्र में रखकर देखें तो हाल ही में मोदी सरकार ने महिला आरक्षण बिल अर्थात नारी शक्ति वंदन अधिनियम को क़ानून बनाया है जिसके अंतर्गत महिलाओं को लोकसभा और विधानसभा में 33 प्रतिशत आरक्षण देने का प्रावधान है। यदि ईमानदारी से क़ानून का पालन किया जाए तो बड़ी संख्या में महिलाएं राजनीतिक परिदृश्य में दिखेंगी किंतु यह अभी दूर की कौड़ी है।

वर्तमान समय में मध्य प्रदेश के 230 विधायकों में मात्र 21 महिलाएं हैं। यदि नारी शक्ति वंदन अधिनियम को शत-प्रतिशत लागू किया जाए तो प्रदेश में महिला विधायकों की संख्या 76 हो जाएगी। हो सकता है महिलाओं का विधानसभा में आँकड़ा इससे भी अधिक बढ़े। हालांकि इतिहास देखें तो मध्य प्रदेश में महिला नेत्रियों की राजनीति कुछ ख़ास नहीं चली है। 2003 के विधानसभा चुनाव में जब भाजपा ने महिला नेत्री उमा भारती को चेहरा बनाया था, पूरे प्रदेश से 199 महिलाएं चुनावी मैदान में उतरी थीं किंतु इनमें से मात्र 19 अर्थात् 10.09 प्रतिशत ही जीत पाई थीं। 2018 के विधानसभा चुनाव में तो मात्र 17 महिला प्रत्याशी ही चुनाव जीत पाई थीं जबकि पूरे प्रदेश से 250 से अधिक महिलाओं ने राजनीति के अखाड़े में क़िस्मत आजमाई थी। फिर जीतने वाली महिलाएं भी किसी न किसी राजनीतिक दल की अधिकृत प्रत्याशी थीं जबकि छोटे दलों तथा निर्दलीय चुनाव लड़ने वाली 192 महिला

प्रत्याशियों की जमानत तक जब्त हो गई थी।

अपवादों को छोड़ दें तो भी पता नहीं क्यों किंतु राजनीति में महिलाओं को जनता भी बहुत हद तक स्वीकार नहीं कर पाती। महिलाओं को स्वीकार करने की जद्दोजहद तो हालांकि राजनीतिक दल भी नहीं करते। नवरात्रि के पहले दिन घोषित कांग्रेस की 144 प्रत्याशियों की सूची में मात्र 19 महिलाओं को अधिकृत प्रत्याशी घोषित किया गया है जबकि भाजपा ने अब तक 136 घोषित प्रत्याशियों में मात्र 17 महिलाओं को ही चुनाव लड़ने योग्य माना है। दोनों दलों के शेष बचे उम्मीदवारों में भी महिलाओं को बड़ी संख्या में टिकट मिलने की संभावना लगभग नगण्य है। ऐसे में राजनीतिक दल मात्र उनकी बड़ी मतदाता संख्या को भुनाने का ही उपक्रम करते नजर आ रहे हैं। हाल ही जारी अंतिम मतदाता सूची के अनुसार, मध्य प्रदेश में महिला मतदाताओं की संख्या 2,72,33,945 अर्थात् 48.57 प्रतिशत है जबकि पूर्व के आँकड़ों को देखें तो लोकतंत्र के महायज्ञ में आहुति देने में इनमें से 75 प्रतिशत महिलाएं अपने मत का प्रयोग करती हैं। निर्वाचन आयोग के अनुसार, 2003 में 74.58 प्रतिशत महिलाओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया जबकि 2008 में 79.21 प्रतिशत महिलाओं ने वोट डाला। 2013 के विधानसभा चुनाव में महिलाओं का वोटिंग प्रतिशत बढ़कर 83.17 प्रतिशत हो गया जबकि 2018 के विधानसभा चुनाव में महिला वोटिंग प्रतिशत गिरा और 74.03 प्रतिशत हो गया।

2018 के विधानसभा चुनाव में 10 विधानसभा सीटों पर महिला मतदाताओं की संख्या पुरुष मतदाताओं से अधिक थी किन्तु चौंकाने वाला तथ्य यह है कि इन 10 विधानसभा सीटों में से मात्र 2 सीटें भाजपा के खाते में आई थीं, वहीं कांग्रेस को 8 सीटों पर विजय प्राप्त हुई थी। इस बार की मतदाता सूची के अनुसार प्रदेश की 29 विधानसभा सीटों पर महिला मतदाताओं की संख्या पुरुष मतदाताओं के मुकाबले अधिक है जिनमें बैहर, निवास, बिछिया, अलीराजपुर, कुक्षी, पानसेमल, परसवाड़ा, मंडला, बालाघाट, सैलाना, पेटलावाद, जोबट, झाबुआ, मानवर, बदनावर, बरघाट, सरदारपुर, डिंडोरी, रतलाम शहर, वारसोनी, कटंगी, थांडला, छिंदवाड़ा, पुष्पराजगढ़, शाहपुरा, उज्जैन उत्तर, जावरा, इंदौर-4 और सेंधवा शामिल हैं।

यही कारण है कि भाजपा-कांग्रेस समेत सभी राजनीतिक दल महिलाओं को लुभाने के लिए थोक में दर्जन भर से अधिक योजनाओं की घोषणा कर चुके हैं। सबसे अधिक रार लाड़ली बहना योजना को लेकर हो रही है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का कहना है कि कांग्रेस लाड़ली बहना योजना बंद करने का षड्यंत्र कर रही है जिसमें अभी 1,250 रुपये प्रतिमाह बहनों के खाते में आ रहे हैं जो भविष्य में बढ़कर पहले 1,500 और बाद में 3,000 रुपये करने का दावा है, जबकि पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ का वादा है कि जब प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनेगी तो नारी सम्मान योजना के तहत 1,500 रुपये प्रतिमाह और 500 रुपये में गैस सिलेंडर के साथ ही 100 यूनिट तक बिजली बिल माफ और 200 यूनिट तक बिजली बिल हाफ किया जाएगा। जाहिर है, यह सारी क़वायद 48.57 प्रतिशत महिला वोटरों को लुभाने के लिए है क्योंकि मतदाताओं के इतने बड़े वर्ग की अनदेखी कोई भी नहीं करना चाहता।

वसुंधरा समर्थकों की नाराजगी बढ़ी तो भाजपा के लिए चुनाव जीतना मुश्किल होगा

रमेश सर्राफ धमोरा

राजस्थान विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा ने 41 प्रत्याशियों की सूची जारी कर दी है। इस सूची में शामिल 41 सीटों में से 40 सीटों पर भाजपा पिछले विधानसभा चुनाव में हार गई थी। एकमात्र विद्याधर नगर की सीट पर पूर्व मंत्री नरपत सिंह राजवी चुनाव जीते थे। मगर उनका भी टिकट काट दिया गया है। विद्याधर नगर से मौजूदा विधायक नरपत सिंह राजवी, झोटवाड़ा से पूर्व मंत्री राजपाल सिंह शेखावत, मांडल से पूर्व मंत्री कालूलाल गुर्जर, नगर से पूर्व विधायक अनिता सिंह, बांदीकुई से पूर्व विधायक अलका सिंह गुर्जर, सुजानगढ़ से पूर्व मंत्री खेमाराम मेघवाल, वैर से पूर्व विधायक रामस्वरूप कोली का टिकट कटने से वसुंधरा खेमे में नाराजगी व्याप्त हो रही है। टिकट कटने वाले सभी नेता पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के करीबी माने जाते हैं।

हालांकि भाजपा आलाकमान का कहना है कि हमने जो 41 सीटों पर पार्टी प्रत्याशियों की घोषणा की है उनमें से 40 प्रत्याशी पिछले चुनाव में हार चुके थे। इनमें भी 11 सीट दातारामगढ़, कोटपूतली, झुंझुनू, सांचैर, फतेहपुर, लक्ष्मणगढ, नवलगढ़, लालसोट, सपोटरा, बागीदौरा और बस्सी ऐसी विधानसभा सीट हैं जहां भाजपा पिछले तीन चुनाव से लगातार हार रही है। इन 41 सीटों में 2018 में भाजपा ने सिर्फ एक सीट ही जीती थी। वहीं 2013 में 25 सीट व 2008 में 5 सीटो पर ही जीत पाई थी।

अपने हार के आंकड़ों को सुधारने के लिए ही भाजपा ने इस बार इन 41 सीटों पर बड़ा फेरबदल किया है। इन 41 सीटों में से 29 सीटों पर इस बार भाजपा ने नए उम्मीदवारों को चुनाव मैदान में उतारा है। इनमें से 6 प्रत्याशी तो ऐसे हैं जो पिछले विधानसभा चुनाव में निर्दलीय या अन्य दलों से चुनाव लड़े थे। इनमें से कई ऐसे प्रत्याशी भी हैं जो पिछले चुनाव में तीसरे नंबर पर आए थे। लेकिन फिर भी उनको पार्टी टिकट दे दी गई है। अभी तक भाजपा द्वारा घोषित किए गए 41 प्रत्याशियों में 6 लोकसभा के मौजूदा सांसदो को टिकट दिया गया है।

जिसमें जयपुर ग्रामीण के सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री राज्यवर्धन राठौर को झोटवाड़ा से कैबिनेट मंत्री लालचंद कटारिया के सामने, अलवर सांसद बाबा बालकनाथ को तिजारा में राज्य खाद्य निगम के अध्यक्ष विधायक संदीप यादव के सामने, जालौर सांसद देवजी पटेल को सांचैर से मंत्री सुखराम बिश्नोई के सामने, अजमेर सांसद भागीरथ चौधरी को किशनगढ़ से निर्दलीय विधायक सुरेश टांक के सामने, झुंझुनूं सांसद नरेंद्र कुमार को मंडावा से कांग्रेस विधायक रीटा चौधरी के सामने, राजसमंद सांसद दिया कुमारी को विद्याधर नगर से भाजपा ने प्रत्याशी बनाया है। राज्यसभा सांसद डॉक्टर किरोडी लाल मीणा को सवाई माधोपुर से कांग्रेस के विधायक दानिश अबरार के सामने, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुभाष महरिया को लक्ष्मणगढ़ सीट से प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के सामने प्रत्याशी बनाया गया है। पूर्व सांसद बहादुर सिंह कोली को वैर से कैबिनेट मंत्री भजनलाल जाटव के सामने उम्मीदवार बनाया गया है।

भाजपा का मानना है कि अशोक गहलोत सरकार में कैबिनेट मंत्री व कांग्रेस पार्टी के बड़े नेताओं के सामने सांसदों को प्रत्याशी बनाने से चुनाव में कांटे की टक्कर

हो जाएगी। ऐसे में सरकार के मंत्री दूसरी सीटों पर प्रचार करने के लिए नहीं निकाल पाएंगे। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डोटासरा के सामने भाजपा ने पूर्व केंद्रीय मंत्री व सीकर से तीन बार सांसद रहे सुभाष महरिया को प्रत्याशी बनाया है। सुभाष महरिया 2013 के विधानसभा चुनाव में गोविंद सिंह डोटासरा से पराजित हो चुके हैं।

भाजपा ने जिन 41 सीटों पर प्रत्याशियों की घोषणा की है उनमें से अधिकांश सीटों पर टिकट की दावेदारी जता रहे प्रत्याशियों ने विरोध करना शुरू कर दिया है। कई सीटों पर तो पिछले चुनाव में भाजपा प्रत्याशी रहे नेताओं ने निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा भी कर दी है। जिससे भाजपा की स्थिति खराब हो रही है। भाजपा ने झुंझुनूं सीट पर पिछली बार चुनाव लड़े राजेंद्र भाम्भू के स्थान पर पिछली बार निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़े निषित उर्फ बबलू चौधरी को टिकट दिया है। जिससे नाराज होकर राजेंद्र भाम्भू ने निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी है।

मंडावा में सांसद नरेंद्र कुमार को टिकट देने से 2019 के विधानसभा उपचुनाव में प्रत्याशी रही सुशीला सीगड़ा, पूर्व प्रधान गिरधारी खिचड़ ने भी बगावती राग अलापना शुरू कर दिया है। जयपुर के झोटवाड़ा सीट पर तो पूर्व मंत्री राजपाल सिंह का टिकट कटने के बाद उनके समर्थको ने सांसद राज्यवर्धन सिंह राठौड़ को काले झंडे दिखाकर विरोध जता रहे हैं। कोटपूतली से टिकट कटने पर पिछली बार भाजपा के प्रत्याशी रहे मुकेश गोयल ने निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी है। भरतपुर जिले की नगर सीट से दो बार विधायक रही अनीता गुर्जर ने अपना टिकट काटने पर निर्दलीय चुनाव लड़ने की बात कही है।

देवली-उनियारा सीट पर गुर्जर नेता रहे कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला के बेटे विजय बैसला को टिकट देने पर पिछली बार भाजपा प्रत्याशी रहे राजेंद्र गुर्जर काफी नाराज है तथा खुलकर अपनी नाराजगी प्रकट करते हुए विजय बैसला को बाहरी प्रत्याशी बताकर उनका विरोध कर रहे हैं। सांचैर से सांसद देवजी पटेल को टिकट मिलने पर 2018 में चुनाव लड़े दानाराम चैधरी के समर्थक तो देवजी पटेल के साथ मारपीट तक कर चुके हैं।

2022 में सहाड़ा सीट पर हुए उपचुनाव में भाजपा ने रतनलाल जाट को टिकट दिया था। मगर इस बार लादूलाल पितलिया को प्रत्याशी बनाया है। उपचुनाव में पीतलिया ने निर्दलिय फॉर्म भरा था मगर बाद में समझाने पर चुनाव मैदान से हट गए थे। हालांकि भाजपा ने उदयपुरवाटी से अपने पूर्व विधायक शुभकरण चौधरी को टिकट देकर महाराष्ट्र में शिवसेना शिंदे गुट में शामिल हुए बर्खास्त मंत्री राजेंद्र सिंह गुढ़ा के लिए सीट नहीं छोड़कर शिंदे गुट को उनकी हैसियत दिखा दी है। लाल डायरी प्रकरण से चर्चित हुए राजेंद्र सिंह गुढ़ा पिछले दिनों ही अपने गांव में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को लाकर यह प्रयास कर रहे थे कि भाजपा उनके लिए खाली छोड़ दे। मगर भाजपा ने ऐसा नहीं किया।

हालांकि कांग्रेस ने अभी तक राजस्थान में अपने प्रत्याशियों की घोषणा नहीं की है। जबकि भाजपा ने 41 सीटों पर नाम की घोषणा कर दी है। मगर प्रत्याशियों के नाम की घोषणा करने के बाद भाजपा में जिस तरह की आपसी खींचतान व विरोध हो रहा है उसके चलते पार्टी बैक फुट पर आ गई है। इसी कारण पार्टी ने अन्य प्रत्याशियों के नाम की घोषणा रोक दी है। भाजपा में घोषित उम्मीदवारों के खिलाफ उठे विद्रोह से भाजपा के बड़े नेता डर गए लगते हैं। वहीं वसुंधरा राजे समर्थक वर्तमान विधायकों को भी अपनी टिकट कटने का डर सताने लगा है। मगर पार्टी में उठे विरोध को देखते हुये मौजूदा विधायकों का टिकट काटना भाजपा के लिए खतरे की घंटी साबित हो सकता है।

टीएस बाबा के 'गढ़' में भाजपा ने दी चुनौती

सरगुजा संभाग की प्रदेश की सियासत में अहम भूमिका रहती है। ऐसा माना जाता है कि इस संभाग में जिस पार्टी की बढ़त रहती है। उसी की प्रदेश में सरकार बनती है। यही से प्रदेश की सत्ता की चाबी खुलती है या यू कहे कि प्रदेश में सरकार बनाने का रास्ता सरगुजा से होकर गुजरता है। वर्ष 2018 के विधानसभा चुनाव में सत्ता विरोधी लहर चलने और सरगुजा रिसासत के महाराज टीएस सिंहदेव को सीएम बनने की उम्मीद में संभाग की जनता ने 14 की 14 सीटे कांग्रेस की झोली में डाल दी थी। सिंहदेव को लोग प्यार से टीएस बाबा भी कहकर पुकारते हैं। बाबा ने पिछली बार कांग्रेस के लिए घोषणा पत्र भी तैयार किया था। इस घोषणा पत्र की सफलता ने सरकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस बार बाबा ने कांग्रेस की घोषणा पत्र बनाने से अपने हाथ खींच लिए हैं।

बाबा के जनाधार को कांग्रेस भी बखूबी समझती है इसलिए 2018 में कांग्रेस की सरकार बनने के दौरान ढाई-ढाई साल का सीएम बनने का मुद्दा भी खूब गूंजा। खुद बाबा भी गाहे-बगाहे सीएम न बन पाने को लेकर सवाल खड़े करते रहे हैं। कई बार खुले मंच से अपनी नाराजगी जता चुके हैं। ऐसे में सरगुजा संभाग में बाबा की राजनीतिक पकड़ और कहीं कांग्रेस का जनाधार न खिसक जाए दोनों बातों को देखकर विधानसभा चुनाव से महज चार महीने पहले बाबा को डिप्टी सीएम का ताज पहनाया गया। ऐसे में माना जाता है कि कहीं न कहीं बाबा की नाराजगी को कम करने की कोशिश की गई है। अब बाबा भी खुश नजर आ रहे हैं और चुनावी प्रचार में बीजेपी और केंद्र की मोदी सरकार पर हमलावर हैं।

इस वजह से कांग्रेस को मिली थीं 14 की 14 सीटें

सरगुजा संभाग में दोनों ही पार्टियों (बीजेपी-कांग्रेस) का दबदबा रहा है। यहां एक ओर कांग्रेस से डिप्टी मंत्री टीएस सिंहदेव, दिग्गज कांग्रेस नेता खेलसाय सिंह, पूर्व मंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम जैसे कद्दावर नेता आते हैं तो ठीक उसी तरह बीजेपी से भी वरिष्ठ आदिवासी नेता रामविचार नेताम, रामसेवक पैकरा, भैयालाल राजवाड़े जैसा बड़ा चेहरा हैं। वर्ष 2018 के विधानसभा चुनाव में अंबिकापुर से निर्वाचित विधायक और सरगुजा महाराज टीएस सिंहदेव को सीएम का चेहरा बताते हुए चुनाव लड़ा गया था। जिसमें सरगुजावासियों ने अपने महाराज को सीएम बनाने को लेकर बढ़-चढ़कर मतदान किया था। संभाग की 14 की 14 सीटें कांग्रेस के खाते में डाल दी थी, लेकिन कांग्रेस हाईकमान ने सीएम की बागडोर की कमान भूपेश बघेल को सौंपा था। इसके बाद सिंहदेव को स्वास्थ्य और पंचायत व ग्रामीण विकास मंत्रालय की जिम्मेदारी मिली। बाद में बाबा ने पंचायत व ग्रामीण विकास मंत्रालय से इस्तीफा दे दिया था।

पूर्व विधायक की पत्नी आजमा रहीं किस्मत

सामरी विधानसभा की बात करें तो यहां वर्तमान में चिंतामणि महाराज कांग्रेस से विधायक है। वो पहली बार वर्ष 2013 में लुंड्रा विधानसभा से चुनाव लड़कर विधानसभा पहुंचे थे। इनका आदिवासी समाज में संत गहिरा गुरु के पुत्र होने की वजह से कंवर समाज में अच्छी पकड़ है। आदिवासी बहुल क्षेत्र में इनकी एक अलग पहचान है। इस बार इस सीट से भाजपा ने पूर्व विधायक और संसदीय सचिव सिद्धनाथ पैकरा की पत्नी उदेश्वरी पैकरा को अपना प्रत्याशी बनाया है। भाजपा पूर्व विधायक की पत्नी होने के नाते इस सीट पर अपनी दांव आजमा रही है। बरहाल देखना होगा कि भाजपा कितनी सफल होती है।

कांग्रेस का चुनावी समीकरण बिगड़ने का प्रयास

वर्तमान में प्रतापपुर विधानसभा सीट पर कांग्रेस के पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम मौजूदा विधायक हैं। ये वर्ष 1980 से 2018 तक बतौर कांग्रेस के प्रत्याशी रह चुके हैं। वर्ष 2013 में भाजपा शासन काल में गृहमंत्री रहे रामसेवक पैकरा को सर्वाधिक 6 बार हराकर अपने नाम जीत हासिल की है। वही भाजपा के रामसेवक पैकरा को इनके खिलाफ केवल दो बार ही जीत मिली है। जिसको लेकर इस बार भाजपा ने प्रत्याशी बदलते हुए शकुंतला पोर्ते के ऊपर विश्वास जताते हुए भाजपा का उम्मीदवार बनाया है। पोर्ते वर्तमान में वाड्रफनगर के समीप स्थित आसनडीह गांव की सरपंच एवं बलरामपुर जिला महिला मोर्चा के अध्यक्ष का दायित्व संभाल रही हैं। जानकारों की मानें तो घाट पंडरी के निचले हिस्से से वाड्रफनगर से पिछले कई बार से लगातार कांग्रेस बढ़त हासिल करती रही हैं। वहीं भाजपा घाट पंडरी से ऊपर प्रतापपुर की मैदानी इलाके में बढ़त में रहती है। इस बार भाजपा ने बड़ा दांव खेलकर कांग्रेस के वोट बैंक को भेदने के लिए वाड्रफनगर क्षेत्र से प्रत्याशी घोषित कर कांग्रेस का चुनावी समीकरण बिगड़ने का प्रयास किया है। बहरहाल देखना होगा कि भाजपा को इसमें कितना फायदा मिलेगा।

लुंड्रा विधानसभा

बात लुंड्रा विधानसभा की करें तो वर्ष 2008 से लगातार ये सीट कांग्रेस की झोली में रही है। यहां वर्ष 2008 में कांग्रेस के उम्मीदवार रामदेव राम ने भाजपा प्रत्याशी को हराकर पहली बार विधानसभा पहुंचे थे। इसके बाद वर्ष 2013 में चिंतामणि महाराज को भाजपा शासन काल में संस्कृत बोर्ड के अध्यक्ष रहे को तोड़कर कांग्रेस में लाकर पहली बार चुनाव लड़ाकर विधानसभा भेजा था। वर्ष 2018 में इस सीट से कांग्रेस के पूर्व विधायक रामदेव राम के छोटे भाई एवं पेशे से चिकित्सक डॉ प्रीतम राम का क्षेत्र में अच्छी पकड़ का कार्ड खेला था। जिसमें डॉ प्रीतम राम ने भाजपा के पूर्व विधायक विजयनाथ को कड़ी टक्कर देते हुए हराया था।

प्रबोध मिंज पर बीजेपी ने जताया भरोसा

इस बार भाजपा ने अंबिकापुर में लगातार दो बार महापौर रहे प्रबोध मिंज के ऊपर भरोसा जताते हुए टिकट दिया है। मिंज का उरांव जनजाति में अच्छी पकड़ है। बताया जाता है कि यह दो बार लगातार अच्छी राजनीति एवं उरांव वोट बैंक के बदौलत महापौर तक का सफर तय किए हैं। बरहाल देखना होगा कि इस बार मिंज भाजपा के लिए हुकुम का इक्का साबित होते हैं या नहीं।

सिंहदेव लगा चुके हैं हैट्रिक

सरागुजा संभाग के सियासी समीकरण की बात करें तो सिंहदेव अंबिकापुर विधानसभा में हैट्रिक लगा चुके हैं। भाजपा में अभी तक कोई ऐसा बड़ा चेहरा नहीं हैं, जो इनके विजय रथ को चुनाव में रोक सके। बात सीतापुर विधानसभा की करें तो यहां से कांग्रेस के बड़े आदिवासी चेहरा और खाद्य मंत्री अमरजीत भगत का नाम सामने आता है। वो वर्ष 2003 से लगातार 4 बार निर्वाचित होकर विधानसभा पहुंच चुके हैं। इनके पास वर्तमान में खाद्य मंत्रालय जैसी बड़ी जिम्मेदारी है। इस बार उनके खिलाफ आर्मी छोड़कर चुनावी मैदान में कूदे रामकुमार टोप्पो पर भाजपा ने बड़ा दांव खेला है। अमरजीत के खिलाफ भाजपा के पास बड़ा चेहरा नहीं होने के कारण वर्तमान में आर्मी छोड़कर सीतापुर से चुनाव लड़ने की इच्छा जाहिर करने वाले जवान का जनाधार देखकर भाजपा ने उन पर भरोसा कर टिकट दिया है। ऐसे में माना जा रहा है कि सीतापुर विधानसभा में कुछ रोमांचक मुकाबला देखने को मिलेगा।

ये रहे सरगुजा संभाग के दिग्गज नेता

टीएस सिंहदेव-	डिप्टी सीएम, छत्तीसगढ़
रामविचार नेताम-	पूर्व विधायक और आदिवासी नेता, बीजेपी
अमरजीत भगत-	खाद्य मंत्री और सीतापुर विधायक
बृहस्पत सिंह-	रामानुजगंज विधायक
प्रेमसाय सिंह टेकाम-	पूर्व कैबिनेट मंत्री, प्रतापपुर विधायक
खेलसाय सिंह-	प्रेमनगर विधायक
चिंतामणि महाराज-	सामरी विधायक

रामानुजगंज विधानसभा में रोचक होगा मुकाबला

बात रामानुजगंज विधानसभा की करें तो वर्ष 2008 परिसीमन के बाद पाल क्षेत्र का बड़ा हिस्सा टूटकर रामानुजगंज विधानसभा के रूप में अस्तित्व में आया। पाल विधानसभा क्षेत्र से लगातार जीत का सेहरा हासिल कर भाजपा के कद्दावर नेता और बड़ा आदिवासी चेहरा रामविचार नेताम अपने प्रतिद्वंदी कांग्रेस के प्रत्याशी को मात देकर विधानसभा पहुंचे थे। वो लगातार वर्ष 1990 से आविभाजित मध्य प्रदेश से लेकर छत्तीसगढ़ गठन के बाद वर्ष 2008 तक जीतते रहे हैं। इन्होंने कभी हार का चेहरा नहीं देखा था, लेकिन वर्ष 2012 में जिला विभाजन के बाद सरगुजा से अलग कर दो जिले बलरामपुर और सूरजपुर बना। जिसमें क्षेत्रवासियों की मांग के अनुरूप जिला रामानुजगंज को जिला नहीं बनाए जाने को लेकर क्षेत्र की जनता ने इन्हें हार का स्वाद चखा दिया। पहली बार कांग्रेस प्रत्याशी बृहस्पति सिंह रामविचार को मात देकर विधानसभा पहुंचे। साल 2018 में लगातार दूसरी बार बृहस्पति सिंह चुनाव जीतकर विधानसभा पहुंचे। इस बार भाजपा ने रामविचार नेताम पर पुनः विश्वास जताते हुए अपना प्रत्याशी घोषित किया है। दोनों ही प्रत्याशियों का क्षेत्र में अच्छी खासी पकड़ है। इस सीट पर कांटे की टक्कर देखने को मिल सकती है।

भटगांव विधानसभा

भटगांव विधानसभा की बात करें तो यहां वर्तमान में पारसनाथ राजवाड़े लगातार वर्ष 2013 से दो बार के विधायक रहे हैं। इन्होंने वर्ष 2013 में भाजपा की पूर्व विधायक रजनी रविशंकर त्रिपाठी को हराकर पहली बार विधानसभा का रूख किया था। इसके बाद लगातार क्षेत्र में सक्रिय होकर कई बड़ी योजनाओं को सुदृढ़ इलाकों में पहुंचाकर जनता को राहत दी है। जातिगत समीकरण की बात करें तो इस विधानसभा में राजवाड़े समुदाय लगातार दो बार चुनावी समीकरण को बिगड़ने में सफल रही है। जिसको लेकर जाति समीकरण के आधार पर ये लगातार अपने प्रतिद्वंदियों को मात दे रहे हैं। इस बार भाजपा ने भी कि उनकी चुनावी समीकरण को बिगाड़ने के लिए राजवाड़े कार्ड खेलकर लक्ष्मी राजवाड़े को अपना प्रत्याशी घोषित किया है। लक्ष्मी राजवाड़े वर्तमान में महिला मोर्चा सूरजपुर की जिला अध्यक्ष और जिला पंचायत सदस्य हैं। वहीं भाजपा ने इस क्षेत्र से प्रतिनिधित्व कर रहे लक्ष्मी राजवाड़े पर भरोसा जता रही है। बरहाल देखना होगा कि जाति समीकरण का यह कार्ड भाजपा को कितना लाभ पहुंचाता है।

प्रेमनगर विधानसभा

बात प्रेमनगर विधानसभा की हो तो यहां से कांग्रेस से वरिष्ठ कांग्रेसी नेता एवं आदिवासी विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष खेलसाय सिंह वर्तमान में विधायक हैं।

अनारक्षित सीट होने के बावजूद इस विधानसभा में परिसीमन के बाद कोई भी सामान्य जाति का व्यक्ति चुनाव नहीं जीत सका है। जिसके कारण भाजपा एवं कांग्रेस अनुसूचित जनजाति के ऊपर दांव खेलती रही है। वर्ष 2008 में भाजपा ने रेणुका सिंह को अपना प्रत्याशी घोषित कर चुनावी मैदान में उतारा था, जिस पर रेणुका सिंह ने पार्टी के भरोसे को कायम रख अपने विरोधी को हराया था। इसके बाद वर्ष 2013 में कांग्रेस के वरिष्ठ आदिवासी नेता खेलसाय सिंह के ऊपर बड़ा दांव खेलकर इस सीट से भाजपा को बाहर का रास्ता दिखाया था। इसके बाद से लगातार दो बार वो विधायक निर्वाचित हुए।

इस बार भाजपा ने पूर्व जिला पंचायत सदस्य एवं भाजपा के कद्दावर आदिवासी नेता भूलन सिंह मरावी को अपना उम्मीदवार बनाया है। बताया जा रहा है कि मरावी का आदिवासियों में पकड़ है। ये पूर्व में तीन पंचवर्षीय सरपंच, एक पंचवर्षीय जनपद पंचायत सदस्य और एक पंचवर्षीय जिला पंचायत सदस्य का दायित्व का निर्वहन कर चुके हैं। इस अनुभव को वो लाभ उठा सकते हैं। भाजपा 85 सीटों पर अपने पत्ते खोल चुकी है। वहीं कांग्रेस ने अभी तक प्रत्याशी घोषित नहीं किए हैं।

छग की जगदलपुर विस का इतिहास और समीकरण?

छत्तीसगढ़ का जगदलपुर विधानसभा बस्तर संभाग के 7 जिलों का मुख्यालय होने के साथ संभाग के 12 सीटों में से एकमात्र सामान्य सीट है. इस वजह से हर विधानसभा चुनाव में सभी की निगाहें जगदलपुर विधानसभा की सीट में टिकी रहती है. शहरी क्षेत्र होने के कारण यहां भाजपा-कांग्रेस के प्रत्याशियों के बीच कांटे की टक्कर होती है. और सबसे अधिक प्रत्याशी भी इसी सीट से चुनाव लड़ते हैं. खास बात यह है कि जगदलपुर संभाग मुख्यालय होने की वजह से यहां संभाग के सभी विभागों के हेड ऑफिस मौजूद हैं. इस वजह से इस सीट में चुनाव जीतने वाले प्रत्याशी का अलग ही दबदबा होता है. वर्तमान में जगदलपुर विधानसभा कांग्रेस के कब्जे में है और इस सीट से विधायक रेखचंद जैन है. कांग्रेस सरकार इस सीट से कांग्रेस प्रत्याशी दोबारा चुनाव जीतकर विधायक बने इसके लिए चुनाव के ठीक 6 महीने पहले से ही तैयारी शुरू कर दी है. हालांकि इस सीट से चुनाव में दावेदारी के लिए भाजपा के भी लोग पीछे नहीं है. भाजपा के 10 से अधिक लोग टिकट के लिए दावेदारी कर रहे है. और अपना भाग्य आजमाने के लिए शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा शुरू कर दिए है. साथ ही लोगों के हर समस्या का निवारण करने के लिए उनके साथ खड़े दिखाई दे रहे हैं. इस बार के चुनाव में भाजपा-कांग्रेस के साथ ही छत्तीसगढ़ जनता कांग्रेस और आप पार्टी भी संभाग के एकमात्र सामान्य सीट में चुनाव में दावेदारी के लिए तैयारी में जुट गई है....

65% सामान्य होने की वजह से ही बस्तर संभाग का इकलौता सीट जगदलपुर

जगदलपुर विधानसभा साल 2008 के विधानसभा चुनाव से पहले तक आदिवासियों के लिए आरक्षित सीट रहा है. और यहां बीजेपी ने 3 बार जीत का परचम लहराया है. बस्तर के जानकार और वरिष्ठ पत्रकार मनीष गुप्ता बताते हैं कि 2008 के चुनाव में जगदलपुर विधानसभा क्षेत्र को सामान्य सीट किया गया. इसके पीछे वजह यह रही कि इस विधानसभा में निकाले गए जानकारी के मुताबिक 65% सामान्य वर्ग के लोग और 35% आदिवासियो की जनसंख्या है. जिस वजह से इसे 2008 के विधानसभा चुनाव में सामान्य सीट किया गया और कांग्रेस से रेखचंद जैन प्रत्याशी बनाये गए और भाजपा से संतोष बाफना चुनावी मैदान में उतरे.

भाजपाके प्रत्याशी संतोष बाफना ने करीब 17 हजार मतों के अंतर से कांग्रेस के प्रत्याशी को हराया. उसके बाद 2013 में हुए विधानसभा चुनाव में भी जगदलपुर विधानसभा सीट से भाजपा ने एक बार फिर संतोष बाफना को टिकट दिया और इस बार कांग्रेस में फेरबदल करते हुए जगदलपुर विधानसभा के जमावड़ा गांव में रहने वाले श्यामू कश्यप को कांग्रेस से टिकट दिया गया.

हालांकि माना जा रहा था कि यह चुनाव कांटे की टक्कर की होगी. लेकिन संतोष बाफना ने कांग्रेस के प्रत्याशी सामू कश्यप को आसानी से चुनाव हरा दिया और साल 2003 से 2018 तक तीन बार के चुनाव में इस सीट में भाजपा का ही दबदबा रहा. लेकिन 2018 में हुए विधानसभा चुनाव में फिर से भाजपा के संतोष बाफना को टिकट दिया गया और कांग्रेस से रेखचंद जैन को मौका दिया गया. लेकिन इस चुनाव में रेखचंद जैन ने संतोष बाफना को भारी मतों के अंतर से हराया. हालांकि इस हार के पीछे ब्रह्मक की एंटी कंबेसी भी एक वजह मानी जाती है.

विधानसभा का इतिहास

जगदलपुर विधानसभा में लगभग 1 लाख 93 हजार 167 मतदाता हैं. ग्रामीण और शहरी क्षेत्र मिलाकर मतदाता की सूची हर वर्ष थोड़ी बढ़ती जरूर है. हालांकि जगदलपुर बीजेपी का गढ़ रहा है छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद जगदलपुर विधानसभा में साल 2003 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी के विधायक डॉ. सुभाउ राम कश्यप चुने गए थे. हालांकि पहले विधायक डॉ शुभाऊ राम कश्यप के समय में यह सीट आदिवसियो के लिए आरक्षित था. 2008 में अनारक्षित सीट होने से जगदलपुर विधानसभा में संतोष बाफना दो बार विधायक बने.

वहीं 2018 में जनता ने कांग्रेस के विधायक रेखचंद जैन को चुनकर सीट पर बिठाया. 2018 विधानसभा चुनाव में संतोष बाफना को 49 हजार 116 वोट मिले थे. वही कांग्रेस के रेखचंद जैन को 76 हजार 556 वोट मिले थे.2018 में इस विधानसभा की वोटिंग प्रतिशत 53त्न रही. जिसमे कांग्रेस के रेखचंद जैन ने 27 हजार 440 वोटों के अंतराल से जीत हासिल की थी. मनीष गुप्ता का कहना है कि जगदलपुर विधानसभा में जातिगत समीकरण नजर नही आती है. 2018 विधानसभा में कुल 21 प्रत्याशियों ने अपनी किसमत आजमायी थी. लेकिन साल 2023 के विधानसभा चुनाव में प्रत्याशियों की संख्या बढ़ सकती है. और इसके पीछे वजह यह है कि पूरे 12 विधानसभा सीट में यह एकलौता सामान्य सीट है. इसके अलावा इस विधानसभा सीट में साक्षरता का प्रतिशत भी सबसे ज्यादा है.

बस्तर संभाग का मुख्यालय होने की वजह से यहां नगर निगम. विश्वविद्यालय. आईजी ऑफिस और निजी और सरकारी स्कूलों की संख्या ज्यादा है वही जगदलपुर में ही सँभाग का एकमात्र सर्व सुविधा युक्त सबसे बड़ा सरकारी अस्पताल मौजूद है. वहीँ जगदलपुर विधानसभा में सबसे बड़ा उधोग एनएमडीसी नगरनार स्टील प्लांट है. इस विधानसभा का मुख्य आकर्षण का केंद्र दंतेश्वरी मंदिर है जो बस्तर की कुल देवी का मंदिर है. प्रदेश का सबसे बड़ा तालाब दलपत सागर इसी विधानसभा में मौजूद है.

क्या हैं स्थानीय मुद्दे-

वहीं स्थानीय मुद्दे की बात की जाए तो जगदलपुर विधानसभा में एकमात्र नगर निगम होने की वजह से इसके 48 वार्ड में पानी सड़क और साफ सफाई की सबसे बड़ी समस्या है. इसके अलावा ऐतिहासिक दलपत सागर में सफाई को लेकर लाखों रुपए खर्च किए जा चुके हैं लेकिन जलकुंभी के वजह से हमेशा से ही दलपत सागर विवादों में रहा है. जगदलपुर विधानसभा में सबसे बड़ा मुद्दा दलपत सागर का ही रहता है. हालांकि कांग्रेस के कार्यकाल में जरूर दलपत सागर का सौदर्यकरण तो हुआ है लेकिन इस तालाब से जलकुंभी हटा पाने में विधायक नाकाम रहे.

वहीं इसी विधानसभा के नगरनार में एनएमडीसी स्टील प्लांट में स्थानीय बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध नहीं करा पाना भी सबसे अहम मुद्दा है. दरअसल स्थानीय लोगों को उम्मीद जगी थी कि इस प्लांट में शैक्षणिक योग्यता के आधार पर स्थानीय युवाओं को नौकरी मिल सकेगी लेकिन इस प्लांट में अब तक नौकरी नहीं मिलने से यह भी सबसे बड़ा चुनावी मुद्दा है. बेरोजगारी के अलावा लगातार भू माफियाओं के द्वारा इस विधानसभा क्षेत्र में जमीनों का कब्जा करना सबसे बड़ी समस्या और स्थानीय मुद्दा है. यही नहीं खेल मैदानों में लाखों रुपए खर्च करने के बावजूद भी गुणवत्ता विहीन मैदान बनने से यहां के युवाओं में भी नाराजगी है और यह भी एक बड़ा मुद्दा है. इसके अलावा शहर के निचली बस्तियों में प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ नहीं मिल पाना. और पिछले 3 सालों से अमृत मिशन योजना का पूरा नहीं हो पाना भी प्रमुख मुद्दों में से एक है..

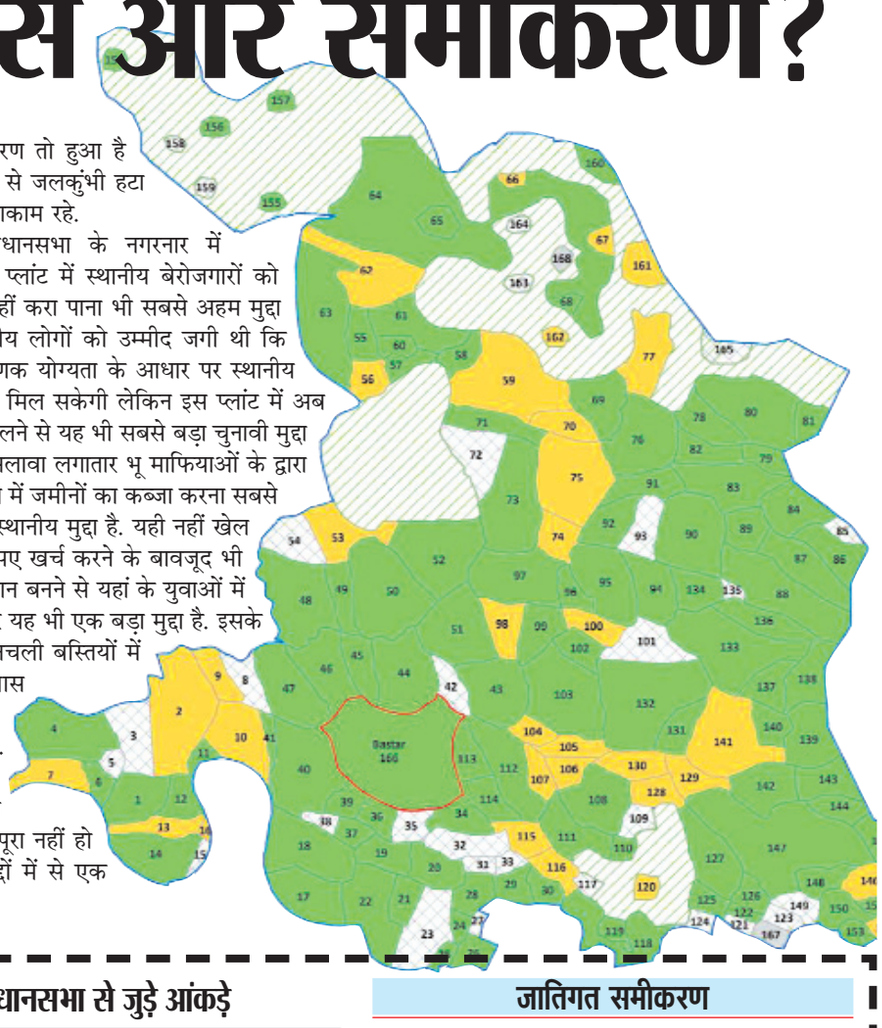

विधानसभा से जुड़े आंकड़े

निगम क्षेत्र में मतदान केंद्र-	98
ग्रामीण क्षेत्र में मतदान केंद्र-	147
कुल मतदान केंद्र -	245

निगम क्षेत्र में

महिला मतदाता-	47546
तृतीय लिंग-	28
पुरुष मतदाता-	43548
ग्रामीण क्षेत्र में महिला मतदाता-	52450
पुरुष मतदाता-	49595

जातिगत समीकरण

सामान्य-	65%
आदिवासी-	35%

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

भाजपा में शामिल हुए महाराणा प्रताप के वंशज विश्वराज सिंह

जयपुर। राजस्थान विधानसभा चुनाव नजदीक आते ही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने दो प्रमुख हस्तियों का अपने खेमे में स्वागत किया है। विश्वराज सिंह मेवाड़ और भवानी सिंह कालवी महत्वपूर्ण चुनावी मुकाबले से पहले भाजपा में शामिल हो गए हैं। यह घोषणा एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान हुई, जहां राजस्थान भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष ने खबर साझा की कि श्रद्धेय महाराणा प्रताप के वंशज विश्वराज सिंह मेवाड़ और भवानी सिंह कालवी, जिनके पिता करौली सेना के प्रमुख के रूप में कार्यरत थे, आधिकारिक तौर पर भाजपा के सदस्य बन गए हैं। केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने इस बात पर जोर दिया कि इन नए लोगों से राजस्थान में महत्वपूर्ण योगदान की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि उनकी भागीदारी प्रधानमंत्री मोदी के 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र में बदलने के दृष्टिकोण के साथ जुड़ी हुई है, और भाजपा में उनका प्रवेश राजस्थान के विकास को आगे बढ़ाने के लिए तैयार है।

सिसोदिया को अनिश्चितकाल के लिए जेल में नहीं रख सकते

नईदिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई और ईडी से कहा कि वे दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति मामलों में पूर्व उपमुख्यमंत्री और आप नेता मनीष सिसोदिया को अनिश्चित अवधि के लिए जेल में नहीं रख सकते। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और एसवीएन भट्टी की पीठ ने दोनों जांच एजेंसियों की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू से पूछा कि निचली अदालत में सिसोदिया के खिलाफ आरोपों पर बहस कब शुरू होगी। पीठ ने राजू से कहा कि आप उसे अनिश्चित काल तक (सलाखों) पीछे नहीं रख सकते। आप उसे इस तरह पीछे नहीं रख सकते। एक बार किसी मामले में आरोपपत्र दाखिल हो जाने पर, आरोप पर बहस तुरंत शुरू होनी चाहिए। राजू ने पीठ को बताया कि सिसौदिया के खिलाफ मामले सीआरपीसी की धारा 207 (आरोपी को दस्तावेजों की आपूर्ति) के चरण में हैं और उसके बाद आरोप पर बहस शुरू होगी। न्यायमूर्ति खन्ना ने राजू से कहा कि आरोप पर बहस अभी तक क्यों शुरू नहीं हुई है और कब शुरू होगी?

मध्यप्रदेश के लिए कांग्रेस ने जारी किया घोषणापत्र

भोपाल। कांग्रेस पार्टी ने मंगलवार को भोपाल में मध्य प्रदेश चुनाव से पहले अपना घोषणापत्र जारी किया। घोषणापत्र के अनावरण के दौरान मध्य प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमल नाथ और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह समेत अन्य नेता मौजूद रहे। मध्य प्रदेश में 17 नवंबर को मतदान होगा और वोटों की गिनती राजस्थान, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिजोरम के साथ 3 दिसंबर को होगी। कमलनाथ ने इस दौरान कहा कि मध्य प्रदेश किसानों का प्रदेश है। कांग्रेस सरकार 2500 रुपये प्रति क्विंटल धान खरीदेगी, हम 2600 रुपये प्रति क्विंटल गेहूं खरीदेंगे। कमलनाथ ने कहा कि मैं हमारे घोषणापत्र के लिए 9,000 से अधिक सुझाव भेजने के लिए मध्य प्रदेश के लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूं। प्रत्येक सुझाव अपने तरीके से महत्वपूर्ण था। मध्य प्रदेश में जाति जनगणना कराना कांग्रेस द्वारा किए गए प्रमुख वादों में से एक है।

दिग्विजय और जयवर्धन के कपड़े फाड़िए : कमलनाथ

भोपाल। मध्य प्रदेश में कांग्रेस की सूची आने के बाद से ही पार्टी कार्यकर्ताओं के नाराजगी की भी खबरें सामने आ रही हैं। लगातार कांग्रेस के असंतुष्ट कार्यकर्ता कई उम्मीदवारों का विरोध कर रहे हैं। इसी कड़ी में भाजपा छोड़कर कांग्रेस में शामिल होने वाले कोलारस विधायक वीरेंद्र यदुवंशी का टिकट कटने के बाद से एक बार फिर से विवाद छिड़ गया है। वीरेंद्र यदुवंशी के कार्यकर्ताओं ने कमलनाथ से मुलाकात करने के बाद पार्टी के फैसले पर विरोध जताया। इस दौरान कमलनाथ दो टूक कहते नजर आए हैं। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि आप जाकर दिग्विजय सिंह और जयवर्धन के कपड़े फाड़िए। इसका मतलब साफ है कि कहीं ना कहीं वीरेंद्र यदुवंशी के समर्थकों को कमलनाथ यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि आप दिग्विजय सिंह और उनके विधायक के बेटे जयवर्धन सिंह से बात कीजिए। वीरेंद्र यदुवंशी को लेकर कमलनाथ ने कहा कि इसमें कोई मिसअंडरस्टैंडिंग हो गई है। मैंने ही उसे ज्वाइन कराया था।

लोकसभा अध्यक्ष ने महुआ मोइत्रा के खिलाफ शिकायत आचार समिति को भेजी

नई दिल्ली। टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा पर पैसे लेकर संसद में सवाल पूछने का आरोप लगाया गया है। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के लगाए गए आरोपों के बाद से ही राजनीतिक बयानबाजी तेज हो गई है। गंभीर आरोप लगाते हुए भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को एक पत्र लिखा। साथ ही, आईटी मंत्री से लोकसभा में महुआ मोइत्रा के लॉग-इन क्रेडेंशियल की जांच करने का आग्रह किया था। अब इस मामले में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने मोइत्रा के खिलाफ शिकायत को निचले सदन की आचार समिति के पास भेज दिया है। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने महुआ मोइत्रा के खिलाफ एक जांच समिति गठित करने और उन्हें सदन से तत्काल निलंबित करने की मांग की है। उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखा था। निशिकांत का आरोप है कि संसद में सवाल पूछने के लिए महुआ पैसे लेती हैं। भाजपा और टीएमसी के बीच ये नई सियासी लड़ाई की शुरुआत मानी जा रही है।

वैश्विक समुद्री भारत शिखर सम्मेलन में बोले पीएम मोदी

दुनिया नई आकांक्षाओं के साथ भारत की ओर देख रही : प्रधानमंत्री

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से वैश्विक समुद्री भारत शिखर सम्मेलन (जीएमआईएस) के तीसरे संस्करण का उद्घाटन किया। उन्होंने शिखर सम्मेलन में सभी का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि आज एक नई विश्व व्यवस्था आकार ले रही है और इस बदलती विश्व व्यवस्था में दुनिया नई आकांक्षाओं के साथ भारत की ओर देख रही है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 23,000 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। उन्होंने कहा, ग्लोबल मैरीटाइम इंडिया समिट के तीसरे संस्करण में मैं आप सभी का अभिनंदन करता हूं। इससे पहले जब हम 2021 में मिले थे, तब पूरी दुनिया कोरोना की अनिश्चितता से घिरी हुई थी। तब कोई नहीं जानता था कि कोरोना के बाद का विश्व कैसा होगा। लेकिन आज दुनिया में एक नया वर्ल्ड ऑर्डर आकार ले रहा है।

पीएम मोदी ने गुजरात के दीनदयाल बंदरगाह प्राधिकरण में 4500 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से बनने वाले 'टूना टेकरा ऑल वेदर डीप ड्राफ्ट टर्मिनल' की आधारशिला भी रखी। कार्यक्रम के दौरान समुद्री क्षेत्र में वैश्विक और राष्ट्रीय साझेदारी के लिए सात लाख करोड़ रुपये से अधिक के 300 से अधिक समझौता ज्ञापन को भी पेश किया। उन्होंने कहा कि निवेशकों के पास देश के साथ साझेदारी करने और भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (आईएमईसी) का हिस्सा बनने का अवसर है।

उन्होंने कहा, इस बदलते हुए वर्ल्ड ऑर्डर में पूरा विश्व भारत की ओर नई आकांक्षाओं से देख रहा है। आर्थिक संकट से घिरी हुई दुनिया में भारत की अर्थव्यवस्था लगातार मजबूत हो रही है। वो दिन दूर नहीं जब भारत दुनिया की टॉप-3 आर्थिक शक्तियां में से एक होगा। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इतिहास साक्षी है कि भारत की मैरीटाइम क्षमता मजबूत रही है। देश और दुनिया को इससे

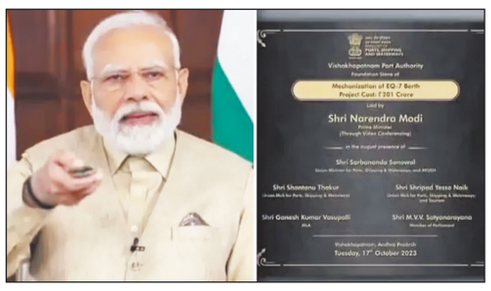

बहुत लाभ हुआ है। इसी सोच के साथ बीते नौ वर्षों से इस सेक्टर को सशक्त करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हाल ही में भारत की पहल पर एक ऐसा कदम उठाया गया है, जो 21वीं सदी में दुनिया भर की मैरीटाइम इंडस्ट्री के कायाकल्प का सामर्थ्य रखता है। जी-20 समिट के दौरान इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर पर ऐतिहासिक सहमति बनी है। सैकड़ों वर्ष पहले सिल्क रूट ने वैश्विक व्यापार को गति दी थी, ये दुनिया के कई देशों के विकास का आधार बना था। अब ये ऐतिहासिक कॉरिडोर भी क्षेत्रीय और वैश्विक व्यापार की तस्वीर बदल देगा

उन्होंने कहा कि आज का भारत अगले 25 वर्षों में विकसित होने के लक्ष्य पर काम कर रहा है। हम हर सेक्टर में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रहे हैं। हमने मेरीटाइम इंफ्रास्ट्रक्चर के पूरे इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए लगातार काम किया है। पोर्ट कनेक्टिविटी को मजबूत करने के लिए हमने हजारों किलोमीटर की नई सड़कें बनाई हैं। सागरमाला परियोजना से भी हमारे तटीय क्षेत्र का इंफ्रास्ट्रक्चर मजबूत किया जा रहा है। ये सारे प्रयास रोजगार सृजन और इज ऑफ लिविंग को कई गुना बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा, आज का भारत अगले 25 वर्षों में विकसित होने के लक्ष्य पर काम कर रहा है। हम हर सेक्टर में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रहे हैं। हमने मेरीटाइम इंफ्रास्ट्रक्चर के पूरे इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए लगातार काम किया है। पीएम ने कहा कि मैरीटाइम टूरिज्म को बढ़ाने के लिए विश्व की सबसे बड़ी रिवर क्रूज सर्विस की शुरुआत भी की है। भारत अपने अलग अलग बंदरगाहों पर इससे जुड़े कई प्रोजेक्ट्स पर काम कर रहा है। इससे पहले, केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने कहा कि मुंबई में शुरू होने वाले शिखर सम्मेलन में 10 लाख करोड़ रुपये का निवेश और 300 से अधिक समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर होने की संभावना है।

सोनोवाल ने कहा कि वैश्विक समुद्री भारत शिखर सम्मेलन 2023 का यह तीसरा संस्करण है। इससे पहले यह 2016 और 2021 में भी आयोजित किया गया था। उन्होंने कहा कि दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ने लगा है। उन्होंने कहा कि सम्मेलन के माध्यम से भारत निश्चित रूप से आने वाले समय में एक अग्रणी समुद्री राष्ट्र बनने जा रहा है। पिछले साढ़े नौ वर्षों में बंदरगाह और जलमार्ग मंत्रालय में जो प्रगति हासिल की गई है, वो पीएम मोदी के मार्गदर्शन से ही संभव हो सका है।

केंद्रीय मंत्री सोनोवाल ने आगे कहा कि 50 से अधिक देश भाग लेने जा रहे हैं और उम्मीद है कि लगभग 10 लाख करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा और 300 से अधिक समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए जाएंगे। उन्होंने कहा उन्हें लगता है कि बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग क्षेत्र में यह निश्चित है कि आने वाले दिनों में भारत प्रमुख भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा कि भारत सरकार के कई वरिष्ठ मंत्री विभिन्न चर्चाओं में इस तीन दिवसीय शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे। इनके अलावा, विभिन्न देशों की प्रमुख समुद्री कंपनियों के सीईओ भी इस कार्यक्रम में भाग लेंगे।

भाजपा के परिवारवाद के आरोप पर राहुल गांधी का करारा जवाब

भाजपा चाहती है हर फैसला दिल्ली में हो, हम इसके खिलाफ: राहुल

आईजोल। मिजोरम के अपने दौरे के दूसरे दिन की शुरुआत करते हुए कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को मिजोरम के पूर्व मुख्यमंत्री ललथनहवला से मुलाकात की। कांग्रेस सांसद थनहवला स्थित आवास तक पहुंचने के लिए दोपहिया वाहन पर पीछे बैठे। इसके बाद उन्होंने भाजपा पर निशाना साधा। भाजपा के परिवारवाद के आरोप पर राहिल ने कहा कि अमित शाह का बेटा वास्तव में क्या कर रहा है? राजनाथ सिंह का बेटा क्या करता है?...पिछली बार मैंने सुना, अमित शाह का बेटा भारतीय क्रिकेट चला रहा है। उन्होंने कहा कि उनमें से कई अनुराग ठाकुर जैसे बच्चे वंशवादी हैं। आपको बता दें कि मिजोरम में चुनाव होने हैं और राहुल गांधी राज्य के दौरे पर हैं।

कांग्रेस नेता ने आगे कहा कि दोनों पार्टियाँ ज़ोरम पीपुल्स मूवमेंट और मिज़ो नेशनल फ्रंट भाजपा और आरएसएस के लिए राज्य (मिज़ोरम) में प्रवेश करने के साधन हैं। कांग्रेस पार्टी कभी भी (राज्य में) प्रवेश का साधन नहीं बन सकती क्योंकि हम वैचारिक रूप से पूरी तरह से भाजपा के खिलाफ हैं। उन्होंने कहा कि हम विचारों का परीक्षण करने में विश्वास करते हैं, और यदि कोई विचार काम करता है, तो हम इसे अन्य राज्यों में लागू करते हैं। उदाहरण के लिए, राजस्थान में हमारी स्वास्थ्य देखभाल योजनाएं, कर्नाटक में सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम और छत्तीसगढ़ में किसान समर्थक नीतियां सफल रही हैं। हमारा लक्ष्य दिल्ली में सत्ता में आने पर इन प्रभावी कार्यक्रमों को शेष भारत में विस्तारित करना है।

कांग्रेस नेता ने कहा कि वह मिजोरम के लोगों को संदेश देना चाहते हैं, वो बहुत स्पष्ट है कि कांग्रेस पार्टी के पास एक कार्यक्रम है, एक रिकॉर्ड है। उन्होंने कहा, 'जब हम संस्कृति, धर्म पर हमले की बात करते हैं, तो उस हमले के साधन भाजपा-आरएसएस और वे दल हैं जो उन्हें राज्य में प्रवेश करने की अनुमति देते हैं।'

राहुल गांधी ने आइजोल में कहा कि इंडिया गठबंधन देश के 60 फीसदी हिस्से का प्रतिनिधित्व कर रहा है। गठबंधन अपने मूल्यों, संवैधानिक ढांचे और स्वतंत्रता की रक्षा करके भारत के विचार की रक्षा करेगा। उन्होंने कहा कि आरएसएस और भाजपा आपकी मान्यताओं की नींव के लिए खतरा है।

राहुल गांधी ने कहा कि हम मिजोरम के लिए एक दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जिसमें शामिल हैं- वृद्धावस्था पेंशन- रु. 2000 प्रति माह, गैस सिलेंडर- रु. 750, उद्यमियों के लिए आर्थिक सशक्तिकरण। मिजोरम में नशीली दवाओं के खतरे का एक बड़ा कारण युवाओं में बेरोजगारी है। हम मिजोरम के युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करेंगे। हमारा उद्देश्य समग्र विकास करना है। उन्होंने कहा कि हमारा मानना है कि भारत राज्यों का एक संघ है। सभी धर्मों, संस्कृतियों और इतिहासों को संरक्षित करने की आवश्यकता है। कांग्रेस ने हमारे देश की नींव रखने में मदद की और हमारे पास उस नींव की रक्षा करने का रिकॉर्ड है। भाजपा देश के संपूर्ण संस्थागत ढांचे पर कब्जा करने का प्रयास कर रही है। कांग्रेस नेता ने कहा, 'हम विकेंद्रीकरण में विश्वास करते हैं। जबकि भाजपा का मानना है कि सभी फैसले दिल्ली में होने चाहिए। वहीं, आरएसएस का मानना है कि भारत को एक विचारधारा, संगठन द्वारा शासित होना चाहिए। इसका हम विरोध कर रहे हैं।'

खेल
प्रमुख समाचार

अफगानिस्तान का आज न्यूजीलैंड से मुकाबला

चेन्नई। आईसीसी विश्व कप 2023 के 16वें मैच में न्यूजीलैंड का सामना आज उत्साहित अफगानिस्तान से है। मौजूदा चैम्पियन इंग्लैंड को हराकर अफगानिस्तान ने विश्व कप में सभी टीमों के लिए खतरे की घंटी बजा दी है। न्यूजीलैंड की कमान एक बार फिर विकेटकीपर बल्लेबाज टॉम लाथम के हाथ में होगी।

दिल्ली मे पिछले मैच में इंग्लैंड को 69 रन से हराने वाली अफगानिस्तान एक और उलटफेर करने के इरादे से उतरेगी। न्यूजीलैंड अभी तक तीनों मैच जीतकर रनरेट के आधार पर भारत से पीछे दूसरे स्थान पर है । वहीं अफगानिस्तान को पहले दो मैचों में बांग्लादेश और भारत ने हराया लेकिन तीसरे मैच में हशमतुल्लाह शाहिदी की टीम ने इंग्लैंड जैसे धुरंधर को हराकर नया इतिहास रच दिया।

नियमित कप्तान केन विलियमसन बायें अंगूठे में फ्रेक्चर के कारण कुछ मैचों से बाहर हैं। आंकड़ों के साथ-साथ विश्व कप में न्यूजीलैंड और अफगानिस्तान में दो बार टक्कर हुआ और दोनों बार कीवी टीम ने बाजी मार ली है। मैच दोपहर दो बजे शुरू होगा। तेज गेंदबाज टिम साउदी अंगूठे की चोट से उबर चुके हैं और देखना यह है कि इस मैच में वह उतर पाते हैं या नहीं। न्यूजीलैंड के पास शीर्ष क्रम में विल यंग, डेवोन कोंवे और डेरिल मिचेल जैसे बल्लेबाज हैं जबकि हरफनमौला रचिन रविंद्र ने भी प्रभावी प्रदर्शन किया है। अब उनका सामना राशिद खान और मोहम्मद नबी की फिरकी से होगा जिन्होंने इंग्लैंड को खासा परेशान किया।

एकदिवसीय विश्व कप की बात आती है तो न्यूजीलैंड ने कभी भी टूर्नामेंट नहीं जीता है, लेकिन पिछले दो संस्करणों में वह टूर्नामेंट जीतने के करीब पहुंच गया है। दोनों बार फाइनल में हार गया। अफगानिस्तान अपने दो मैचों में कभी भी ग्रुप चरण को पार नहीं कर पाया है। न्यूजीलैंड टीम को लगातार चौथी जीत दर्ज करने के लिये लय को कायम रखना होगा।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

सेंसेक्स 261 अंक चढ़ा निफ्टी 19,800 के पार

नईदिल्ली। ग्लोबल मार्केट से मिले पॉजिटिव रुझानों और एचडीएफसी बैंक, बजाज ट्विन्स, टाटा स्टील, विप्रो, टेक एम, एसबीआई, एक्सिस बैंक और टाइटन के शेयरों में तेजी के दम पर हफ्ते के दूसरे कारोबारी दिन यानी मंगलवार को घरेलू शेयर बाजार में तीन दिन से जारी गिरावट के सिलसिले पर ब्रेक लग गया। दोनों फ्रंटलाइन इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी में बढ़त दर्ज की गई। आज के कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 261 अंक मजबूत हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 80 अंकों की बढ़त दर्ज की गई। इस बीच, व्यापक बाजारों ने अपनी बढ़त का सिलसिला जारी रखा। बीएसई मिडकैप इंडेक्स 0.3 फीसदी बढ़ा, जबकि स्मॉलकैप इंडेक्स 0.6 फीसदी बढ़ा। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 261.16 अंक यानी 0.39 फीसदी की बढ़त के साथ 66,428.09 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 66,559.82 की ऊंचाई तक गया और नीचे में 66,309.18 तक आया।

भारत के दृष्टिकोण में एफटीए एक परिवर्तनकारी बदलाव

नईदिल्ली। भारत को ब्रिटेन के साथ प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के तहत सीमा पार आंकड़ों के मुक्त लेन-देन पर सहमत नहीं होना चाहिए क्योंकि सार्वजनिक सेवाओं के विकास के लिए राष्ट्रीय आंकड़ों का स्वामित्व खुद के पास होना महत्वपूर्ण है। शोध संस्थान जीटीआरआई ने मंगलवार को यह बात कही। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) के अनुसार, भारत को इन क्षेत्रों में बाध्यकारी प्रतिबद्धताओं पर कभी भी सहमत नहीं होना चाहिए क्योंकि इससे भविष्य में देश की नीतिगत संभावनाएं खत्म हो जाएंगी। शोध संस्थान ने कहा कि व्यापार के प्रति भारत के दृष्टिकोण में एफटीए एक परिवर्तनकारी बदलाव का प्रतीक है, जो अपना ध्यान पूर्व से पश्चिम की ओर ले जा रहा है और डिजिटल व्यापार तथा डेटा प्रशासन जैसे गैर-व्यापार मामलों को शामिल करने के लिए अपने दायरे का विस्तार कर रहा है।

2023 में देखने को मिलेगी इस्पात की मांग में 8.6% की 'स्वस्थ वृद्धि'

नईदिल्ली। भारत में इस्पात की मांग के 2023 में 1.8 प्रतिशत की समग्र वैश्विक वृद्धि के मुकाबले 8.6 प्रतिशत की ''स्वस्थ वृद्धि'' दर्ज करने की उम्मीद है। वर्ल्डस्टील ने मंगलवार को यह बात कही। वर्ल्ड स्टील एसोसिएशन (वर्ल्डस्टील) ने अनुमान लगाया गया है कि वैश्विक इस्पात मांग 2023 में 1.8 प्रतिशत बढ़ेगी। 2022 में इसमें 3.3 प्रतिशत की गिरावट आई थी। 2024 में मांग के 1.9 प्रतिशत बढ़कर 184.91 करोड़ टन तक पहुंचने की उम्मीद है। भारतीय अर्थव्यवस्था उच्च ब्याज दर के दबाव के बावजूद स्थिर बनी हुई है और इस्पात की मांग के कारण इसकी उच्च वृद्धि गति जारी रहने की उम्मीद है। वर्ल्डस्टील इकोनॉमिक्स कमेटी के चेयरमैन मैक्सिमो वेदोया ने कहा कि स्टील की मांग पर उच्च मुद्रास्फीति और ब्याज दर का असर दिख रहा है। उभरती अर्थव्यवस्थाओं के विकसित देशों की तुलना में तेजी से बढ़ने की उम्मीद है।

करूर वैश्य बैंक का दूसरी तिमाही में शुद्ध लाभ 378.45 करोड़ रुपये रहा

नईदिल्ली। निजी क्षेत्र के करूर वैश्य बैंक (केवीबी) का चालू वित्त वर्ष 2023-24 की दूसरी (जुलाई-सितंबर) तिमाही में शुद्ध मुनाफा 378.45 करोड़ रुपये रहा। तमिलनाडु स्थित बैंक का पिछले वर्ष की समान तिमाही में शुद्ध मुनाफा 250.23 करोड़ रुपये रहा था। चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) में बैंक का शुद्ध मुनाफा 737 करोड़ रुपये रहा, पिछले वर्ष समान अवधि में यह 479 करोड़ रुपये रहा था। समीक्षाधीन तिमाही में परिचालन आय बढ़कर 2,335.97 करोड़ रुपये हो गई, जो एक साल पहले समान अवधि में 1,821.05 करोड़ रुपये थी। बैंक ने एक बयान में कहा कि इस अवधि में बैंक का कुल कारोबार 1,50,000 करोड़ रुपये से अधिक हो गया।

बेसल-3 पूंजी मानक, क्या कभी सबक लेंगे बैंकर?

टीटी राम मोहन

बैंकर बेसल-3 पूंजी मानकों का विरोध कर रहे हैं लेकिन वास्तव में ये मानक न केवल बैंकों के लिए बल्कि समग्र अर्थव्यवस्था के लिए भी लाभदायक हैं। जेपी मॉर्गन चेज के मुख्य कार्याधिकारी जेमी डिमॉन उन गिनेचुने बैंकरों में से एक हैं जो नियामकों और कानून बनाने वालों के विरुद्ध बोलने में हिचकिचाते नहीं हैं। उन्होंने डॉड-फ्रैंक अधिनियम की तीखी आलोचना की थी जिसकी बदौलत वैश्विक वित्तीय संकट के बाद अमेरिका में नियमन सख्त किए गए थे।

अब डिमॉन ने अमेरिकी नियामकों द्वारा बैंकों के लिए तैयार किए गए बेसल-3 नियमों को आड़े हाथों लेने का निश्चय किया है। ये वे अंतिम नियम हैं जो वैश्विक वित्तीय संकट के बाद बनी सहमति के तहत तय मानकों के क्रियान्वयन के लिए आवश्यक हैं। नए नियमों का अर्थ है बैंकों द्वारा अधिक पूंजी की आवश्यकता। संभव है कि डिमॉन नियामकों को आड़े हाथों लेकर साहस दिखा रहे हों लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वह सही हैं। अमेरिकी नियामक बेसल-3 मानकों के तहत पूंजी आवश्यकता निर्धारण में कई बदलावों का प्रस्ताव रख रहे हैं। वे चाहते हैं कि 100 अरब डॉलर से अधिक परिसंपत्तियों वाले सभी बैंक आंतरिक मॉडल के बजाय मानक मॉडलों का इस्तेमाल करें और इसी आधार पर ऋण जोखिम तथा परिचालन जोखिम के लिए पूंजी का बंदोबस्त करें।

बाजार जोखिम के लिए बैंकों को मानक और मॉडल आधारित रुख अपनाकर जोखिम वाली संपत्तियों का आकलन करना होगा और दोनों में से अधिक वाले का इस्तेमाल करना होगा। इसके अलावा बैंकों को बिक्री के लिए उपलब्ध प्रतिभूतियों पर अघटित लाभ या नुकसान को भी दर्शाना होगा। ये तथा ऐसे

अन्य प्रस्तावों के कारण बैंकों को पूंजी बढ़ानी होगी। आवश्यकता भी इसी बात की है। जोखिम के आकलन के लिए मानक मॉडल के उपयोग की आवश्यकता एक बड़ा बदलाव है। मानक मॉडल में जोखिम का आकलन औसत जोखिम अनुभव के आधार पर किया जाता है। बेसल-3 के पहले बेसल-2 नियमों के तहत पूरा ध्यान इस बात पर केंद्रित था कि आंतरिक जोखिम आधारित मॉडल के आधार पर बैंकों के लिए जोखिम का आकलन किया जाए। जो बैंक प्रभावी ढंग से जोखिम का प्रबंधन करते थे उनकी पूंजी आवश्यकता मानक मॉडल के तहत वांछित स्तर से कम रहती थी। नतीजा, इक्विटी पर अच्छा प्रतिफल मिलता था। केवल वही बैंक आईआरबी रुख का इस्तेमाल कर पाते थे जिनका जोखिम मॉडल मजबूत होता था। नियामक अब आईआरबी मॉडल का इस्तेमाल करने के पहले दोबारा सोचते हैं। वैश्विक वित्तीय संकट के समय पता चला था कि आईआरबी मॉडल का इस्तेमाल करने वाले कई बैंकों के पास घाटा वहन करने के लिए पर्याप्त पूंजी मौजूद नहीं थी। बेसल-3 मानक बनाते समय नियामकों ने यह पाया कि आईआरबी मॉडल पर बहुत अधिक जोर देना समझदारी नहीं है।

उन्होंने पहले की पूंजी आवश्यकता के पूरक के रूप में सामान्य ऋण अनुपात का इस्तेमाल शुरू किया जो कुल संपत्तियों के तीन प्रतिशत की टियर वन पूंजी के रूप में परिभाषित था। इसका अर्थ है डेट: इक्विटी के बीच 33:1 का अनुपात। अगर कर्ज का यह अनुपात अधिक लग रहा तो यह याद रखें कि बैंकों की स्थिति पहले इससे भी अधिक बुरी थी। ताजा बेसल-3 प्रस्तावों के साथ अमेरिकी नियामक रुख बदल रहे हैं। अब वे बैंकों के आंतरिक मॉडल पर भरोसा नहीं करेंगे। वे ऋण जोखिम तथा परिचालन जोखिम के आंतरिक मॉडल के बजाय बाजार जोखिम के मॉडल के साथ सुरक्षित रहना चाहते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक आईआरबी मॉडल पर आधारित ऋण नुकसान के आकलन की दिशा में बढ़ता रहा है अब शायद वह इसकी समीक्षा करे। इस नए अमेरिकी प्रस्ताव के पीछे का सिद्धांत बहुत साधारण है- बैंकों के लिए अधिक इक्विटी पूंजी कम से बेहतर है। डिमॉन उन दलीलों के साथ इसका विरोध कर रहे हैं जो हम बैंकरों से वर्षों से सुनते आ रहे हैं। दो अमेरिकी विद्वान अनत अदमाती और मार्टिन हेलविग ने एक पूरी किताब इन तर्कों की खामियां गिनाने पर केंद्रित कर दी जिसका नाम है द बैंकर्स न्यू क्लॉथ्स।

कैंडिडेट पर कड़े सवालः पूर्व सीएम रमन सिंह का कांग्रेस पर हमला, बोले-

यहां 3 लाख मतदाता में कांग्रेस नहीं ढूंढ पाई चेहरा

रायपुर। प्रदेश कार्यालय में हुई वरिष्ठ नेताओं की बैठक को लेकर पूर्व सीएम डॉ रमन सिंह का बयान सामने आया है. उन्होंने कहा, घोषणा पत्र के विषय में विचार-विमर्श चल रहा है और अपने अंतिम स्वरूप में है. इतना ही नहीं इस दौरान रमन सिंह कांग्रेस पर निशाना साधा है. साथ ही अपने प्रतिद्वंदी गिरीश देवांगन को लेकर भी तंज कसा है.बीजेपी केंद्रीय नेतृत्व के लिए विभिन्न स्तर पर कार्यकर्ताओं को दी गई जिम्मेदारी को लेकर रमन सिंह ने कहा, संगठन की दृष्टि से स्थानीय स्तर पर प्रभारी बनाए हैं. जिला स्तर के प्रमुख लोगों को प्रभारी का दायित्व दिया है. प्रभारी के साथ एक संयोजक और संचालक एक विधानसभा में बनाया है. कोऑर्डिनेशन की दृष्टि से बाहरी नेताओं के कार्यक्रम के लिए अन्य स्थानों से भी कार्यकर्ता आए हैं, जो स्थानीय लोगों की मदद करेंगे.

राजनांदगांव में कांग्रेस ने गिरीश देवांगन को प्रत्याशी बनाने को लेकर भी रमन सिंह ने तंज कसा है. कांग्रेस की रणनीति क्या है यह बताना उचित नहीं है, मगर राजनांदगांव के 3 लाख मतदाता में कांग्रेस प्रत्याशी नहीं ढूंढ पाई. बाहरी लोगों को बुलाने की जरूरत क्यों पड़ गई.

गिरीश देवांगन के 'रमन सिंह के पास विजन नहीं है' वाले सवाल पर पूर्व सीएम ने कहा, मेरे विजन के बारे में उन्हें एक घंटा सोचना पड़ेगा. छग यहां तक पहुंचा है एक विजन को लेकर पहुंचा है. 15 साल जो काम हुए उसके पीछे एक विजन था,11. गिरीश भैया उस ऊंचाई तक पहुंचे नहीं है, इसलिए ज्यादा प्रतिक्रिया देने की जरूरत नहीं समझता.

कांग्रेस ने बिरनपुर मामले को लेकर भाजपा पर हिंसा भड़काने का आरोप लगाया है, जिस पर पूर्व सीएम ने पलटवार किया है. रमन सिंह ने कहा, ईश्वर साहू को यदि लगता है कि उसके बच्चे के हत्यारे खुलेआम घूम रहे हैं और उन्हें सजा दिलाना उनका कर्तव्य है. इसलिए राजनीति की मैदान में उतारा है कि वह चुनाव जीते और सरकार बदलें, ताकि अपराधियों को जेल में डाला जाए. यह एक बाप का संकल्प है, इसमें कहां राजनीति.

दूसरे चरण के चुनाव को आगे बढ़ाने की मांग वाले सवाल पर रमन सिंह ने कहा, एक बार चुनाव की प्रक्रिया आगे बढ़ गई है. उसके बाद कोई सोचे की चुनाव के समय में परिवर्तन हो सकता है, इसमें आपत्ति हो तो सूचना जरूर देनी चाहिए. पर मुझे नहीं लगता की यह संभव है.

बृजमोहन ने चलाया जनसंपर्क अभियान

रायपुर। वरिष्ठ भाजपा विधायक और पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने सोमवार को शहीद राजीव पांडे वार्ड में जनसंपर्क अभियान चलाया। बृजमोहन अग्रवाल ने अपने अभियान की शुरुआत संजय नगर चौक स्थित हनुमान मंदिर में दर्शन और भगवान का आशीर्वाद लेकर की।

वहां से बृजमोहन झण्डा चौक, मिलन चौक, जनक बढ़ई का घर होते हुए, अमित साहू का घर के सामने से होकर आर. डी. ए. कॉलोनी पहुंचे। उसके बाद रेहाना के घर के सामने से होकर पूर्व पार्षद नफीसा हाशमी के घर होते हुए इंदिरा नगर चौक, अनवर हाजी के घर, गड्डा पारा, शिव मंदिर चौक, सतनामी पारा से होते हुए मुख्य मार्ग पर मिलन होटल होते हुए, राधाकृष्ण मंदिर पहुंचे। जहां दर्शन के बाद संजय नगर चौक पर दुर्गा पंडाल माता के दर्शन और आशीर्वाद लेकर अपना जनसंपर्क अभियान समाप्त किया।अभियान में बड़ी संख्या में पार्टी की पुरुष और महिला कार्यकर्ताओं ने शिरकत की। अभियान के दौरान अपने चहेते नेता और वरिष्ठ भाजपा नेता को अपने बीच पाकर स्थानीय लोगों ने भी खुशी जताई। स्थानीय लोगों ने फूल मालाओं और ढोल बाजे बजाकर अपने चहेते विधायक का स्वागत किया। और एक बार फिर से बृजमोहन को विजयी बनाने का आशीर्वाद दिया।

भाजपा का मजबूत गढ़ है उत्तर विधानसभा : सुनील सोनी

- प्रदेश की बघेल सरकार पर वादाखिलाफी का लगाया आरोप

रायपुर। रायपुर लोकसभा सांसद और वरिष्ठ भाजपा नेता सुनील सोनी ने रायपुर उत्तर विधानसभा प्रत्याशी पुरंदर मिश्रा को जिताने के लिए हर मोर्चे पर डटे भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ महत्वपूर्ण बैठक की। इस बैठक में उन्होंने चुनाव अभियान के सार्थक परिणाम के लिए कार्यकर्ताओं को मंत्र भी दिया। कहा, विजयश्री के लिहाज से रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र पूरी तरह भाजपा के लिए अनुकूल सीट है। बीजेपी कार्यकर्ताओं में जोश भरते हुए उन्होंने कहा कि इस चुनाव को अग्रेसिव तरीके से लड़कर जीत हासिल करना बीजेपी का प्रमुख लक्ष्य है। इसके लिए कार्यकर्ता कमर कसकर डट जाएं।

बीजेपी कार्यकर्ताओं की बैठक में सांसद सुनील सोनी ने आगे कहा कि रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र में पार्टी ने इस बार जननेता पुरंदर मिश्रा को चुनाव लड़ने का अवसर दिया है, जो हम सबके लिए गौरव की बात है। इस विधानसभा क्षेत्र में उत्कल समाज, सिंधी समाज, मुस्लिम, जैन, सिख और गुजराती समाज हर धर्म, समाज, समुदाय और वर्ग के लोग निवासरत हैं, जिनका जुड़ाव और झुकाव पूरी तरह बीजेपी की ओर है। वहीं कई ऐसे समाज भी हैं जिनकी संख्या जरूर सीमित है लेकिन चुनाव में इनकी भूमिका हमेशा महत्वपूर्ण रही है। ऐसे समाज के लोग फिजां बदलने में हमेशा पूरी तरह सक्षम साबित हुए हैं। रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी पुरंदर मिश्रा की जीत के लिए ऐसे सभी समाज के लोगों का सहयोग लेना बेहद जरूरी है। चुनाव की तैयारियों ने गति पकड़ ली है। इसी कड़ी में हम सभी भाजपा के कर्मठ कार्यकर्ताओं को अपनी आवाज बुलंद करने की जरूरत है और यह होना भी चाहिए। सुनील सोनी ने कार्यकर्ताओं से कहा, चुनाव में सफलता पाने का प्राथमिक औजार हैंडबिल होता है, जिसे हर हाल में घर-घर तक पहुंचाना है। उत्तर विधानसभा क्षेत्र में सभी 4 मंडल के लिए भाजपा मंडल कार्यालय और एक मुख्य कार्यालय खोला जाएगा। इन कार्यालयों के उद्घाटन में मैं खुद भी मौजूद रहूंगा, ऐसा कहकर उन्होंने युवाओं में जोश भरा और चुनाव की तैयारी के लिए कई टिप्स भी दिए। उन्होंने आह्वान किया कि बीजेपी के मुख्य चुनाव कार्यालय के उद्घाटन समारोह में विधानसभा क्षेत्र के कार्यकर्ता अधिक से अधिक संख्या में पहुंचें। बैठक के आखिर में सुनील सोनी ने कहा कि उत्तर विधानसभा क्षेत्र के मतदाता बेहद जागरुक और समझदार हैं और इसीलिए यहां भी भाजपा की स्थिति काफी मजबूत है। इस बैठक में प्रकाश बजाज, शंभू नारायण गुप्ता, राजकुमार राठी, किशोर नायक, राम प्रजापति, हरीश ठाकुरस अर्पित सूर्यवंशी, आकाश तिवारी, कमल विभार, संदीप शर्मा, शशिकांत विभार, पीयूष मिश्रा व शंकर दास सहित सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

जनता के सामने मुख्यमंत्री का असली चेहरा सामने आयाः संजय श्रीवास्तव

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता एवं सरगुजा संभाग प्रभारी संजय श्रीवास्तव ने कहा कि खुद को छत्तीसगढ़ का बेटा बताने और छत्तीसढिया स्वाभिमान की बात कहने वाले मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का असली चेहरा सामने आ गया है। छत्तीसगढ़ महतारी का चरण सेवक बनकर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने छत्तीसगढ़ को दोनों हाथों से लूटा। लूट के करोड़ों-अरबों रुपयों से दिल्ली के खजाने को भरते रहे। यानी छत्तीसगढ़ को एटीएम बना दिया।

भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एवं सरगुजा संभाग प्रभारी संजय श्रीवास्तव ने कहा कि पाताल से लेकर आकाश तक घोटाले कर रिकार्ड बनाने वाले मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और उसके मंत्री और विधायक अब फिर से छत्तीसगढ़ की जनता को केंद्र की मोदी सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को लेकर लोगों को गुमराह करने में लगे हैं। छत्तीसगढ़ की जनता के सर से छत छीनने वाली भूपेश सरकार की कथनी और करनी में जमीन आसमान का अंतर है। भोले भाले किसानों को धान खरीदी मामले में गुमराह कर वाहवाही लूटने वाली भूपेश सरकार ने अपने घोषणा पत्र में दो सालों का बोनस आज तक क्यों नहीं दिया? आज छत्तीसगढ़ की अन्नदाता किसान भूपेश बघेल से पूछता है कि कांग्रेस के पांच साल में उन्होंने क्या दिया? सरकार बनने के 10 दिनों के बाद राजीव गांधी किसान न्याय योजना के तहत ऋण माफी की गई तो फिर छत्तीसगढ़ के किसानों जीवन स्तर ऊंचा क्यों नहीं उठ पाया? छत्तीसगढ़ के लाखों किसानों को पंप का कनेक्शन क्यों नहीं दिया? दस लाख युवाओं को रोजगार देने और बेरोजगारी भत्ता देने की बात कही थी उसका क्या हुआ? कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष पद पर रहते हुए भूपेश बघेल ने छत्तीसगढ़ में सुशासन देने और विकास पर फोकस करने के अलावा छत्तीसगढ़ की माताओं - बहनों से हाथों में गंगाजल लेकर प्रदेश में पूर्णतः शराबबंदी करने का भरोसा दिलाते वोट मांगा था।

शाह ने शहादत का सम्मान किया है, अपना कद तो चौबे ने घटा लियाः ईश्वर साहू

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के साजा विधानसभा प्रत्याशी ईश्वर साहू ने कांग्रेस प्रत्याशी और राज्य सरकार के मंत्री रविंद्र चौबे की टिप्पणी पर दुख व्यक्त करते हुए कहा है कि वह कह रहे हैं कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने ईश्वर साहू का नाम लेकर अपना कद घटा लिया तो सच्चाई यह है कि देश के गृहमंत्री ने ईश्वर साहू का नाम नहीं लिया है बल्कि उन्होंने सनातन सत्य के लिए शहादत देने वाले एक पुत्र के पिता को न्याय दिलाने का बीड़ा उठाया है। ईश्वर साहू ने मंत्री चौबे की टिप्पणी से द्रवित होकर कहा कि साजा विधानसभा क्षेत्र के बिरनपुर में जिहादी उन्माद में हत्या के नामजद आरोपियों को तुष्टिकरण की राजनीति के तहत संरक्षण देने वाले और निर्दोष युवाओं को जेल में डालने वाले हमारी पीड़ा को नहीं समझ सकते। जब हम कांग्रेस की सरकार से न्याय मांग रहे थे। हत्यारों का नाम भूपेश बघेल की पुलिस को बताया। कार्रवाई की मांग की। न्याय मांगा। तब चौबे जी कहां थे? वे या उनका कोई कार्यकर्ता तक झांकने नहीं आया। वह स्थानीय विधायक होने और राज्य के मंत्री होने के नाते निष्पक्ष कार्रवाई कराने की बजाय तुष्टिकरण की राजनीति में लगे थे।

दो भाजपा नेताओं को पार्टी ने निकाल बाहर किया

रायपुर। टिकट वितरण के बाद लगातार अनुशासन तोडऩे वालों पर अब भाजपा ने कड़ाई बरतना शुरू कर दिया है। कई सीट ऐसे हैं जहां से कार्यकर्ता लगातार विरोध जता रहे हैं। लेकिन हद तब हो गई जब बोरिया बिस्तर लेकर जशपुर से दो मंडल अध्यक्ष की अगुवाई में गणेशराम भगत के लिए टिकट मांगने समर्थक भाजपा कार्यालय के बाहर पहुंच गए। वहीं सोने लगे -वहीं खाना बनाने लगे इससे गलत संदेश जा रहा था यहां तक कि स्वंय प्रदेश अध्यक्ष साव हाथ जोड़कर इनसे आग्रह कर चुके थे जब भी नहीं माने तो दोनों मंडल अध्यक्षों को पार्टी से निकाल बाहर कर दिया गया है।

भाजपा के प्रदेश आलाकमान ने अनुशासनहीनता के आरोप में जिन दो नेताओं को पार्टी से निष्काषित किया है उनमें सोनक्यारी मंडल के प्रमुख मनोज भगत और मनोरा मंडल अध्यक्ष विकास प्रधान शामिल है। दोनों ने पूरे धरना-प्रदर्शन की अगुवाई करते हुए गणेशराम भगत के पक्ष में माहौल बनाने की कोशिश भी की थी। उन्हें पार्टी के बड़े नेताओं ने समझाने की कोशिश की लेकिन वह अपनी मांग पर अड़े रहे।

छत्तीसगढ़/राजधानी

प्रमुख समाचार

सोनिया नहीं, सनातन परंपरा का अपमान किया: बैज

रायपुर। केन्द्रीय मंत्री और भाजपा प्रत्याशी रेणुका सिंह द्वारा कांग्रेस की वरिष्ठ नेता श्रीमती सोनिया गांधी के बारे में की गई टिप्पणी का प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कड़ा विरोध करते हुये कहा कि रेणुका सिंह का बयान बेहद ही आपत्तिजनक और अस्वीकार्य है।

रेणुका सिंह ने सिर्फ सोनिया गांधी नहीं भारत की समस्त नारी शक्ति और सनातन धर्म तथा हिन्दू संस्कृति का अपमान किया। सनातन परंपरा में भारतीय संस्कृति में विवाहिता स्त्री का विवाह के बाद ही उसका ससुराल ही उसका मूल घर हो जाता है। सोनिया गांधी ने जन्म इटली में लिया था, लेकिन वे विवाहित होकर भारत आई थी विवाह के बाद उन्होंने भारत को ही अपनी मातृभूमि माना, अपने पति की शहादत के बाद भी उन्होंने विवाहिता के धर्म का निर्वहन किया तथा अपने जीवन भर का नाता भारत से जोड़ा। कांग्रेस की नेता और सांसद के रूप में सोनिया गांधी ने भारत के आम आदमी को शसक्त बनाने के लिये अपना जीवन समर्पित कर दिया। यूपीए की चैयरमेन के रूप में देश के लोगों को सूचना का अधिकार, रोजगार का अधिकार, शिक्षा का अधिकार जैसे कदम सोनिया गांधी के निर्देशन में कांग्रेस की सरकार ने उठाकर आम आदमी को मजबूत बनाया। सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री जैसे महत्वपूर्ण पदों को ठुकरा कर यह साबित किया।

भाजपा की अनुशासन की ढोल फट गई : धनंजय

रायपुर। भाजपा के घोषित प्रत्याशियों के खिलाफ भाजपा के कार्यकर्ता और नेता सड़कों पर प्रदर्शन कर रहे हैं, भाजपा कार्यालय के आगे टेंट लगाकर राशन-पानी के साथ विरोध जाता रहे। भाजपा कार्यकर्ताओं और नेताओं का यह विरोध मोदी, शाह, रमन सिंह के मनमानी के खिलाफ है।

भाजपा की अनुशासन की ढोल फट गई है अब भाजपा के स्थानीय नेता कार्यकर्ताओं का सामना करने के बजाय मुंह छिपा कर घूम रहे हैं। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि भाजपा के घोषित 85 प्रत्याशी को भाजपा के कार्यकर्ता और नेता ही स्वीकार नही कर रहे है, जनता दूर की बात है। भाजपा में मची भगदड़ और मारामारी सड़कों पर दिख रही है, असंतोष झलक रहा है, भाजपा में झंडा उठाने वाले कार्यकर्ता भी नदारत है। ठाकुर ने कहा कि 15 साल के कुशासन और भ्रष्टाचार कमीशन खोरी के लिए जाने जाने वाले चेहरों को भाजपा ने प्रत्याशी बनाकर भाजपा के कार्यकर्ताओं के आक्रोश को हवा दिया है 2018 में जिसे जनता ने खारिज कर दिया उसे पुनः प्रत्याशी बनाकर भाजपा ने जनता को भी चिढ़ाया है। भाजपा के सांसद जो सांसद होने का दायित्व निर्वहन नहीं कर पाए जनता के सुख-दुख में खड़ा नहीं हुए खोटा सिक्का साबित हुए हैं उन्हें टिकट देकर भाजपा ने यह बता दिया है कि भाजपा के पास प्रत्याशी नहीं है वही निष्क्रिय कमीशनखोर को भ्रष्ट चेहरा ही भाजपा की जमा पूंजी है।

भाजपा अडानी के प्रतिनिधी के रूप में चुनाव लड़ रही : वर्मा

रायपुर। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि भाजपा छत्तीसगढ़ में अडानी के प्रतिनिधी के रूप में चुनाव लड़ रही है। मोदी और अमित शाह का सबसे ज्यादा फोकस छत्तीसगढ़ के चुनाव पर इसलिए है, क्योंकि छत्तीसगढ़ के कोल, आयरनओर, बॉक्साइट, टीन के खदानों, छत्तीसगढ़ के पॉवर प्लांट, छत्तीसगढ़ के स्टील और सीमेंट उद्योगों, छत्तीसगढ़ के जल-जंगल-जमीन पर मोदी के मित्र अडानी की बुरी नजर है। भाजपा और मोदी के मुखौटे के पीछे असल मकसद अडानी का मुनाफा है। मोदी सरकार ने अपने मित्र के लाभ के लिए ही वन अधिकार अधिनियम 2006 के प्रावधानों को शिथिल करके आदिवासियों को जल जंगल जमीन के अधिकार से वंचित किया है। अपने पूंजीपति मित्रों के लाभ के लिए ही मोदी सरकार ने कमर्शियल माइनिंग शुरू की। अति महत्वपूर्ण जैव विविधता के क्षेत्र में घोषित नो-गो एरिया को संकुचित करके अडानी को खदानें दिए। नवरत्न कंपनी कोल इंडिया लिमिटेड और एसईसीएल के खदानों में खनन का कार्य भी दबावपूर्वक अडानी को सौंप दिए। केंद्रीय संसद में बिना बहस, बिना चर्चा के, विपक्ष के मत विभाजन की मांग को भी दरकिनार करके एक ही दिन में दर्जनों श्रमिक कानून को अपने पूंजीपति मित्रों के हित में संशोधित किया। स्पष्ट है कि पूंजीवाद ही भाजपा का असल एजेंडा है।

छत्तीसगढ़ को लूटने वाले आज माटीपुत्र को कर रहे बदनामःवैष्णव

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता मणी वैष्णव ने कहा कि भाजपा प्रवक्ता संजय श्रीवास्तव के बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि पंद्रह साल छत्तीसगढ़ को चारागाह समझने वाली भाजपा अगर छत्तीसगढ़ को महतारी कह रही है तो वह भी भूपेश बघेल की देन है। पंद्रह साल के रमन राज में छत्तीसगढ़ एक बीमारू राज्य और यहां की जनता बदहाल हो चुकी थी जिसे बदलने का काम भूपेश बघेल ने किया। भूपेश बघेल ने शुद्ध मन से छत्तीसगढ़ की जनता के आर्थिक प्रगति और छत्तीसगढ़ को पूरे देश में एक मॉडल राज्य के रूप में स्थापित करने के लिए काम किया है। प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता मणी वैष्णव ने कहा कि रमनराज में न छत्तीसगढ़ नारियों का सम्मान किया गया और ना छत्तीसगढ़ की महतारियों का। एक समय था जब बेशर्म रमन सरकार द्वारा बस्तर की युवतियों को बार में शराब परोसन वेट्रेस बनाने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम की योजना लाई गई थी। मड़कम हिडमें जैसी असंख्य आदिवासी महिलाओं का बलात्कार व फर्जी एनकाउंटर नक्सली बताकर कर दिया गया। थोड़े से कमीशन के लिए गर्भाशय काण्ड में कई गरीब महिलाओं की जान ले ली गयी। मगर आज भूपेश सरकार द्वारा लाई गई नवाचारी योजनाओं, महिला स्व सहायता समूहों के माध्यम से महिलाएं बेहतर आय प्राप्त कर सम्मान पूर्वक जीवन भी जी रही हैं और अपने परिवार को आर्थिक संबल भी प्रदान कर रही हैं। डेनेक्स देश की एकमात्र ऐसी गारमेंट फैक्ट्री है जिसका संपूर्ण संचालन बस्तर व दंतेवाड़ा की महिलाओं द्वारा किया जा रहा है।

साहस है तो रमन सिंह को चेहरा घोषित करें: भंसाली

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता नितिन भंसाली ने भाजपा पर आक्रमण करते हुए कहा है कि छत्तीसगढ़ में चुनावी पहुना बनकर आने वाले भाजपा के राष्ट्रीय नेता जिन 15 साल का राग अलाप रहे हैं, उसी काले कालखंड के दंड स्वरूप भाजपा पिछले चुनाव में सिर्फ 15 सीटों पर सिमटकर सत्ता से बेदखल हुई थी और आज उसी वक्त की याद जनता के दिल में तरोताजा कर भाजपा के नेता अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मार रहे हैं।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता नितिन भंसाली ने कहा कि भाजपा ने अपने 15 साल के शासनकाल में प्रदेश का जल, जंगल, जमीन सब कुछ बेच दिया था। आदिवासियों की जमीन पर डाका डालकर औद्योगिक घरानों को परोस दी गई थी जिसे कांग्रेस की भूपेश बघेल सरकार ने आदिवासियों को वापस लौटाया। नगरनार संयंत्र के लिए छत्तीसगढ़ शासन ने जमीन दी, जिसका उपयोग केवल एनएमडीसी के प्लांट के लिए हो सकता है लेकिन भाजपा की केंद्र की मोदी सरकार ने नगरनार संयंत्र को अपने मित्रों को बेचैन हेतु कार्ययोजना बना ली है जिसका कांग्रेस ने पुरजोर विरोध किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बस्तर आकर भी छत्तीसगढ़ के बस्तर वासियों को यह वचन नहीं दिया कि नगरनार संयंत्र नहीं बेचा जाएगा। जो काम छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार ने 15 साल तक किया, वही काम भाजपा की मोदी सरकार भी कर रही है।

हेट स्पीच को लेकर कांग्रेस ने अमित शाह के खिलाफ चुनाव आयोग में शिकायत

रायपुर। राजनांदगांव में भाजपा नेता अमित शाह द्वारा किये गये हेट स्पीच और भड़काऊ भाषण की शिकायत कांग्रेस ने चुनाव आयोग से किया तथा कार्यवाही की मांग किया।

प्रदेश कांग्रेस संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने एक प्रतिनिधिमंडल के साथ जाकर चुनाव आयोग से शिकायत किया। शिकायत में कहा गया कि - भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और देश के गृहमंत्री अमित शाह ने भाजपा के राजनांदगांव के प्रत्याशी डॉ. रमन सिंह के नामांकन के लिये आयोजित सभा में दिये गये अपने भाषण में दंगा भड़काने के उद्देश्य से गलत बयानी करते हुये कहा कि उन्होंने बेमेतरा जिले के बीरनपुर में हुये हत्या के मामले को लेकर अपनी चुनाव सभा में सीधे

कहा, भूपेश बघेल सरकार ने तुष्टिकरण के लिए, वोट बैंक की राजनीति के लिए छत्तीसगढ़ के बेटे भुवनेश्वर साहू को लिंचिंग करवाकर मार दिया। भारतीय जनता पार्टी ने तय किया है कि हम भुवनेश्वर साहू के हत्यारों को उनके अंजाम तक पहुंचाएंगे और इसके प्रतीक के रूप में उनके पिता ईश्वर साहू को चुनाव मैदान में उतारा है।

अमित शाह का यह बयान ना केवल आपत्तिजनक है बल्कि इसका एकमात्र उद्देश्य शांत प्रदेश छत्तीसगढ़ में सांप्रदायिक हिंसा भड़काना है। गृह मंत्री ने चुनावी फ़ायदे की नीयत से उन्माद भड़काने के लिए यह बयान दिया है। उन्होंने जो कहा है वह बिल्कुल झूठ है। हक़ीक़त यह है कि हिंसा और प्रति हिंसा के इस मामले में सरकार ने त्वरित कार्रवाई की थी और आरोपियों को गिरफ़्तार करके जेल भेजा था। लेकिन छत्तीसगढ़ में साफ़ दिख रही अपनी हार से बौखलाए अमित शाह अब सांप्रदायिकता का सहारा लेना चाहते हैं।राजनांदगांव में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए संविधान की शपथ लेकर संवैधानिक पद पर बैठे देश के गृहमंत्री अमित शाह ने धार्मिक ध्रुव्रीकरण के उद्देश्य से सांप्रदायिक तनाव भड़काने का कुत्सित प्रयास किया है। छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी के नेता लगातार योजनाबद्ध तरीके से षडयंत्र पूर्वक बिरनपुर की घटना पर अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने का प्रयास कर रहे हैं। जिस मामले में विवेचना पूरी हो चुकी है, न्यायालय में चालान प्रस्तुत हो चुका है, निचली अदालत का फैसला भी आ गया है उसके खिलाफ देश के गृह मंत्री द्वारा साप्रदायिक ध्रुवीकरण करके के उद्देश्य से उन्माद भड़काने का कुत्सित प्रयास स्पष्ट तौर पर आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन है अत: निवेदन है कि अमित शाह, रमन सिंह और अरुण साव के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाए।प्रतिनिधि मंडल में प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर, घनश्याम राजू तिवारी, सुरेन्द्र वर्मा, अजय साहू, नितिन भंसाली उपस्थित थे।

कलेक्टर डॉ भुरे आरंग विधानसभा के एसएसटी प्वाईट पहुंचे और तैयारियों का लिया जायजा

रायपुर। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ सर्वेश्वर भुरे ने विधानसभा चुनाव के तैयारियों का जायजा लेने आरंग विधानसभा में पहुंचे। वहां जिले के अंतिम छोर में स्थैतिक निगरानी दल के पारागांव स्थित प्वाइंट में पहुंचे और उपस्थित दल से जानकारी ली और उन्होंने कहा कि बाहर से आने वाले वाहनों की कड़ी चेकिंग करें। संदेहास्पद धनराशि या अन्य सामग्री पाए जाने पर जांच कर कार्रवाई करें। उन्होंने मंदिर हसौद तहसील और आरंग तहसील में निर्वाचन कार्य में पदस्थ अधिकारियों की बैठक ली। बैठक

में कलेक्टर ने कहा कि विधानसभा में फ्लाइंग स्क्वॉड् टीम और स्थैतिक निगरानी दल अलर्ट रहें। निर्वाचन संबंधी शिकायत आने पर एफएसटी मौके पर जाकर जांच करें और निराकरण कर नियमानुसार कार्रवाई करें। उन्होंने कहा कि एफ.एस.टी ही नही, सुचना मिलने पर तहसीलदार या पुलिस के अधिकारी भी स्वयं जाकर कार्रवाई कर सकते है। कंट्रोल रूम के फोन नंबर के साथ पुलिस थाने का नंबर भी जारी करें। डॉ भुरे ने कहा कि यह ध्यान रखें की रिस्पॉन्स टाईम कम से कम हो और सूचना मिलने के बाद जल्द ही जल्द निराकरण करने का प्रयास करें। डॉ भुरे ने कहा कि जिनकी भी ड्यूटी निर्वाचन में लगी है वे मुख्यालय में ही रहें। वीडियों सर्विलेंस टीम की तैनाती करें। कलेक्टर ने कहा कि अधिकारी कर्मचारी विशेषकर मैदानी अमला जैसे पंचायत सचिव, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और पटवारी इत्यादि पूर्ण रूप से निरपेक्ष होकर काम करें।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.